पयस्विनी-विमर्श

पयस्विनी विमर्श

(जगदीश प्रसाद मण्डलक 'पयस्विनी' : विचार, समाज, संस्कृति आ संवादक आलोचनात्मक अध्ययन)

डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PAYASVINEE VIMARSH

A Critical Study of Jagdish Prasad Mandal's Payasvinee: Ideas, Society, Culture, and Dialogic Discourse by Dr. Umesh Mandal

Payasvinee Vimarsh is a critical engagement with Jagdish Prasad Mandal's significant prose volume Payasvinee, a collection of essays, reflections, responses, and public interventions in Maithili. This study examines the work not merely as a set of individual writings, but as a coherent intellectual text shaped by Mandal's commitment to society, culture, language, and human dignity.

It explores the philosophical questions raised in pieces such as Avatarvaad; the cultural depth of Sanskar aa Sanskar Geet; the critique of hierarchy and exclusion in Varchasvavaadi Sanskriti Banaam Haashiyaak Samaajak Sangharsh; and the rich, self-revelatory value of the question-answer sections and dialogues.

Through these varied components, Payasvinee emerges as a work that unites reflection, resistance, folk consciousness, and literary responsibility. This study situates the book within the wider landscape of Mandal's creative and critical writing, demonstrating how it illuminates the ideological foundations of his fiction and public thought. It also highlights the book's significance as a record of literary participation, cultural dialogue, and public reasoning within contemporary Maithili discourse.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-41-0
Price: 299/-
Copyright: © Author (Dr. Umesh Mandal)

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

अनुक्रम:

भूमिका

1. पयस्विनीक स्वरूप, रचना-प्रसंग आ विधागत संरचना

2. पयस्विनीमे दार्शनिक प्रश्न आ तर्कशील दृष्टि

3. पयस्विनीमे संस्कृति, संस्कार, लोकजीवन आ लोक-चेतना

4. पयस्विनीमे हाशियाक समाज, वर्चस्व-विमर्श आ सामाजिक प्रतिरोध

5. पयस्विनीमे साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक लेखन

6. प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे उद्घाटित मण्डलजीक व्यक्तित्व

7. पयस्विनीक आलोकमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व

8. पयस्विनीक भाषा, शैली, तर्क-पद्धति आ गद्य-सौष्ठव

9. पयस्विनीक रचना-शिल्प, विन्यास आ अभिव्यक्ति-कौशल

10. जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे पयस्विनीक स्थान

उपसंहार

समर्पण

ओइ मौन लोकजीवनकेँ,
जे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यमे अपन आवाज पाबैत अछि।

ओइ माटि, श्रम आ मनुक्खक गरिमाकेँ,
जे हुनकर रचनाक मूल आधार छी।

भूमिका

✳

जगदीश प्रसाद मण्डलजी आधुनिक मैथिली साहित्यक ओहन रचनाकार छैथ, जिनकर रचनात्मक चेतना लोकजीवनसँ गहींर रूपेँ जुड़ल अछि। हुनकर लेखन गामक जीवन, खेतक श्रम, परिवारक सम्बन्ध, लोकाचार आ उपेक्षित समाजक पीड़ासँ अपन मूल ऊर्जा ग्रहण करैत अछि। स्त्री-पुरुषक सामाजिक स्थिति आ मनुक्खक गरिमाक प्रश्न हुनकर संवेदनाकेँ आर गहींर बनबैत अछि। हुनका लग गरिमा कोनो अमूर्त आदर्श नहि, बल्कि किसान, मजदूर, स्त्री, वंचित समाज आ साधारण मनुक्खक जीवन-अधिकारसँ जुड़ल प्रश्न अछि। ओ पाठककेँ कल्पनाक कोनो दूरस्थ संसारमे नहि लऽ जाइ छैथ, बल्कि अपन आसपासक जीबैत-जागैत जीवनसँ परिचित करबै छैथ। हुनकर साहित्यमे गामक आत्मीयता आ संघर्षक कठोरता एकसंग चलैत अछि। अभावक पीड़ा ओतए बराबर उपस्थित रहैत अछि, मुदा ओ पीड़ा निराशाक अन्तिम अन्हारमे नहि बिलाइत। ओकर भीतर आशाक ओ प्रकाश बचल रहैत अछि, जे मनुक्खकेँ टुटैसँ बँचबैए। मण्डलजीक साहित्यक महत्त्व ऐ बातमे निहित अछि जे ओ लोकजीवनकेँ कथा-वस्तुक साधारण आधार मानि नहि छोड़ै छैथ; ओइमे मनुक्खक विचार, जीवन-मूल्य, प्रतिरोध-चेतना आ मानवीय प्रतिष्ठाक मूल धरातल देखै छैथ।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म 5 जुलाइ 1947 केँ मधुबनी जिलाक लखनौर प्रखण्ड अन्तर्गत बेरमा गाममे भेलैन। हिनकर मातृभाषा मैथिली रहल छैन आ हिनक आरम्भिक संस्कार ग्रामीण परिवेशमे आकार

ग्रहण केलक। शिक्षा जनता कॉलेज, झंझारपुरसँ स्नातक स्तरधरि आ सी. एम. कॉलेज, दरभंगासँ हिंदी तथा राजनीति शास्त्रमे स्नातकोत्तर स्तरधरि पूर्ण भेल। पारिवारिक दायित्व, खेती-बाड़ी, अध्ययनशीलता आ आत्मानुशासनक ई संयुक्त संस्कार हुनकर व्यक्तित्वक आरम्भिक गठनमे निर्णायक सिद्ध भेल। ऐ संयोजन हुनका पुस्तकीय ज्ञान आ व्यावहारिक अनुभव दुनूक साझा धरातल प्रदान केलकैन। फलस्वरूप हुनकर लेखनमे विचार आ जीवन, अनुभव आ अध्ययन, संवेदना आ विवेक एक-दोसरासँ कटि कऽ नहि, वरण परस्पर सम्बद्ध रूपमे प्रकट होइत अछि।

मण्डलजीक जीविकोपार्जनक मूल साधन खेती-बाड़ी रहल छैन, मुदा हुनकर कृषक-परिचय केवल पेशागत सूचना धरि सीमित नहि रहैत। जीवनवृत्तमे ओ आत्मनिर्भर कृषकक रूपमे दर्ज छैथ; परन्तु ऐ परिचयक भीतर परम्परागत अनुभव, वैज्ञानिक दृष्टि, श्रम-संस्कार आ समाज-बोधक पूरा संसार निहित अछि। हुनका लेल कृषि केवल उपार्जनक साधन नहि, बल्कि जीवनक संगठन आ समाज-निर्माणक आधारशिला छी। कृषि हुनका लग मौसम, श्रम, प्रतीक्षा, जोखिम, सामूहिकता आ आत्मनिर्भरता सभक संग जुड़ल जीवन-पद्धति छी। अही कारण हुनकर साहित्यमे माटि केवल दृश्य नहि, बल्कि सामाजिक नैतिकताक आधार बनि अबैत अछि। तँए श्रम आ माटि हुनकर लेखनमे खाली दृश्य वा प्रसंगक रूपमे नहि आबि उत्पादक वर्ग, लोकनिर्भर जीवन-व्यवस्था आ सामुदायिक नैतिकताक मूल संकेत सेहो बनि जाइत अछि।

स्पष्ट रूपेँ कहल जा सकैत अछि जे हुनकर दृष्टि पुस्तकजन्य विचारसँ मात्र निर्मित नहि भेल; ओ प्रत्यक्ष अनुभव, कृषक-समाजक यथार्थ आ श्रमशील लोक-सम्पर्कसँ विकसित भेल। तँए पछुआएल वर्गक संघर्ष आ खेती-बाड़ीसँ जुड़ल अनुभव हुनकर जीवनवृत्तमे केवल तथ्य बनि कऽ नहि रहि जाइत, बल्कि हुनकर साहित्यक वैचारिक आधार बनि उठैत अछि। कृषक-जीवनपर आधारित यथार्थवादी दृष्टि हुनका सामाजिक रूढ़ि, अन्धविश्वास आ सामन्तवादक विरुद्ध प्रतिरोधक स्वर दैत अछि। हुनकर व्यक्तित्वमे श्रमक गरिमा, समाजक प्रति उत्तरदायित्व आ लोकजीवनक

प्रति गहन प्रतिबद्धता अलग-अलग गुण नहि, बल्कि एक-दोसरसँ जुड़ल जीवन-संस्कारक रूपमे देखि पड़ैत अछि। ई संयुक्त जीवन-दृष्टि हुनकर साहित्यकेँ विशिष्ट गम्भीरता, नैतिक दृढ़ता आ सजीव सामाजिक आधार प्रदान करैत अछि।

मण्डलजीक जीवन-शैली हुनकर साहित्य-साधनाक भीतरी अनुशासनकेँ स्पष्ट करैत अछि। भोर 2 बजेसँ लेखन आरम्भ करब, खेतक निरीक्षण, ऋतुगत सादा भोजन आ दिनचर्याक नियमितता, ई सभ मिलि हुनकर जीवनक ओ लय बनबैत अछि, जेकर सीधा सम्बन्ध हुनकर रचनात्मक स्वभावसँ जुड़ैत अछि। शुद्धलेखन, पुनर्पाठ, शब्द-गणना आ आत्मावलोकनक अभ्यास ऐ लयकेँ मात्र व्यक्तिगत आदत नहि रहए दैत, बल्कि साहित्य-साधनाक सजग प्रक्रिया बना दैत अछि। खेतक निरीक्षण हुनका जीवनक व्यावहारिक यथार्थसँ जोड़ने रखैत अछि, तँ ऋतुगत सादा भोजन आ नियमित दिनचर्या हुनकर भीतर संयम, संतुलन आ श्रमशीलताक संस्कारकेँ दृढ़ करैत अछि। पुनर्पाठ आ शब्द-गणनाक अभ्यास हुनकर लेखनकेँ आकस्मिक भावावेगक परिणाम नहि रहए दैत, बल्कि निरन्तर रचनात्मक श्रमक फल बना दैत अछि। अही कारण हुनकर विपुल कृतित्वकेँ केवल प्रतिभाक परिणाम नहि, साधना, अनुशासन आ रोजक सजग परिश्रमक उपलब्धि रूपमे बुझल जा सकैत अछि। तँए मण्डलजी एक अनुशासित आ सजग साहित्य-साधकक रूपमे प्रतिष्ठित होइत छैथ।

लेखकक जीवन आ साहित्य-सृजनक बीच एहेन सामंजस्य विरल होइत अछि। हुनका लग विचार कागजपर उतरल निष्कर्ष भरि नहि रहैत; से विचार दिनचर्याक प्रत्यक्ष अनुभव, श्रमक लय, माटिक संस्पर्श आ समाजक बीच बितौल जीवनसँ पोषित रचनात्मक बोधक रूपमे विकसित होइत अछि। हुनकर लेखनमे जे प्रामाणिकता, सघनता आ निरन्तरता देखल जाइत अछि, ओकरा ऐ अनुशासित जीवन-पद्धतिकेँ बिना बुझने पूर्ण रूपेँ नहि बुझल जा सकैए। अही अनुशासनक प्रतिफल हुनकर विपुल कृतित्व, दीर्घ साहित्य-साधना आ लेखनक निरन्तर सक्रियतामे स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैत अछि।

कृतित्वक स्तरपर जगदीश प्रसाद मण्डल अत्यन्त विपुल, अनुशासित आ बहुविध रचनाकारक रूपमे प्रतिष्ठित छैथ। जीवनवृत्तक अनुसार वर्ष 2000 ई.सँ हुनकर नियमित लेखनक आरम्भ भेल आ तेकरा पछाइत कथा, उपन्यास, नाटक, पद्य, बाल-साहित्य, आत्मकथात्मक गद्य आ शोध-आलेख धरि हुनकर रचनात्मक क्षेत्र निरन्तर विस्तृत होइत गेल। 1100 सँ अधिक कथा, 18 सँ अधिक उपन्यास, 12 एकांकी ओ नाटक, 12 पद्य-संग्रह आ 10 बाल-साहित्यक पुस्तक हुनकर साहित्य-साधनाक व्यापकता प्रमाणित करैत अछि। अखन धरि हुनकर 135 सँ अधिक पोथी प्रकाशित भऽ चुकल छैन, जे अपने-आपमे एक विलक्षण सर्जनात्मक उपलब्धि छी। हुनकर पोथीसभ प्रायः पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, सुपौलसँ प्रकाशित होइत रहल छैन, जइसँ हुनकर लेखनक सतत प्रकाशन-परम्परा आ रचनात्मक निरन्तरताक स्वरूप सेहो बुझाइत अछि।

मण्डलजीक साहित्यिक अवदानकेँ समय-समयपर अनेक पुरस्कार आ सम्मानसँ मान्यता भेटल अछि। प्रारम्भिक दशकमे हुनका विदेह सम्मान-2011, वैदेह सम्मान-2012, कौशिकी साहित्य सम्मान-2015, वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’ सम्मान-2016, कौमुदी सम्मान-2017, यात्री चेतना पुरस्कार-2017 आ स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान-2018 प्राप्त भेल। आगाँ राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान-2020, अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022, यात्री सम्मान-2022, मिथिला शिखर सम्मान-2022 आ महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान-2023 सेहो हुनकर अवदानक मान्यता बनल। एकर अतिरिक्त, ‘गामक जिनगी’ कथा-संग्रह 2011 इस्वीमे टैगोर साहित्य पुरस्कारसँ अलंकृत भेल, आ ‘पंगु’ उपन्यास 2021 इस्वीमे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित भेल। ई सम्मानसभ बाह्य उपलब्धिक सूची मात्र नहि; ई प्रमाण अछि जे हुनकर लेखन संख्या, परिश्रम आ निरन्तरताक संग गुण, प्रभाव, वैचारिक गहराइ आ साहित्यिक मान्यताक स्तरपर सेहो विशिष्ट स्थान प्राप्त करैत अछि। ‘गामक जिनगी’क मान्यता हुनकर ग्राम्य यथार्थ, लोक-संवेदना आ साधारण मनुक्खक जीवन-संघर्षक साहित्यिक प्रतिष्ठाकेँ रेखांकित करैत अछि।

तहिना 'पंगु'क साहित्य अकादेमी सम्मान कृषक-जीवन, सामाजिक चेतना, अभावक बीच मनुक्खक जिजीविषा आ जनपक्षधर दृष्टिक व्यापक स्वीकारोक्ति छी। ऐ रूपेँ ई पुरस्कारसभ केवल लेखकक उपलब्धि नहि, बल्कि हुनकर लोकधर्मी साहित्य-दृष्टिक सामाजिक आ साहित्यिक प्रमाण सेहो अछि।

हुनकर लेखन परिश्रम, अनुशासन, वैचारिक सजगता आ रचनात्मक निरन्तरताक दीर्घ साधनापर आधारित अछि। मैथिली साहित्यमे मण्डलजीक नियमित, अविराम आ बहुविध लेखन बहुतो विद्वानकेँ सदिखन सोचबाक, पुनर्मूल्यांकन करबाक आ समकालीन साहित्यिक मानदण्डसभपर पुनर्विचार करबाक लेल विवश करैत अछि। एतए महत्त्वपूर्ण ई अछि जे हुनकर रचनाशीलता कोनो एक विधा, एक विषय वा एक सीमित अनुभव-क्षेत्रमे आबद्ध नहि रहैत अछि। ओ कथा लिखै छैथ तँ ओइमे लोकजीवनक आन्तरिक लय पकड़ै छैथ; उपन्यास लिखै छैथ तँ समाजक दीर्घ संघर्ष आ परिवर्तनक प्रक्रिया सामने आनै छैथ; वैचारिक गद्य लिखै छैथ तँ ओइमे अपन लोकधर्मी दृष्टि, तर्कशीलता आ सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ स्पष्ट रूपेँ अभिव्यक्त करै छैथ। वर्तमानमे 'संस्कार' नामक पोथीक लेखनमे हुनकर संलग्नता सेहो ऐ बातक संकेत करैत अछि जे हुनकर सर्जनात्मक प्रवाह अखनो अविराम रूपेँ सक्रिय छैन।

मण्डलजीक साहित्यक विशिष्टताकेँ बुझबामे मैथिली साहित्यक वरेण्य आलोचकसभक अभिमत विशेष महत्त्व रखैत अछि। किछु आलोचक हुनका ग्रामीण जीवनक सूक्ष्म चित्रकारक रूपमे देखै छैथ, किएक तँ ओ गामक बाह्य दृश्यकेँ खाली चित्रित नहि करै छैथ; ओ ओकर भीतरी स्पन्दन, श्रम-संस्कृति, सम्बन्धक आत्मीयता, अभावक पीड़ा, लोक-व्यवहारक सहजता आ जीवन-संघर्षक यथार्थकेँ अत्यन्त आत्मीयता आ सजीवतासँ रूपायित करै छैथ। दोसर दिस, अनेक समीक्षकसभक मत अछि जे हुनकर लेखनमे परम्परागत आजीविकाक गौरव, लोक-समाजक स्वाभिमान आ सामाजिक वास्तविकताक स्वाभाविक चित्रण विशेष रूपेँ दृष्टिगोचर होइत अछि। यएह कारण किसान आ मजदूर हुनकर साहित्यमे

खाली श्रमशील वर्गक प्रतिनिधि रूपमे नहि अबैत, बल्कि गामक जीवन-संरचनाक केन्द्रीय आधार बनि कऽ उपस्थित होइत छैथ। वंचित समाज, घरेलू स्त्री, बुजुर्ग आ युवा सेहो हुनकर रचना-संसारमे अलग-अलग जीवन-अनुभवक वाहक रूपमे स्थान पबैत छैथ। लोक-रीति, ग्राम्य संस्कार आ परम्परागत जीवन-व्यवहारक माध्यमसँ मिथिलाक समाज पाठकक सोझमे अपन व्यापक आ बहुआयामी रूपमे उभरल रहैत अछि।

ऐ आलोचनात्मक अभिमतसभसँ मण्डलजीक रचना-संसारक एक महत्त्वपूर्ण रूप उद्घाटित होइत अछि। कियो हुनका मिथिलाक माटि आ जीवन-चेतनाक सशक्त स्वर कहै छैथ, तँ कियो हुनकर साहित्यकेँ स्वातंत्र्योत्तर भारतमे एक समानान्तर लोक-संसारक सर्जना कहि अभिहित केने छैथ। ई टिप्पणीसभ खाली प्रशंसात्मक उल्लेख नहि अछि। अइमे ई स्वीकारोक्ति निहित अछि जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी लोकजीवनक साधारण अनुभवसभकेँ गम्भीर साहित्यिक गरिमा प्रदान करै छैथ। हुनकर साहित्य ओइ जीवनक पक्षमे ठाढ़ होइत अछि जे बहुधा मुख्यधारा साहित्यक चमकदार विमर्शसभसँ बाहर रहि जाइत अछि। ओइ कारण हुनकर रचना-संसार मिथिलाक माटि आ श्रमसँ गहींर रूपेँ जुड़ल सशक्त साहित्यिक अभिलेख बनि उठैत अछि। ओइ अभिलेखमे पीड़ा आ संघर्षक यथार्थ भेटैत अछि। संगहि नैतिकता आ मानवीय गरिमाक प्रश्न सेहो बराबर उभरैत रहैत अछि।

मण्डलजीक रचना-संसारक एकटा महत्त्वपूर्ण पक्ष ईहो अछि जे हुनकर कथा, उपन्यास आ आन सृजनात्मक विधासभमे व्यक्त जीवन-दृष्टि पयस्विनीमे प्रत्यक्ष वैचारिक रूप ग्रहण करैत अछि। हुनकर सृजनात्मक साहित्यमे लोकजीवन आ श्रम कोनो बाहरी प्रसंग नहि, बल्कि स्थायी अन्तरधारा रूपमे प्रवाहित रहल अछि। सामाजिक असमानता, संस्कृति आ मानवीय मर्यादाक प्रश्न सेहो ओही धारासँ जुड़ि अपन अर्थ ग्रहण करैत रहल। कथा आ उपन्यासमे जे दृष्टि पात्र, घटना, परिवेश आ संवेदनाक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि, पयस्विनीमे सएह जनपक्षधर चेतना विश्लेषणात्मक, तर्कसंगत आ विचारप्रधान गद्य बनि उठैत अछि। ऐ अर्थमे

पयस्विनी हुनकर कथा-संसारसँ पृथक कोनो असम्बद्ध पोथी नहि अछि। ई ओइ समग्र रचनात्मक अनुभवक वैचारिक संकेन्द्रण छी, जेकरा आधारपर हुनकर साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ अधिक गहराइसँ बुझल जा सकैत अछि। एकरा पढ़िते अनुभव होइत अछि जे हुनकर आन्तरिक रचनाकार आ चिन्तक अलग नहि; दुनू एक-दोसराकेँ आलोकित करैत अछि।

ऐ समालोचनात्मक आधारसँ ईहो सुस्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजी अपन गामकेँ अवश्य केन्द्रमे रखै छैथ, मुदा हुनकर दृष्टि कोनो सीमित आंचलिक परिधिमे आबद्ध नहि रहैत अछि। गाम हुनका लग केवल भौगोलिक स्थल नहि, समाजकेँ बुझबाक मूल आधार अछि। ओइ आधारपर ठाढ़ भऽ कऽ मण्डलजी वर्ग, श्रम आ असमानताक प्रश्नकेँ केवल सामाजिक समस्या रूपमे नहि, जीवनक भीतरी संरचनासँ जुड़ल प्रश्न रूपमे देखै छैथ। मानवीय मर्यादा आ लोक-संस्कृति हुनका लेल समाजकेँ बुझबाक सहायक तत्त्व भरि नहि, बल्कि ओ धरातल छी जैपर मनुक्खक सम्बन्ध, संघर्ष आ मूल्यक पहचान सम्भव होइत अछि। फलस्वरूप सामुदायिक सम्बन्ध, बदलैत सामाजिक मूल्य आ लोकजीवनक आन्तरिक तनावपर हुनकर दृष्टि सदिखन सजग रहैत अछि। अही कारण हुनकर साहित्य आंचलिकतासँ जन्म लैत अछि, मुदा ओकर अर्थ, सरोकार आ प्रभाव व्यापक सामाजिक धरातलपर सक्रिय भऽ उठैत अछि। हुनकर गाम स्थानीय रहि कऽ सेहो भारतीय समाजक अन्तर्विरोध, लोकजीवनक संघर्ष आ मनुक्खक गरिमाक प्रश्नकेँ उद्घाटित करबाक समर्थ आधार बनैत अछि।

ऐ व्यापक रचना-संसारमे पयस्विनी विशेष महत्त्व रखैबला कृति रूपमे प्रकट होइत अछि। मैथिलीमे लिखल शोध-पत्र, निबन्ध, आलोचनात्मक टिप्पणी, प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक माध्यमसँ ई पोथी मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वकेँ प्रत्यक्ष रूपमे उद्घाटित करैत अछि। एकर पहिल संस्करण 2021 इस्वीमे आ दोसर संस्करण 2023 इस्वीमे प्रकाशित भेल। पहिल दृष्टिमे ई विविध गद्य-रचनाक संग्रह बुझि पड़ैत अछि, मुदा गम्भीर अवलोकनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ऐ विविधताक भीतर एक सुसंगत वैचारिक एकता सक्रिय अछि। अलग-अलग विषय आ रूप रहितो पोथीक

मूल चिन्ता मनुक्ख, समाज, संस्कृति, लोकचेतना आ विचारक जिम्मेदारीसँ जुड़ल रहैत अछि।

पयस्विनीमे दार्शनिक प्रश्न, लोक-संस्कृतिक विमर्श, संस्कार-बोध, सामाजिक प्रतिरोध आ संवादधर्मी आत्मव्याख्या एकठाम उपस्थित होइत अछि। ऐ विविधताक कारण पोथी बाह्य रूपसँ बहुखण्डीय गद्य-संग्रह बुझि पड़ैत अछि, मुदा गम्भीर अवलोकनसँ बुझाइत अछि जे अइमे मण्डलजीक चिन्तनक अनेक धारा एक संगठित वैचारिक धरातलपर मिलैत अछि। ई धारा अन्ततः मनुक्ख, समाज, संस्कृति, न्यायपूर्ण लोकचेतना आ जनपक्षधर दृष्टिक दिशामे प्रवाहित होइत अछि। तँए पयस्विनीकेँ खाली लेख-संग्रह कहि छोड़ि देब पर्याप्त नहि; ई मण्डलजीक रचना-दृष्टि, समाज-बोध आ संवादधर्मी चेतनाक एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक दस्तावेज रूपमे उद्घाटित होइत अछि।

पयस्विनीक प्रमुख लेखसभ मण्डलजीक विचार-संसारक भिन्न-भिन्न पक्षकेँ खोलैत अछि। धार्मिक अवधारणापर प्रश्न उठेबाक तर्कशीलता हुनकर विवेकशील चेतनाकेँ सामने अनैत अछि। संस्कार आ लोकगीतक सहारे मिथिलाक सांस्कृतिक संरचनाकेँ बुझबाक दृष्टि विकसित होइत अछि। वर्चस्ववादी प्रवृत्तिक प्रतिपक्षमे हाशियाक समाजक पक्षधरता पोथीकेँ गहींर सामाजिक अर्थ दैत अछि। ऐ सभ प्रसंगमे लेखक कोनो विषयकेँ मात्र सूचना वा अवसरजन्य टिप्पणीक रूपमे नहि उठबै छैथ; ओ ओकर सामाजिक, सांस्कृतिक आ वैचारिक आशयपर विचार करै छैथ। तँए पयस्विनीमे विषयक विविधता रहितो दृष्टिक एकाग्रता बनल रहैत अछि।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद ऐ पोथीक विशिष्टताकेँ आरो गाढ़ बनबैत अछि। ऐ अंशसभमे मण्डलजी अपन साहित्य-दृष्टि, जीवन-बोध, लेखन-प्रेरणा, सामाजिक चिन्ता आ भाषा-सम्बन्धी विचारसभकेँ अधिक प्रत्यक्ष रूपमे रखै छैथ। ऐ माध्यमसँ पाठककेँ रचनाकारक भीतरक वैचारिक गति, सामाजिक प्रतिबद्धता आ आत्मव्याख्याक स्वर अधिक विश्वसनीय रूपमे प्राप्त होइत अछि। ऐ कारण पयस्विनी मण्डलजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वकेँ बुझबाक लेल आधार-पुस्तकक रूप सेहो ग्रहण करैत अछि। कारण, ऐ

पोथीमे मण्डलजी स्वयं अपन विचार, भाषा-बोध, सामाजिक चिन्ता, लेखन-प्रेरणा आ रचना-दृष्टिकेँ प्रत्यक्ष रूपमे रखै छैथ। तँए पयस्विनी बाहरी आलोचना द्वारा निर्मित छवि मात्र नहि रहिकऽ रचनाकारक आत्मव्याख्या केर मूल स्रोत सेहो बनि जाइत अछि।

यएह कारण पयस्विनीपर पृथक आलोचनात्मक अध्ययनक आवश्यकता स्वाभाविक रूपेँ सामने अबैत अछि। मण्डलजीपर सामान्यतः कथा, उपन्यास आ ग्राम्य यथार्थक सन्दर्भमे अधिक चरचा भेल अछि, मुदा हुनकर वैचारिक गद्य, सांस्कृतिक विवेक, सार्वजनिक वैचारिक सक्रियता आ प्रश्नोत्तर-आधारित आत्मदृष्टिक समेकित परीक्षण अपेक्षित रहल। पयस्विनी ऐ सभ पक्षकेँ एक्केठाम उपस्थित करैत अछि। तइ कारण एकरा केन्द्रमे राखि कएल गेल अध्ययन मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मिताकेँ बुझबाक लेल विशेष उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

प्रस्तुत पुस्तकक विशेषता ऐ बातमे निहित अछि जे ई पयस्विनीक केवल सार-संक्षेप वा सामान्य परिचय प्रस्तुत नहि करैत अछि। ई ऐ पोथीक भीतरी वैचारिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक पक्षधरता, संवादधर्मिता, रचना-शिल्प आ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितासँ एकर अन्तर्सम्बन्धकेँ एकत्र रूपेँ उद्घाटित करबाक प्रयास करैत अछि। एतए पयस्विनीकेँ हुनकर स्वतंत्र गद्य-पोथी भरि नहि, हुनकर चिन्तनक संगठित दस्तावेजक रूपमे पढ़ल गेल अछि। ऐ दृष्टिसँ ई अध्ययन हुनकर वैचारिक गद्यक सम्यक् मूल्यांकनक दिशामे एक आरम्भिक, किन्तु आवश्यक योगदान प्रस्तुत करैत अछि।

प्रस्तुत पुस्तक 'पयस्विनी विमर्श' ऐ आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि तैयार कएल गेल अछि। एकर उद्देश्य पयस्विनीक स्वरूप, अन्तर्वस्तु आ विचार-संरचनाक सम्यक् परीक्षण करब अछि। लोक-सांस्कृतिक धरातल, सामाजिक पक्षधरता, संवादधर्मी शैली आ तर्क-पद्धति ऐ परीक्षणक प्रमुख आधार बनैत अछि। संगहि, मण्डलजीक समग्र कृतित्वमे पयस्विनीक स्थानकेँ सेहो अध्ययनक केन्द्रमे राखल गेल अछि।

ऐ भूमिकामे हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्वक चरचा विस्तारसँ ऐ

कारण कएल गेल अछि जे रचनाकारक जीवन-दृष्टि बुझने बिना पयस्विनीक अन्तरस्वरकेँ पूर्ण रूपेँ पकड़ब कठिन भऽ सकैत अछि। मण्डलजी अपन जीवनमे श्रम, अनुशासन, सामाजिक न्याय आ जन-संवादकेँ केन्द्रमे रखै छैथ; तैं हुनकर गद्य सेहो ओही जीवन-संस्कारसँ पोषित होइत अछि। पयस्विनी अही सुसम्बद्ध जीवन-दृष्टिक साहित्यिक परिणति रूपमे प्रकट होइत अछि।

ऐ अध्ययनमे मुख्यतः पाठ-विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, सन्दर्भपरक आ आलोचनात्मक पद्धतिक उपयोग कएल गेल अछि। पयस्विनीक भीतर संकलित लेख, प्रश्नोत्तर, परिसंवाद आ सार्वजनिक टिप्पणीक निकट पाठ केर आधारपर एकर वैचारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आ शैलीगत स्वरूपक परीक्षण कएल गेल अछि। जैठाम आवश्यक बुझल गेल अछि, ओतए मण्डलजीक जीवन-दृष्टि, कृतित्व आ लोकसम्बद्ध साहित्यिक भूमिकाकेँ सहायक पृष्ठभूमिक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि। ऐ पद्धतिक माध्यमसँ पयस्विनीकेँ सामान्य संग्रहक रूपमे नहि, एक संगठित वैचारिक गद्यक पाठ रूपमे बुझबाक प्रयास कएल गेल अछि।

समकालीन मैथिली आलोचना-साहित्यक सन्दर्भमे पयस्विनीक अध्ययन विशेष महत्त्व रखैत अछि। आजुक समयमे जखन भाषा आ लोक-संस्कृतिक संग सामाजिक प्रतिनिधित्व, सार्वजनिक वैचारिक सक्रियता आ साहित्यक जनपक्षधर भूमिकापर नव सिरासँ विचार भऽ रहल अछि, तखन एहेन पोथीक आलोचनात्मक पुनर्पाठ आवश्यक भऽ जाइत अछि। पयस्विनीमे विचार, समाज, संस्कृति, प्रतिरोध, लोक-चेतना आ संवाद परस्पर सम्बद्ध रूपमे उद्घाटित होइत अछि। तँए प्रस्तुत अध्ययन एक पुस्तकक समीक्षा मात्र नहि, आधुनिक मैथिली साहित्यक वैचारिक गद्य, लोकधर्मी साहित्य-दृष्टि आ सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्शक एक गम्भीर डेग अछि।

ऐ अध्ययनक एक गूढ़ अभिप्राय ईहो अछि जे मैथिली साहित्यमे वैचारिक गद्यक महत्त्वकेँ नव सिरासँ चिन्हल जाए। सामान्यतः रचनाकारक कथा, उपन्यास वा काव्यपर अधिक चरचा होइत अछि, मुदा वैचारिक गद्य

बहुधा अपेक्षित रहि जाइत अछि, ओकरा गम्भीरतासँ नहि पढ़ल जाइत अछि। पयस्विनी ऐ अभावकेँ पूरा करबाक योग्य पोथी छी, किएक तँ एतए लेखक अपन समय, समाज, संस्कृति, परम्परा, असमानता, भाषा आ जनजीवनपर प्रत्यक्ष चिन्तन करै छैथ। ऐ प्रकारेँ प्रस्तुत अध्ययन हुनकर गद्यक मूल्यांकनक संग-संग आधुनिक मैथिलीमे विचारप्रधान, लोकधर्मी लेखनक सम्भावना आ गरिमाकेँ सेहो रेखांकित करैत अछि।

आगाँक प्रकरणसभमे प्रस्तुत पोथीक बहुआयामी स्वरूपक क्रमशः विश्लेषण कएल गेल अछि। पहिल अध्यायमे एकर स्वरूप, रचना-प्रसंग आ विधागत संरचनापर विचार कएल गेल अछि, जइसँ पोथीक समग्र गठन, अन्तर्वस्तु आ विधागत विशेषताक प्राथमिक आधार सुस्पष्ट होइत अछि। तदनन्तर दार्शनिक प्रश्न आ तर्कशील दृष्टिपर विचार कएल गेल अछि। अगिला प्रकरणसभमे संस्कृति-संस्कार, लोक-चेतना, हाशियाक समाज, वर्चस्व-विमर्श, सामाजिक प्रतिरोध आ सार्वजनिक लेखनक विवेचन क्रमशः प्रस्तुत भेल अछि।

ऐ सभ अध्यायसभमे पयस्विनीकेँ केवल विविध लेखसभक संग्रह रूपमे नहि देखल गेल अछि; एकरा मण्डलजीक वैचारिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक दृष्टिक संगठित अभिव्यक्ति रूपमे बुझबाक प्रयास कएल गेल अछि। ऐ क्रममे प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे उद्घाटित हुनकर व्यक्तित्वक चरचा कएल गेल अछि। तत्पश्चात् पयस्विनीक आलोकमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वकेँ पृथक रूपेँ स्पष्ट कएल गेल अछि, जइसँ रचनाकारक आन्तरिक चिन्तन-प्रक्रिया, सामाजिक प्रतिबद्धता आ जनपक्षधर दृष्टि अधिक स्पष्टतासँ उद्घाटित होइत अछि।

आगाँ पयस्विनीक भाषा, शैली, तर्क-पद्धति आ गद्य-सौष्ठवक विश्लेषण कएल गेल अछि। तेकर उपरान्त एकर रचना-शिल्प, विन्यास आ अभिव्यक्ति-कौशलपर विचार कएल गेल अछि। अन्तिम अध्यायमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे पयस्विनीक स्थान निर्धारित कएल गेल अछि आ उपसंहारमे समूचा अध्ययनक निष्कर्ष समेटल गेल अछि।

ऐ प्रकारेँ प्रस्तुत अध्ययन जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक

व्यक्तित्व, लोकधर्मी साहित्य-दृष्टि आ आधुनिक मैथिली गद्यक विकास-क्रममे पयस्विनीकेँ एक महत्त्वपूर्ण पड़ावक रूपमे बुझबाक प्रयास करैत अछि। ई अध्ययन ऐ विश्वाससँ सम्पन्न भेल अछि जे हुनकर वैचारिक गद्यकेँ गम्भीर आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यमे पढ़ल जाए, ओकर सामाजिक-सांस्कृतिक आशयकेँ चिन्हल जाए आ मैथिली आलोचना-परम्परामे विचारप्रधान लोकधर्मी लेखनक गरिमाकेँ समुचित स्थान देल जाए। आशा अछि जे प्रस्तुत पोथी पयस्विनीक महत्त्वकेँ अधिक सुस्पष्ट करत आ हुनकर समग्र साहित्यिक अवदानकेँ बुझबाक दिशामे उपयोगी योगदान सिद्ध होएत।

- उमेश मण्डल

निर्मली, सुपौल

मो.: +91 99316 54742

पयस्विनी : स्वरूप, रचना-प्रसंग आ विधागत संरचना

पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक एहेन गद्यात्मक पोथी छी, जइमे हुनकर वैचारिक सजगता, सामाजिक दृष्टि, सांस्कृतिक संवेदना आ संवादधर्मी स्वभाव एकसंग अभिव्यक्त भेल अछि। ई पोथी मैथिलीमे शोध-पत्र, निबन्ध आ आलोचनाक संग्रहक रूपमे प्रकाशित अछि। एकर पहिल संस्करण 2021 इस्वीमे आ दोसर संस्करण 2023मे प्रकाशित भेल। शीर्षकक पृष्ठ आ प्रकाशनक सूचनासँ ई सद्य: स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे लेखक ऐ पुस्तककेँ विचारप्रधान गद्यक रूपमे सामने आनए चाहै छैथ। पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ प्रकाशित ई कृति बाह्य रूपसँ साधारण पोथी बुझि पड़ैत अछि, मुदा अन्तर्वस्तुक स्तरपर ई बहुआयामी गद्य-दस्तावेजक रूप धारण करैत अछि।

ऐ पोथीक नाम अत्यन्त अर्थवत्तासँ भरल अछि। 'पयस्विनी' शब्दमे प्रवाह, पोषण, जीवनधर्मिता आ आन्तरिक रसात्मकता सभ एकसंग सन्निहित अछि। ई शीर्षक पोथीक स्वभावकेँ भीतरसँ संकेत करैत अछि। ऐ पोथीक भीतर अनेक लेख, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद अलग-अलग धारा जकाँ बहैत अछि, मुदा सभक अन्तिम प्रवाह मनुक्ख, समाज, संस्कृति, लोकचेतना आ विचारक जिम्मेदारी दिस पहुँचैत अछि। जखन पाठक ऐ पोथीक अनुक्रमपर दृष्टि दइ छैथ, तखन स्पष्ट होइत अछि जे ऐ नामक अनुरूप एकर सामग्री सेहो बहुधारात्मक अछि। एतए मात्र एक गोट विषयक संकुचित पुनरुक्ति नहि भेल अछि, बल्कि भिन्न-भिन्न स्तरक विचार प्रस्तुत

संग्रहमे संगृहीत अछि। धर्म, समाज, लोकसंस्कृति, साहित्यिक सक्रियता, व्यक्तित्व-स्मरण, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सदृश विविध आयाम ऐ पोथीक आन्तरिक संरचनाकेँ मजगूतीसँ गढ़ने अछि। यएह कारण अछि जे पयस्विनीक स्वरूपक चरचा करैत काल एकरा सामान्य निबन्ध-संग्रहक श्रेणीमे राखि चुप भऽ जाएब पर्याप्त नहि बुझि पड़ैत।

अनुक्रमक आधारपर देखल जाए तँ पयस्विनीमे कुल बारह रचना समाविष्ट अछि। पहिल भागमे 'अवतारवाद', 'संस्कार आ संस्कार गीत' आ 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' जकाँ वैचारिक लेख अछि। दोसर भागमे 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2011 गुवाहाटी', 'सगर राति दीप जरय'क 100म कथागोष्ठीक मादे, 'वेब प्रोग्राम, 29 जुलाइ 2020' आ 'भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा' सन सार्वजनिक-सांस्कृतिक लेख अछि। अन्तिम भाग 'गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक जवाब', 'मुन्नाजीक प्रश्नक जवाब', 'मुकेश दत्तजीक प्रश्नक जवाब', 'परिसंवाद-01' आ 'परिसंवाद- 02'सँ बनैत अछि। ऐ शीर्षकसभक सामंजस्यसँ बुझाइत अछि जे पुस्तक एकरूप विधागत अनुशासनक पंक्तिबद्ध उदाहरण नहि रहि, बहुस्तरीय गद्य-विन्यासक प्रतिनिधि कृति छी। लेखकक अभिरुचि विषय-विस्तारक दिशामे अछि। ओ अपन चिन्तनक विविध पक्षकेँ पृथक-पृथक शीर्षकमे दर्ज केने छैथ।

पुस्तकक स्वरूप नीक जकाँ बुझबाक लेल एकर सामग्रीकेँ चारि व्यापक खण्डमे विभाजित कएल जा सकैत अछि। पहिल खण्ड वैचारिक आ तर्कप्रधान गद्यक अछि। 'अवतारवाद' आ 'संस्कार आ संस्कार गीत' ऐ खण्डमे अबैत अछि। तहिना दोसर खण्ड सामाजिक प्रतिरोध, शक्ति-संरचना आ हाशियाक समाजक विमर्शसँ सम्बद्ध अछि। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' ऐ खण्डक केन्द्रीय पाठ छी। तेसर खण्ड साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक भागीदारीक अछि, जइमे सम्मेलन, कथागोष्ठी आ वेब-प्रोग्राम आधारित लेख शामिल अछि। चारिम खण्ड व्यक्तित्व, प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक अछि, जेतए लेखक अपन आत्मदृष्टि, रचनात्मक चिन्ता आ सार्वजनिक विचारधाराकेँ प्रत्यक्ष

रूपमे रखलैन अछि। ई चारू खण्ड अलग-अलग रहितो परस्पर सम्बद्ध अछि। पहिल खण्ड विचारक आधार बनबैत अछि, दोसर खण्ड ओइ विचारकेँ सामाजिक दिशा दैत अछि, तेसर खण्ड लेखकक सार्वजनिक साहित्यिक उपस्थिति खोलैत अछि आ चारिम खण्ड हुनकर आत्मस्वर, संवादशीलता आ रचना-दृष्टिकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। ऐ वर्गीकरणसँ ई बुझब आसान भऽ जाइत अछि जे पयस्विनी एक योजनाबद्ध वैचारिक विस्तारक संकेत सेहो अछि।

रचना-प्रसंगक दृष्टिसँ पयस्विनीक जन्म मण्डलजीक दीर्घ साहित्यिक आ सामाजिक अनुभवक गर्भसँ भेल बुझाइत अछि। कथा, उपन्यास, नाटक, पद्य, बाल-साहित्य, आत्मकथात्मक गद्य आ शोध-आलेख धरि पसरल हुनकर रचनात्मक जीवन ऐ पोथीक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि। एतेक व्यापक रचना-अनुभवक बीच पयस्विनी ओहन कृति रूपमे सामने अबैत अछि, जेतए रचनाकारक वैचारिक धरातल अधिक प्रत्यक्ष भऽ उठैत अछि। कथा-संसारमे जे बात पात्र, घटना आ परिवेशक माध्यमसँ व्यक्त होइत रहल, एतए सएह बात लेखकक अपन स्वर, अपन भाषा आ अपन विवेकक आधारपर पाठकसँ सोझ संवाद करैत अछि। ऐ कारण पयस्विनीकेँ मण्डलजीक रचनात्मक संसारक वैचारिक विस्तार रूपमे बुझब अधिक उचित होएत।

मण्डलजीक जीवन-दृष्टि आ पयस्विनीक रचना-प्रसंगक बीच गहींर सम्बन्ध अछि। जीवनवृत्तमे हुनकर सामाजिक परिचय आत्मनिर्भर किसानक रूपमे दर्ज अछि। खेती-बाड़ी हुनकर मूल कर्मभूमि छैन। ओ कृषिकेँ समाज-निर्माणक आधार मानै छैथ। पछुआएल वर्गक संघर्ष, सामाजिक रूढ़ि आ अन्धविश्वासक प्रतिरोध, तरकारी खेती आ कृषक-जीवन आधारित यथार्थवादी साहित्य हुनकर कार्यक्षेत्रक रूपमे उल्लिखित अछि। एहेन जीवनभूमिसँ निकलल लेखक जखन गद्य लिखै छैथ, तखन हुनकर चिन्तन अकादमिक रूक्षता धारण नहि करैत। ओ अनुभव, समाज आ व्यवहारक धरातलपर सक्रिय रहैत अछि। पयस्विनीक अधिकांश लेखसभमे ई गुण सहज रूपेँ अनुभव होइत अछि। एतए तर्क पुस्तकालयक

बन्द कोठरीसँ नहि, बल्कि जिनगीक खुलल परिवेशसँ आएल प्रतीत होइत अछि।

प्रस्तुत पोथीक आरम्भ 'अवतारवाद' शीर्षक लेखसँ होइत अछि, आ ई आरम्भ पयस्विनीक तर्कशील स्वरक स्पष्ट संकेत दैत अछि। एतए धार्मिक-मिथकीय मान्यताकेँ प्रश्नक कसौटीपर राखबाक प्रवृत्ति देखाइत अछि। ऐ प्रसंगक विस्तृत विवेचन दार्शनिक प्रश्न आ तर्कशील दृष्टि सम्बन्धी अध्यायमे स्वतंत्र रूपसँ कएल गेल अछि; मुदा पहिल अध्यायक सन्दर्भमे एतबे ध्यान देब आवश्यक अछि जे पयस्विनी आरम्भहिसँ पाठककेँ जिज्ञासा, तर्क आ वैचारिक आत्मनिर्भरताक क्षेत्रमे प्रवेश करबै छैथ।

'संस्कार आ संस्कार गीत' शीर्षक आलेख पुस्तकक सांस्कृतिक दिशा उद्घाटित करैत अछि। ऐ लेखमे मिथिलाक संस्कार-परम्परा, लोकगीत, स्त्रीक सांस्कृतिक भूमिका, जातिगत विविधता आ मौखिक परम्पराक संकेत भेटैत अछि। संस्कृति, संस्कार, लोकजीवन आ लोक-चेतना सम्बन्धी अध्यायमे ऐ पक्षपर विस्तारसँ विचार कएल गेल अछि। एतए मुख्य बात ई अछि जे पयस्विनी लोक-संस्कृतिकेँ जड़ परम्परा रूपमे नहि, बल्कि जीवित सामाजिक अनुभवक रूपमे देखैत अछि।

तृतीय प्रमुख लेख 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' पुस्तकक सामाजिक दिशा स्पष्ट करैत अछि। एतए भाषा, साहित्य, सत्ता, वंचना, प्रतिनिधित्व आ उपेक्षित समाजक प्रश्न एक्के विमर्श-फलकपर उपस्थित होइत अछि। हाशियाक समाज, वर्चस्व-विमर्श आ सामाजिक प्रतिरोध सम्बन्धी अध्यायमे ऐ विमर्शक विस्तृत परीक्षण कएल गेल अछि। पहिल अध्यायमे ओकर मूल संकेत एतबे अछि जे पयस्विनी सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक वर्चस्व आ जनपक्षधर प्रतिरोधकेँ अपन वैचारिक संरचनाक महत्त्वपूर्ण आधार बनबैत अछि।

पुस्तकक विधागत संरचनामे सार्वजनिक-साहित्यिक प्रसंगसभ सेहो विशेष महत्त्व रखैत अछि। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, सगर राति दीप जरय, वेब प्रोग्राम आ व्यक्तित्व-स्मरण सम्बन्धी लेखसभ स्पष्ट करैत अछि जे मण्डलजीक साहित्यिक उपस्थिति केवल एकान्त लेखन-क्रिया धरि

सीमित नहि रहल। ओ सम्मेलन, गोष्ठी, संवाद, सामूहिक वाचन आ सार्वजनिक साहित्यिक विमर्शक सक्रिय सहभागी रहल छैथ। ऐ अंशसभक कारण पयस्विनी साहित्यक सार्वजनिक जीवनकेँ अभिलेखित करबामे सेहो उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

प्रस्तुत पोथीक विधागत संरचनाकेँ एकर प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद-खण्ड विशेष बनबैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरजी, मुन्नाजी आ मुकेश दत्तजीक प्रश्नक जवाब तथा दू गोट परिसंवादक माध्यमसँ लेखकक आत्मदृष्टि, रचना-दृष्टि आ संवादधर्मी स्वभावक संकेत भेटैत अछि। ऐ संवादात्मक पक्षक सम्यक् परीक्षण प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे उद्घाटित मण्डलजीक व्यक्तित्व सम्बन्धी अध्यायमे कएल गेल अछि। अइ ठाम ई बात महत्त्वपूर्ण अछि जे पयस्विनी निबन्धात्मक गद्यक संग-संग संवादात्मक आत्मव्याख्याक स्वरूप सेहो धारण करैत अछि।

मण्डलजीक साहित्य-दर्शन पयस्विनीक विधागत प्रकृतिकेँ बुझबाक लेल विशेष उपयोगी अछि। हुनका लेल लेखन जीवनसँ पृथक प्रदर्शनक वस्तु नहि, बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता, मौन जीवनक पक्षधरता आ जन-संवादक साधना छी। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीक मिश्रित स्वरूप एकदम स्वाभाविक बुझाइत अछि। निबन्ध, प्रश्नोत्तर, परिसंवाद, सार्वजनिक लेख आ सांस्कृतिक टिप्पणी एतए अलग-अलग विधागत खण्ड मात्र नहि रहैत; ई सभ लेखकक संवादधर्मी साहित्य-दृष्टिक परस्पर सम्बद्ध अभिव्यक्ति रूपमे प्रकट होइत अछि। तइ कारण प्रस्तुत पोथीक संरचना मण्डलजीक वैचारिक प्रवृत्ति आ जन-संवादक आग्रहक स्वाभाविक परिणति रूपमे देखाइत अछि।

पुस्तकक आन्तरिक क्रममे सेहो एक योजनाबद्ध प्रवाह देखाइत अछि। आरम्भ दार्शनिक प्रश्नसँ होइत अछि। तत्पश्चात् संस्कृति आ लोक-संस्कारक चरचा अबैत अछि। ओइ पाछाँ सामाजिक प्रतिरोधक स्वर प्रबल होइत अछि। तदनन्तर साहित्यिक-सांस्कृतिक सार्वजनिकता, व्यक्तित्व-स्मरण आ अन्ततः प्रश्नोत्तर-परिसंवादक रूपमे लेखकक आत्मप्रकाश उद्घाटित होइत अछि। ई क्रम पाठककेँ क्रमशः लेखकक मस्तिष्क, समाज-दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना आ सार्वजनिक सक्रियता तथा संवादशील

स्वभावक दिशामे लऽ जाइत अछि। ऐ अर्थमे पयस्विनी खाली लेखसभक जोड़ नहि, अपितु एक क्रमिक आत्मप्रकाशक पोथी सिद्ध भऽ जाइत अछि। पाठक एक शीर्षकसँ दोसर शीर्षक धरि बढ़ैत-बढ़ैत लेखकक व्यक्तित्वक विभिन्न तह धरि पहुँच जाइ छैथ।

रचना-प्रसंगक अन्तिम आ महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे एकटा सेतुक कृति रूपमे देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा-साहित्य गामक जीवन, लोक-समाज, स्त्री, दलित-बोध, कृषक-संसार आ मानवीय संघर्षकेँ कथात्मक रूपमे अभिव्यक्त करैत अछि। जीवनवृत्तक अनुसार हुनकर भाषा लोकबोलीपर आधारित, संवादपरक आ सजीव अछि। आलोचकसभ हुनका ग्रामीण जीवनक अनुभवी चित्रकार कहने छैथ। पयस्विनी ऐ कथाकारक भीतर उपस्थित चिन्तक, सामाजिक पर्यवेक्षक, लोक-संस्कृति विश्लेषक आ सार्वजनिक बौद्धिक व्यक्तित्वकेँ सामने आनैत अछि। यएह कारण ई पुस्तक हुनकर समग्र साहित्यिक अवदानकेँ बुझबाक लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होइत अछि। ई खाली एक स्वतंत्र गद्य-पोथी नहि, बल्कि हुनकर रचनात्मक व्यक्तित्वक बहुआयामी स्वरूपकेँ चिन्हबाक एक आवश्यक माध्यम बनि जाइत अछि। आ तँए ऐ पोथीक माध्यमसँ पाठक हुनकर आन्तरिक कथाकार आ लोक-समाजक व्याख्याकारकेँ स्पष्ट रूपेँ बुझि सकैत अछि। तइले पयस्विनी हुनकर साहित्यक अन्तर्धारासभकेँ बुझबाक दिशामे विशेष सहायक पोथी मानल जा सकैत अछि।

ऐ अध्यायक निष्कर्ष ई अछि जे पयस्विनीक स्वरूप बहुधारात्मक अछि। एकर रचना-प्रसंग मण्डलजीक दीर्घ साहित्यिक आ सामाजिक साधनासँ गहींर रूपेँ सम्बद्ध अछि, आ विधागत संरचना मैथिली गद्य-साहित्यमे मिश्रित, बहुस्वरीय आ विचारोत्तेजक रूप प्रस्तुत करैत अछि। ई पोथी लेखकक वैचारिकता, लोक-संपृक्ति, सामाजिक पक्षधरता, सांस्कृतिक अवलोकन आ संवाद-धर्मिताक संयुक्त अभिव्यक्ति छी। ओइ कारण प्रस्तुत पोथीक आलोचनात्मक अध्ययन हुनकर समग्र कृतित्वकेँ बुझबाक लेल विशेष रूपेँ अनिवार्य बनि जाइत अछि। ❑

पयस्विनीमे दार्शनिक प्रश्न, तर्कशील दृष्टि आ वैचारिक प्रतिपक्ष

पयस्विनीक वैचारिक केन्द्रकेँ बुझबाक लेल ऐ तथ्यपर विशेष ध्यान देब आवश्यक अछि जे ई पोथी केवल निबन्धक संग्रह नइ छी, ई एक सचेत चिन्तकक आत्मप्रकाशक गद्य-दस्तावेज सेहो छी। ऐ पोथीमे संग्रहित दार्शनिक प्रश्न आकस्मिक टिप्पणी नहि, बल्कि लेखक जगदीश प्रसाद मण्डलक दीर्घ जीवन-अनुभव, सामाजिक अवलोकन, लोक-सम्बद्धता आ वैचारिक आत्मनिर्भरतासँ उपजल अछि। अनुक्रममे प्रमुख वैचारिक लेख, प्रश्नोत्तर आ परिसंवादकेँ एकसंग देखलासँ बुझाइत अछि जे मण्डलजीक चिन्तनक मूल स्वभाव प्रश्न उठेबाक, तथ्यकेँ परखबाक आ स्थापित मान्यताक भीतर छिपल सत्ता-संरचनाकेँ चिन्हबाक प्रयास छी। ऐ अर्थमे पयस्विनीकेँ एक जिज्ञासु, तर्कशील आ प्रतिपक्षधर्मी गद्य-पोथी कहल जा सकैए।

'अवतारवाद' शीर्षक लेखमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी धार्मिक अवधारणाकेँ भावनात्मक श्रद्धाक धरातलपर स्वीकार नहि करै छैथ, बल्कि तर्क, इतिहास आ स्रोत-विश्लेषणक आधारपर परखै छैथ। मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नृसिंह आदि प्रसंगक विवेचन करैत ओ शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता, ऐतरेय ब्राह्मण तथा श्रीमद्भागवतक स्कन्ध- 1, अध्याय- 3 धरिक स्रोतसभक उल्लेख करैत ई स्पष्ट केलैन अछि जे अवतारवाद कोनो आरम्भसँ स्थिर सिद्धान्त नहि रहल, बल्कि क्रमशः विकसित मान्यता छी। ऐ पद्धतिसँ लेखकक वैचारिक आग्रह स्पष्ट रूपेँ सामने अबैत अछि जे कोनो

धार्मिक अवधारणाकेँ खाली परम्परागत स्वीकृतिक आधारपर नहि परखल जाए, बल्कि ऐतिहासिक परीक्षण आ तार्किक समीक्षा द्वारा परखल जाए।

ऐ पोथीक दार्शनिक स्वर सभसँ तीव्र रूपमे 'अवतारवाद' लेखमे प्रकट होइत अछि। लेख आरम्भहिसँ ईश्वर, जीव, अवतार आ मिथकीय मान्यताक पारस्परिक सम्बन्धकेँ प्रश्नक धरातलपर आनैत अछि। लेखक पहिने पारम्परिक परिभाषा प्रस्तुत करै छैथ, तेकर बाद ओइ आधारपर मिथकीय कथासभक तर्क पूर्ण नैतिकता आ मानवीय अर्थकेँ परखै छैथ। ओ प्रश्न उठबैत कहै छैथ जे सर्वव्यापक, सर्वदयालु आ सर्वशक्तिमान सत्ता हत्या, छल, कपट, हिंसा आ पक्षपात सदृश व्यवहार केना कऽ सकैत अछि? मत्स्य, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम आ कृष्ण सम्बन्धी पुराण-प्रसंगसभक सन्दर्भमे उठौल गेल प्रश्न खाली धार्मिक असहमतिक संकेत नहि छी, बल्कि दार्शनिक विवेकक सशक्त उद्घोषणा छी। एतए लेखक श्रद्धा-प्रधान पुनरुक्तिपर आश्रित नहि रहै छैथ, बल्कि मिथकक नैतिक आशय, तार्किक आधार आ मानवीय परिणामकेँ परीक्षाक भूमिपर राखिकऽ विवेकपूर्ण समीक्षा प्रस्तुत करै छैथ।

'अवतारवाद' शीर्षक आलेखक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे मण्डलजी केवल निषेध धरि सीमित नहि रहै छैथ। ओ असहमति प्रकट करैत चुप्पी सेहो नहि साधै छैथ। ओ H. Jacobi, Monier Williams तथा H. C. Raychaudhuri जकाँ आधुनिक विद्वानक मतकेँ उद्धृत करै छैथ, जइसँ बुझाइत अछि जे अवतारवादक विमर्श धार्मिक लोकविश्वासक परिधिसँ आगाँ बढ़ि तुलनात्मक धर्म-अध्ययन आ इतिहास-चिन्तनक विषय सेहो रहल अछि। अइसँ मण्डलजीक आलोचना भावावेगक प्रतिक्रिया नहि रहि, प्रमाण-समर्थित वैचारिक हस्तक्षेप बनि जाइत अछि। ओ शास्त्रीय सन्दर्भ, पौराणिक क्रम, वैदिक उल्लेख आ अवतारवादक ऐतिहासिक विकासपर सेहो दृष्टि दइ छैथ। 'शतपथ ब्राह्मण', 'तैत्तिरीय संहिता', 'ऐतरेय ब्राह्मण', 'हरिवंश', 'विष्णु पुराण' आ भागवत-परम्पराक उदाहरण दैत ओ देखबै छैथ जे अवतारवाद स्थिर तत्त्वक रूपमे नहि, कालक्रमेँ विकसित, रूपान्तरित आ पुनर्रचित अवधारणाक रूपमे रहल अछि। अर्थात्

मण्डलजीक तर्क भावावेशपर आधारित नहि अछि; ओ स्रोत, इतिहास आ परम्पराक भीतरी गतिपर विचार करै छैथ। ई बात हुनकर चिन्तनकेँ दार्शनिक गम्भीरता प्रदान करैत अछि।

मण्डलजीक अनुसार अवतारवाद मनुक्खमे हीनभावना आनैत अछि। हुनका विचारमे एकर सभसँ गम्भीर दुष्परिणाम ई अछि जे ई मनुक्खक आत्मविश्वास, नैतिक सक्रियता आ ऐतिहासिक उत्तरदायित्वकेँ कमजोर करैत अछि। जँ समाज संकट, अन्याय वा विघटनक क्षणमे अपन शक्ति, विवेक आ सामूहिक प्रतिरोधपर भरोसा करब छोड़ि दैवी अवतरणक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहत, तँ परिवर्तनक सम्भावना शिथिल भऽ जाएत। अही कारण मण्डलजीक आग्रह अछि जे अन्याय, संकट आ परिवर्तनक क्षणमे मनुक्ख अपन विवेक, श्रम, नैतिक साहस आ सामूहिक शक्तिपर भरोसा करए। लेखक साफ कहै छैथ जे धरतीपर मनुक्खेसभसँ बलशाली सत्ता अछि; काम, क्रोध, राग, द्वेष सदृश दुर्गुणपर विजय पाबि मनुक्ख अपना भीतर उच्चतर नैतिक सत्ताक अनुभव कऽ सकैत अछि। ऐ रूपेँ मण्डलजी अवतारवादक प्रतिपक्षमे मानवीय आत्मबल, नैतिक साधना आ चेतन सक्रियताक दर्शन प्रस्तुत करै छैथ।

ऐ प्रकारेँ ई लेख मिथकीय अवतारवादक प्रतिपक्षमे मानवीय आत्मविकासक दर्शन प्रस्तुत करैत अछि। ऐ प्रतिपक्षकेँ लेखक लोक-सन्त परम्परासँ सेहो पुष्ट करै छैथ। कबीरक बीजकसँ उद्धृत पंक्तिसभक माध्यमसँ ओ देखबै छैथ जे भारतीय चिन्तनपरम्परामे अवतारवादक विरोध कोनो नव बात नहि, बल्कि ज्ञान, विवेक आ आत्मबोधक परम्परा पूर्वहिसँ विद्यमान रहल अछि। एतए मण्डलजीक तर्कशीलता केवल आधुनिक पाश्चात्य विवेकक प्रभाव नहि, बल्कि भारतीय लोक-विवेक, संत-परम्परा आ आत्मबोधक स्वदेशी धारासँ सेहो जुड़ि जाइत अछि। कबीरक स्मरण अही लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ श्रद्धाक नामपर विवेकक दमन स्वीकार नहि करै छैथ। ऐ कारणेँ मण्डलजीक तर्कशीलता स्थानीय नहि, व्यापक भारतीय बौद्धिक परम्परासँ सम्बद्ध बुझाइत अछि। ई मानवतावादी तर्कशीलता प्रस्तुत पोथीक दार्शनिक आधारकेँ चिन्हबाक लेल केन्द्रीय

महत्त्व रखैत अछि।

मण्डलजीक तर्कशील दृष्टि खाली धार्मिक मिथक धरि सीमित नहि अछि। 'संस्कार आ संस्कार गीत' शीर्षक लेखमे सेहो ओ परम्पराकेँ प्रश्नरहित रूपमे स्वीकार नहि करै छैथ। ओ संस्कारक शास्त्रीय अर्थ, सामाजिक उपयोग, जातिगत भिन्नता, व्यवहारगत असमानता आ मिथिलाक लोकजीवनमे ओकर वास्तविक स्थितिपर विचार करै छैथ। एतए ओ कहै छैथ जे संस्कारक नाम एक भऽ सकैत अछि, मुदा समाजक विभिन्न वर्गमे ओकर रूप, प्रयोजन आ सामाजिक पहुँच भिन्न रहैत अछि। मुड़न, उपनयन, विवाह, मृत्यु आदि संस्कारसभक प्रसंगमे, आ लोकगीतक भनितासभक विश्लेषण करैत, मण्डलजी ई देखबै छैथ जे परम्परा कोनो एकरस आ सर्वसुलभ व्यवस्था नहि अछि। समाजक भिन्न-भिन्न जाति आ वर्गमे एक्के संस्कारक रूप, रीति, मर्यादा, सामाजिक प्रतिष्ठा आ व्यवहारगत पहुँच अलग-अलग रहैत अछि। एतए स्त्रीक उपस्थिति सहभागी भरि नहि रहैत; ओ संस्कृतिक वहनकर्त्रीक रूपमे प्रकट होइत अछि, कारण लोकगीत, भनिता, अनुष्ठानिक व्यवहार आ पारिवारिक संस्कारक जीवित परम्पराकेँ ओ अपन श्रम, स्मृति आ भावबोधसँ निरन्तर बनौने रखैत अछि। ऐ प्रकारेँ मण्डलजी परम्पराकेँ जड़, निर्विवाद वा महिमामण्डित धरोहरक रूपमे नहि देखै छैथ; ओ ओकरा समाजक भीतर सक्रिय असमानता, सहभागिता आ सांस्कृतिक प्रवाहसँ जुड़ल जीवित सामाजिक तथ्यक रूपमे परखै छैथ। ऐ दृष्टिमे भावुक महिमामण्डन कम, आ सामाजिक-सांस्कृतिक विवेचन अधिक प्रबल भऽ उठैत अछि।

'संस्कार आ संस्कार गीत'क भीतर मण्डलजीक दार्शनिकता एक भिन्न रूपमे देखि पड़ैत अछि। एतए ओ संस्कृतिकेँ स्थिर, पवित्र आ अपरिवर्तनीय मानि नहि चलै छैथ। ओ पुछै छैथ: मिथिलाक संस्कृति केकर संस्कृति छी? संस्कारक सामाजिक आधार की अछि? लोकगीतमे एकरूपता किएक नहि भेटैत? संस्कार आ तंत्रसाधनाक अन्तर्सम्बन्ध कोन रूपमे बनैत अछि? लोकपरम्परा आ ब्राह्मणीकृत संरचनाक घुलनशीलता केना विकसित होइत अछि? ई प्रश्नसभ हुनकर सांस्कृतिक तर्कबुद्धिक

परिचायक बनैत अछि। ऐ लेखसँ बुझाइत अछि जे मण्डलजी परम्पराक भीतर दबल इतिहासक संकेत पढ़ै छैथ। ओ परम्पराकेँ केवल आदरक वस्तु नहि मानै छैथ, ओकरा विश्लेषणक विषय सेहो बनबै छैथ। पयस्विनीक दार्शनिक प्रकृतिमे ई विश्लेषणधर्मी स्वभाव महत्त्वपूर्ण योगदान दैत अछि।

ऐ तर्कशीलता सामाजिक धरातलपर सभसँ स्पष्ट रूपेँ 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष'मे उद्घाटित होइत अछि। एतए मण्डलजी इतिहास आ सत्ता-संरचनाक पृष्ठभूमिमे भाषा-साहित्यक भूमिकाकेँ परखै छैथ आ वर्ग-विभाजन, जातिगत असमानता तथा सांस्कृतिक वर्चस्वक गुत्थीकेँ एकसंग खोलै छैथ। हुनकर तर्क अछि जे साहित्य समाजक दर्पण छी। जँ साहित्य समाजक अधिकांश छुटल अंशकेँ अभिव्यक्त नहि करैत, तँ ओकर दर्पण अपूर्ण आ पक्षपाती बनि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक उत्तरमे सेहो मण्डलजी स्पष्ट करै छैथ जे साहित्यमे किछु समाजक चरचा आवश्यकतासँ अधिक भेल, मुदा समाजक बहुत पैघ हिस्सा कटि कात भऽ गेल। अपन सृजनक उद्देश्य ओ ओइ छुटल समाजकेँ पकैड़ लिखब मानै छैथ। ऐ कथनसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे हुनकर वैचारिक प्रतिपक्ष केवल शास्त्रीय धर्ममतक विरुद्ध नहि, साहित्यिक वर्चस्वक विरुद्ध सेहो सक्रिय अछि।

मण्डलजीक वैचारिक प्रतिपक्ष मूलतः तीन स्तरपर सक्रिय देखाइत अछि। पहिल स्तर मिथकीय आ आध्यात्मिक अन्धस्वीकृतिक विरुद्ध विवेकक प्रतिपक्ष अछि। दोसर स्तर सांस्कृतिक प्रभुत्वक विरुद्ध लोक-आधारित पुनर्पाठक प्रतिपक्ष अछि आ तेसर स्तर साहित्यिक मुख्यधाराक विरुद्ध छुटल, दबल, वंचित आ बोल रहित समाजक पक्षमे ठाढ़ प्रतिपक्ष अछि। ऐ तीनू स्तरकेँ एक्के सूत्रमे बान्हल जाए तँ हुनकर चिन्तनक मूल आग्रह स्पष्ट होइत अछि। ओ जीवनक वास्तविक धरातलसँ काटि देल गेल आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक संरचनासभपर अविश्वास करै छैथ। ओ अनुभव, समाज, मनुक्ख, श्रम आ जन-जीवनक यथार्थकेँ प्रामाणिक धरातल मानै छैथ।

प्रश्नोत्तरक अंशसभ पयस्विनीक दार्शनिक समझकेँ आरो स्पष्ट करैत

अछि। गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नपर मण्डलजी साहित्यकेँ एहेन दर्पण कहै छैथ जेतए भूत, वर्तमान आ भविष्यक दर्शन एकसंग होइत अछि। ऐ कथनक साधारण अर्थ नहि लगेबाक चाही। एतए साहित्य मात्र सौन्दर्यबोधक वस्तु नहि, समय-बोधक औजार बनि जाइत अछि। समाजक दशा आ दिशा सभसँ पूर्व लेखककेँ देखए पड़ैत अछि। मुदा एतए लेखक केवल प्रतिच्छवि नहि बनबै छैथ, बल्कि ओ चयन करै छैथ। ओइ झाँपल तथ्यकेँ देखै छैथ, ओइ दिशापर विचार करै छैथ; जेकरापर प्रायः कियो दृष्टि नहि देलक। ऐ बातक उत्तर दैत मण्डलजी स्पष्ट कहै छैथ जे मिथिलांचलक समाज एहेन झँपेलहा तथ्यसँ भरल अछि जेकरा दिस कियो देखिनहारे नहि भेला। ई कथन हुनकर सृजन-दर्शनक मूल सूत्र अछि। दर्शन एतए अदृश्य सत्यक खोज करैत अछि, जइसँ दबल यथार्थक उद्घाटनक क्रिया बनि जाइत अछि।

मण्डलजीक तर्कशीलता आ मानवीयताक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध अछि। हुनका लेल पाप-पुण्य शुष्क धार्मिक कोटि नहि अछि। प्रश्नोत्तरमे ओ एकरा सामाजिक व्यवहार आ मानवीय आचरणक आधारपर देखै छैथ। परोपकार धर्म आ परपीड़ा पापक सरल विवेक हुनका लेल जीवित नैतिक कसौटी अछि। ई विचारधारा ‘अवतारवाद’मे सेहो प्रतिध्वनित भेल अछि, जेतए हिंसा, छल, दमन, शोषण आ भ्रामक दैववादक आलोचना होइत अछि। जीवनवृत्तमे दर्ज हुनकर साहित्य-दर्शन सेहो ऐ बातक पुष्टि करैत अछि जे ओ मौन पीड़ाकेँ स्वर देबाक पक्षधर छैथ आ लेखनकेँ प्रतिबद्धताक अनुशासित साधना मानै छैथ। अतः हुनकर तर्कशील दृष्टि निषेधक सुख लेल उत्पन्न नहि भेल अछि। एकर मूल प्रेरणा मानवीय गरिमा, लोकमुक्ति आ सामाजिक जागरूकता अछि।

मण्डलजीक वैचारिक प्रतिपक्षक एक अन्य स्वर सामाजिक-भाषिक चेतनामे सुनि पड़ैत अछि। ‘वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष’ शीर्षक लेखमे भाषा आ साहित्यक सम्बन्धपर विचार करैत ओ कहै छैथ जे साहित्य समाजक दर्पण छी आ भाषा संवादक माध्यम। ऐ कथनमे भाषिक राजनीति, सांस्कृतिक असमानता आ साहित्यिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न छिपल अछि। भाषा, समाज आ साहित्यकेँ अलग-अलग इकाइ नहि

मानि ओ एक साझा सामाजिक संरचनाक रूपमे देखै छैथ। तइ कारण हुनका लेल मैथिलीकेँ मात्र भावनात्मक पहिचानक रूपमे बचाएब पर्याप्त नहि अछि। ओकर सामाजिक लोकतंत्रीकरण, जनसम्पर्क, जीवनानुकूल पाठ्यचर्या, उपेक्षित रचनाकारक उभार आ दबल समाजक आवाज साहित्यक आवश्यक क्षेत्र बनि जाइत अछि। ऐ बिन्दुपर जगदीश प्रसाद मण्डलजीक चिन्तन सांस्कृतिक प्रतिरोधसँ बढ़ि सामाजिक पुनर्गठनक दिशामे प्रवेश करैत अछि।

पयस्विनीक दार्शनिक पक्षक मूल्यांकन करैत काल ऐ बिन्दुकेँ विशेष रूपेँ रेखांकित करब आवश्यक अछि जे मण्डलजी दुरूह दार्शनिक शब्दावलीक आश्रय नहि लइ छैथ। हुनकर चिन्तन लोकानुभवक तहसँ उठैत अछि। प्रश्न सरल अछि, मुदा ओइ भीतर गम्भीर वैचारिक कम्पन अछि। ईश्वर जँ सर्वदयालु छैथ तखन हिंसा केना? संस्कार जँ समाजक धरोहर छी तखन असमानता किएक? साहित्य जँ दर्पण अछि तखन छुटल समाज बाहर किएक अछि? भाषा जँ अपन अछि तँ समाजसँ कटल रूपमे प्रतिष्ठित किएक अछि? आदि-आदि ऐ तरहक अनेक प्रश्न हुनकर दार्शनिकताकेँ लोक-आधारित बनबैत अछि। अइमे विश्वविद्यालयी दुरूहता कम, आ जीवनानुभवक आत्मीयता बेसी अछि। हुनकर चिन्तन एहेन बौद्धिक गठन नहि करैत जे खाली सैद्धान्तिक विमर्शक दायरामे सीमित रहि जाए, बल्कि ओ जीवित मनुक्खक अनुभूति, सामाजिक विषमता, लोक-व्यवहार आ प्रत्यक्ष जीवन-संघर्षसँ अपन अर्थ ग्रहण करैत अछि। फलस्वरूपेँ हुनकर विचार (साहित्य) एक दिस सामान्य पाठककेँ अपन सहजता, आत्मीयता आ अनुभवसापेक्ष सच्चाइक कारणेँ छुबैत अछि, तँ दोसर दिस शोधार्थी आ गम्भीर अध्येताकेँ गहन विश्लेषण, पुनर्विचार आ आलोचनात्मक मननक पर्याप्त अवकाश सेहो दैत अछि। ऐ प्रकारेँ हुनकर दार्शनिकता बौद्धिक रूपेँ गम्भीर होइतो जीवनसँ कटल नहि बुझाइत, बल्कि लोकानुभवमे प्रतिष्ठित वैचारिक संवेदनाक रूपमे सामने अबैत अछि।

मण्डलजीक तर्कशील दृष्टि आ वैचारिक प्रतिपक्षकेँ हुनकर समग्र कृतित्वक आलोकमे देखलासँ ई पक्ष आरो स्पष्ट भऽ उठैत अछि। हुनकर

रचनाधर्मिताक मुख्य विशेषता ग्राम्य यथार्थक प्रामाणिक चित्रण, स्त्री-विमर्शक संवेदनशील उपस्थिति, दलित-चेतनाक सजग अभिव्यक्ति, मौन आ उपेक्षित पात्रसभकेँ स्वर देबाक प्रवृत्ति तथा लोकबोली-आधारित संवादपरक भाषाक सजीव प्रयोगमे देखल जा सकैत अछि। ऐ व्यापक साहित्यिक आधारक प्रकाशमे जखन पयस्विनीक वैचारिक रचनासभ पढ़ल जाइत अछि, तखन स्पष्ट बुझि पड़ैत अछि जे हुनकर कथा-साहित्य जीवनक जे यथार्थ, तनाव, विषमता आ मानवीय जिजीविषाकेँ कथात्मक रूपमे उपस्थित करैत रहल, ऐ पोथीक लेखसभ ओइ अनुभवसभक वैचारिक व्याख्या आ प्रतिपक्षधर्मी अर्थ-संरचना प्रस्तुत करैत अछि।

अही कारण पयस्विनीकेँ कथा-साहित्यसँ पृथक कोनो अकस्मात् बौद्धिक उपक्रमक रूपमे देखब उचित नहि होएत। एकरा हुनकर समग्र रचनाशीलताक स्वाभाविक वैचारिक विस्तार रूपमे देखब बेसी उपयुक्त अछि। हुनकर चिन्तन लोक-जीवनसँ अलग अमूर्त मनन नहि; ओ गाम, समाज, संस्कृति, भाषा, असमानता आ मानवीय संघर्षक प्रत्यक्ष अनुभवसँ निर्मित चेतना अछि। सएह चेतना कथा, समाज, संस्कृति आ प्रतिपक्ष, चारू क्षेत्रमे समान रूपेँ गतिशील रहैत अछि। एतहि मण्डलजीक रचनात्मक व्यक्तित्वक भीतरी एकता सभसँ बेसी बुझाइत अछि।

मण्डलजीक सामाजिक दृष्टि प्रतिरोध धरि सीमित नहि रहैत; ओ रचनात्मक सांस्कृतिक सक्रियताक आग्रह सेहो करैत अछि। हुनका अनुसार भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक रक्षा बाहरी आश्रयपर निर्भर नहि, अपन सामूहिक प्रयत्नसँ सम्भव होइत अछि। ऐ सन्दर्भमे ओ राजनन्दन लाल दासक व्यक्तित्वक उदाहरण दइ छैथ, जे अपन बूत्तापर दीर्घकाल धरि पत्रिकाक सम्पादनक कार्य सम्हारलैन। चन्द्रमोहन कर्णक उल्लेख सेहो केलैन अछि, जे मिथिलासँ दूर रहितो मैथिल रचनाकारसभक लेल मञ्च तैयार करै छैथ। ऐ दृष्टिसँ हाशियाक समाजक संघर्ष नकारात्मक टकरावक रूपमे नहि, आत्मजागरण, सांस्कृतिक संगठन आ जनआधारित पुनर्निर्माणक प्रक्रिया रूपमे प्रकट होइत अछि।

ऐ अध्यायसँ निष्कर्ष रूपेँ ई सुस्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनीक

दार्शनिक प्रश्न लेखकक वैचारिक सजगता केर प्रमाण छी। एकर तर्कशील दृष्टि अन्धस्वीकारक प्रतिलोम बनि उद्घाटित होइत अछि। एकर वैचारिक प्रतिपक्ष धार्मिक मिथकीय संरचना, सांस्कृतिक वर्चस्व, साहित्यिक संकीर्णता आ सामाजिक बहिष्करण आदिकेँ एकसंग चुनौती दैत अछि। मण्डलजीक चिन्तनक केन्द्र मनुक्ख, समाज, लोकानुभव, नैतिक विवेक आ छुटल जनजीवनक पक्षधरता अछि। ऐ अर्थमे पयस्विनी मैथिली गद्यपरम्परामे विवेक, प्रतिरोध आ जन-सरोकारक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सदृश बुझि पड़ैत अछि। ❑

पयस्विनीमे संस्कृति, संस्कार, लोकजीवन आ लोक-चेतना

पयस्विनीक सांस्कृतिक पक्ष जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक गद्यक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धरातल प्रस्तुत करैत अछि। ऐ पोथीमे संस्कृति कोनो सजावटी शब्द रूपमे नहि अबैत अछि; ई जीवन, समाज आ लोक-अनुभवकेँ बुझबाक गम्भीर आधार बनि सामने अबैत अछि। मण्डलजी संस्कृतिकेँ लोकजीवनक व्यवहार, सामुदायिक स्मृति, सामाजिक सम्बन्ध आ अनुभवजन्य जीवन-दृष्टिक संग जोड़ि कऽ देखै छैथ। तँए पयस्विनीमे सांस्कृतिक विमर्श खाली परम्पराक वर्णन धरि सीमित नहि रहैत, बल्कि समाजक भीतरी संरचना, ओकर ऐतिहासिक निर्माण आ बदलैत रूपक सूक्ष्म पहिचान बनि जाइत अछि। विशेष रूपसँ 'संस्कार आ संस्कार गीत' लेखमे मण्डलजी मिथिलाक सांस्कृतिक जगतकेँ भीतरसँ परखै छैथ। ओ संस्कारक शास्त्रीय अर्थ दइ छैथ, ओकर सामाजिक प्रयोजनपर विचार करै छैथ, लोक-जीवनमे ओकर वास्तविक स्थितिपर प्रश्न उठबै छैथ आ अन्ततः एकरा लोक-संस्कृतिक जीवित रूपसँ जोड़ि दइ छैथ। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीमे संस्कृति-चिन्तन भावुक प्रशंसा नहि, विवेकपूर्ण परीक्षण आ आम-अवाम-समर्थित विचारक रूपमे विकसित होइत अछि।

मण्डलजी संस्कारक चरचा एक विचारोत्तेजक स्तरसँ आरम्भ करै छैथ। हुनका अनुसार संस्कार कल्पना सेहो अछि आ जीवन-व्यवहारक प्रक्रिया सेहो। धर्मशास्त्रीय अर्थमे ई शरीर, मन आ वृत्तिक परिष्कारसँ जुड़ल अछि, जखन कि मनोवैज्ञानिक अर्थमे ई अनुभवक अव्यक्त छाप रूपमे

देखल जाइत अछि। ऐ आधारपर ओ आश्वलायनक गृहसूत्रमे एगारह, याज्ञवल्क्यक मते बारह आ गौतमक मते अड़तालीस संस्कारक उल्लेख करै छैथ। अही संग 1901 इस्वीक जनगणना-प्रतिवेदन आ मिथिलामे सोलह संस्कारक मान्यताक चरचा करैत ओ ई तथ्य सामने अनै छैथ जे व्यावहारिक जीवनमे एतेक विस्तृत संस्कार-व्यवस्था सक्रिय रूपमे उपस्थित नहि रहल। जन्म, मुड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु सदृश मात्र किछुए संस्कार प्रचलित रहल, तहूमे सभ जातिमे एकसमान रूपसँ नहि। ऐ विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी शास्त्रीय विधान आ लोक-व्यवहारक बीचक दूरीकेँ अत्यन्त सजग दृष्टिसँ पकड़ै छैथ।

ऐ सन्दर्भमे मण्डलजीक कथा 'संस्कार' सेहो स्मरणीय अछि, किएक तँ ऐ कथामे संस्कारकेँ खाली धार्मिक अनुष्ठान, जातिगत मर्यादा, बाह्य शिष्टाचार वा परम्परागत व्यवहारक नामक रूपमे नहि, बल्कि मनुक्खक भीतरी चेतनाक परिष्कारक रूपमे प्रतिष्ठित कएल गेल अछि। कथामे ई स्थापना अछि जे प्रत्येक मनुक्खक भीतर नीक आ अधलाक बीज आरम्भहिसँ विद्यमान रहैत अछि; अन्तर केवल एतेक होइत अछि जे परिवार, समाज, अभ्यास आ आत्मचेतनाक माध्यमसँ कोन पक्षकेँ उभारल जाइत अछि। ऐ अर्थमे संस्कार जन्मक बाद आरोपित कोनो रिक्त शिक्षण-प्रक्रिया नहि, व्यक्तित्वक अन्तर्निहित सम्भावनासभक मानवीय परिमार्जनक क्रमिक प्रक्रिया अछि।

कथामे रमानन्द बाबाक माध्यमसँ ई विचार मार्मिक ढंगसँ व्यक्त भेल अछि जे संस्कार जीवनक अमूल्य चेतना छी, जे मनुक्खक विचार, व्यवहार, कर्म, दृष्टिकोण आ सम्बन्ध-बोध सभकेँ प्रभावित करैत अछि। स्वार्थक सीमांकण, एकाग्रताक विकास, संकल्प-शक्ति, सद्भावना, आत्मानुशासन आ उदार दृष्टिक प्रसार संस्कारक मूल आधार मानल गेल अछि। ऐ दृष्टिसँ 'संस्कार' कथा पयस्विनीमे प्रतिपादित संस्कार-विमर्शकेँ मनोवैज्ञानिक, नैतिक आ सामाजिक धरातलपर एक जीवित साहित्यिक उदाहरण प्रदान करैत अछि।

संगहि, खुशीलालकेँ "संस्कारहीन" कहल जेबाक प्रसंग ईहो

उद्घाटित करैत अछि जे समाजमे अनेक बेर संस्कारक भाषा नैतिक परिमार्जनक लेल नहि, जातीय अहंकार, सामाजिक वर्चस्व आ अपमानक औजारक रूपमे सेहो प्रयुक्त होइत रहल अछि। कथा ऐ प्रवृत्तिकेँ भीतरसँ प्रतिवाद करैत अछि आ ई स्थापित करैत अछि जे वास्तविक संस्कार बाह्य श्रेष्ठताबोधमे नहि, हीनभावना आ अहंभावना दुनूसँ मुक्त भऽ मानवीय संवेदना, समताबोध आ सजग जीवन-दृष्टिक विकासमे निहित अछि।

ऐ अर्थमे 'संस्कार' कथा मण्डलजीक संस्कार-चिन्तनकेँ शास्त्र, लोकजीवन, पारिवारिक दायित्व आ सामाजिक आलोचनाक समन्वित धरातलपर बुझबाक एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आधार प्रदान करैत अछि। पयस्विनीमे ई विचार वैचारिक रूपमे व्यक्त भेल अछि, जखन कि 'संस्कार' कथामे सएह भाव जीवन्त पात्र, घटना आ सामाजिक व्यवहारक माध्यमसँ मूर्त रूप ग्रहण करैत अछि। यएह कारण दुनूकेँ संग राखि देखलासँ बुझाइत अछि जे हुनकर दृष्टिमे संस्कार केवल कर्मकाण्डक अनुशासन नहि, मनुक्खक भीतरक मानवीय परिष्कार आ समाजक नैतिक पुनर्संरचनासँ जुड़ल चेतना छी।

ऐ सन्दर्भमे मण्डलजीक एक महत्त्वपूर्ण स्थापना ई अछि जे संस्कारक चयन, नामकरण आ सामाजिक स्वीकृतिक पाछाँ खाली धार्मिक भावना टा नहि, वरण संगठित सामाजिक उद्देश्य सेहो सक्रिय रहल। हुनकर मतानुसार संस्कारक शासन जीवन-पद्धतिकेँ नियंत्रित, मर्यादित आ आदर्शोन्मुखी बनेबाक प्रयत्न छल। आर्य-अनार्यक घालमेलसँ उपजल सामाजिक स्थितिमे अस्मिताकेँ सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तन संस्कार-व्यवस्थामे अन्तर्निहित रहल। ऐ प्रकारेँ मण्डलजी संस्कारकेँ निष्कपट पवित्र परम्पराक रूपमे स्वीकार नहि करै छैथ; ओ ओकर भीतर सामाजिक संगठन, मर्यादा-नियमन आ सांस्कृतिक प्रभुत्वक प्रक्रियाकेँ सेहो देखै छैथ। ऐठाम पयस्विनीक संस्कार-विमर्श श्रद्धा-प्रधान वर्णनसँ आगाँ बढ़ि कऽ आलोचनात्मक सामाजिक विवेचन बनि जाइत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सांस्कृतिक दृष्टिक केन्द्रीय गुण ई अछि जे ओ मिथिलाक संस्कृतिकेँ एकरूप, स्थिर आ निर्विवाद सत्ताक रूपमे नइ

देखै छैथ। मिथिलाक इतिहासक पृष्ठभूमिमे ओ किरात-कौल्ह, आर्यीकरण, द्विज-सत्ता, क्षत्रिय राजसत्ता आ ब्राह्मणक समाज-सत्ताक प्रसंग उठबै छैथ। प्रतिलोम विवाह, ब्राह्मणीकरण आ मूलवासीक जीवन-शैलीक घालमेलक संकेत दैत ओ मूल प्रश्न करै छैथ जे आइ जेकरा 'मैथिल संस्कृति' कहल जा रहल अछि, से वस्तुतः केकर संस्कृति अछि? हुनका अनुसार बहुसंख्य मूलवासीपर नव-संस्कृतिक आरोपण अवश्य भेल, मुदा मूलवासीक जीवन-रीति पूर्णतः समाप्त नहि भेल। ओ "दूबि बनि माटि पकड़ने" रहल, आ तेकरा लोकसंस्कृति कहल जा सकैत अछि। ऐ विश्लेषणसँ बुझाइत अछि जे मण्डलजी मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानकेँ इतिहास, सत्ता आ लोकजीवनक त्रिकोणमे रखि कऽ देखै छैथ।

ऐ सांस्कृतिक निर्माणक सन्दर्भमे मण्डलजीक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म अछि। हुनका अनुसार जे संस्कृति बाहरसँ थोपल जाइत अछि, से लोकजीवनमे ज्यों-क-त्यों नहि रहैत अछि; लोक ओकरा अपन परिस्थिति, अनुभव आ भाव-बोधक अनुसार अपनाबैत आ बदलैत रहैत अछि। ऐ कारण गीत, बोली, लोकाचार, पाबैन आ सामुदायिक संवेदनाक माध्यमसँ लोकसंस्कृति निरन्तर अपन उपस्थिति बनौने रहैत अछि। मण्डलजी अही जीवित लोक-उपस्थितिकेँ संस्कृतिक वास्तविक आधार मानै छैथ। तँए हुनका लेल मिथिलाक संस्कृति केवल शास्त्र, पुराण, ग्रन्थ वा अभिजन-व्यवहारमे सीमित नहि अछि; ओ माटि, गाम, लोककण्ठ, पाबैन, गीत आ सामूहिक जीवन-व्यवहारमे जीवित रहैत अछि।

संस्कारक व्यावहारिक पक्षपर सेहो मण्डलजीक दृष्टि विशेष उल्लेखनीय अछि। मिथिलामे सोलह संस्कारक विधान मान्य अछि, मुदा व्यवहारमे ई सर्वत्र एक समान रूपमे सक्रिय नहि अछि। उपनयन सभ जातिक सामान्य संस्कार नहि। मुड़नक रूप अनेक अछि। कियो देवस्थान जा मुड़न करबैत अछि, कियो गंगाकात, कियो गामेमे कबुला-पाती दऽ; केतौ गीत-नाद आ पूजा-पाठक संग, तँ केतौ बिना एहेन अनुष्ठानक। विवाह-व्यवहारमे सेहो जाति आ समुदाय अनुसार भिन्नता अछि, आ मृत्यु-संस्कार सेहो एकरूप नहि। ऐ निरीक्षणक महत्त्व ऐ बातमे अछि जे मण्डलजी

शास्त्रीय विधान आ सामाजिक व्यवहारक बीचक दूरीकेँ स्पष्ट करै छैथ। लोकजीवन लिखित व्यवस्थाक आधारपर यांत्रिक रूपमे संचालित नहि होइत; समाज अपन परिस्थिति, जातिगत स्थिति, आर्थिक अवस्था, स्थानीय परम्परा आ व्यावहारिक विवेकक अनुसार संस्कारक रूप बदलैत रहैत अछि।

अही विश्लेषणक कारण पयस्विनीमे संस्कारक विमर्श सामाजिक यथार्थक विवेचन बनि जाइत अछि। मण्डलजी पुछै छैथ जे जँ उपनयन बहुसंख्य जातिक बीच नहि अछि तँ एकरा समग्र मिथिलाक संस्कार केना मानल जाए? जँ मुड़नक रूप अनेक अछि तँ ओकर सर्वमान्य रूप केना मानल जाए? ऐ प्रकारक प्रश्न लोकजीवनक वास्तविकताकेँ उद्घाटित करैत अछि। मण्डलजी एतए संस्कारकेँ आदर्शमूर्ति नहि बनबै छैथ; ओ ओकर बहुविध, असमान, परिवर्तनशील आ समुदायानुकूल रूपसभकेँ सामने अनै छैथ। एहेन दृष्टि पयस्विनीक सांस्कृतिक गम्भीरताकेँ विशेष स्तर प्रदान करैत अछि।

लोकजीवनक प्रश्न सभसँ सघन रूपमे 'संस्कार गीत'क चर्चामे विकसित होइत अछि। मण्डलजीक अनुसार संस्कार गीत विभिन्न संस्कारक प्रसंगमे गौल जाइबला लोक-प्रचलित गीत छी। लोकगीतक आत्मा संस्कार गीतमे बसैत अछि। जँ संस्कार गीतकेँ लोकगीतक फुलबाड़ीसँ हटा देल जाए तँ लोकजीवनक सांस्कृतिक रंग फीका पड़ि जाएत। ई स्थापना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ अइसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे गीत मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे मनोरंजनक वस्तु मात्र नहि छी, बल्कि ओ संस्कार-चेतनाक अभिन्न अंग छी। संस्कारक अवसरपर सामूहिक भाव-संवेदनाकेँ स्वर भेटैत अछि, आ गीत ऐ सामूहिकताकेँ लय, भाषा, स्मृति आ राग प्रदान करैत अछि।

मृत्यु-संस्कार छोड़ि अन्य अधिकांश संस्कार आनन्दोत्सवक माहौलमे मनौल जाइत अछि। ऐ अवसरपर नारी-कण्ठसँ निकलैत स्वरलहरी देहमे थिरकन, हृदयमे झंकार आ मस्तिष्कमे चुलबुली उत्पन्न करैत अछि। मण्डलजी ऐ दृश्यकेँ केवल वर्णनात्मक रूपमे नहि, सांस्कृतिक महत्त्वक

रूपमे सामने आनै छैथ। मिथिलाक नर-नारी गीत गौनाइकेँ सहजात गुणक रूपमे जीवित रखै छैथ। मुड़न, उपनयन, विवाह आ धार्मिक अवसरसभपर सामूहिक गायनक परम्परा लोकजीवनक एकता, सहभागिता आ उत्सवधर्मिताक परिचायक अछि। ऐठाम संस्कृति पुस्तक वा लिखित पाठ टा मे सुरक्षित नहि रहि; ओ सामूहिक गायनक माध्यमसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होइत अछि। समाज ऐ सामूहिक कण्ठक माध्यमसँ अपन भाव, विश्वास, आनन्द आ स्मृतिकेँ साझा रूपमे अनुभव करैत अछि। तँए गीत संस्कार आ लोक-चेतनाक अत्यन्त सहज आ व्यापक माध्यम बनि जाइत अछि।

मण्डलजी लोकगीतक प्रकृतिपर विचार करैत स्पष्ट कहै छैथ जे संस्कार गीत लोकगीतक अंग छी आ लोककण्ठे ओकर वास्तविक निवास-स्थान छी। एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ धरि जाइत-जाइत गीतक स्वरूप, भास, पंक्ति-विन्यास आ भनिता बदलैत रहैत अछि। तँए संस्कार गीतमे एकरूपताक अभाव स्वाभाविक अछि। गीत गौनिहारि केतेको बेर कोनो रचनामे अपन फुरने दोसर कविक नाम जोड़ि दइ छैथ। विद्यापति, उमापति, चंदा झा आ मनबोधक नाम परस्पर अदैल-बदैल जाइत अछि, आ तुलसी, सूर, मीरा सदृश बाहरी कवि सेहो मिथिला-लोककण्ठमे आबि अपन बनि जाइ छैथ। ऐ विश्लेषणसँ मण्डलजी लोकपरम्पराक प्रवाहशीलता, सामूहिकता आ पुनर्सृजनशील स्वरूपकेँ प्रभावकारी ढंगसँ उद्घाटित करै छैथ। लोकगीतक संसारमे रचनाकारक स्थिर अधिकारसँ बेसी लोकक सामूहिक स्वीकृति आ कण्ठगत परम्पराक महत्त्व रहैत अछि।

मण्डलजी संस्कार गीतमे स्त्रीक भूमिकाकेँ केवल सहभागी रूपमे नहि, सांस्कृतिक संवाहिकाक रूपमे देखै छैथ। सोहर, विवाह-गीत, गोसाउनि गीत, मुड़न-गीत आ आन संस्कार-गीतक माध्यमसँ स्त्री केवल गीत गौनिहारि नहि रहैत; ओ पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्मृति, भाषा, रीति, लोकविश्वास आ भाव-संस्कारक संरक्षिका बनि उभरैत अछि। ऐ रूपमे ओकर सांस्कृतिक श्रम मिथिलाक मौखिक ज्ञान-परम्पराकेँ जीवित रखैत अछि। हुनक स्पष्ट कथन अछि जे संस्कार गीत मैथिल-महिलाक परिष्कृत

सांस्कृतिक चेतनाक परिचायक अछि। मिथिलाक सामाजिक संरचनामे जखन नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल, तखन संस्कार गीत सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक व्यवहार, भावात्मक अभिव्यक्ति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी परम्परा-संक्रमणक अनौपचारिक पाठशाला बनल। मण्डलजी ऐ बिन्दुपर ईहो स्पष्ट करै छैथ जे ई निषेध केवल नारीपर सीमित नहि छल; माटि-परक लोकक लेल सेहो ज्ञानक औपचारिक स्रोत सहज उपलब्ध नहि छल। एहेन स्थितिमे संस्कार गीत संस्कृति, साहित्य आ समाजक अन्तरावलम्बनकेँ जीवित रखनिहार लोकमाध्यम बनल।

ऐ अवलोकनमे सामाजिक महत्त्व व्यापक अछि। समाजक बहुत पैघ हिस्सा जखन लिखित ज्ञान-व्यवस्थासँ बाहर राखल गेल, तखन मौखिक परम्परा अस्मिता, स्मृति आ सांस्कृतिक निरन्तरताक आधार बनल। गीत एतए इतिहासक विकल्प, शिक्षाक माध्यम, समाजीकरणक प्रक्रिया, स्मृतिक भण्डार आ सामूहिक संवेदनाक पाठशाला रूपमे उपस्थित होइत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीमे स्त्रीक सांस्कृतिक श्रम आ लोकक मौखिक ज्ञान-परम्पराक मूल्यांकन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनि जाइत अछि। पयस्विनीमे लोक-चेतनाक ई अर्थ अत्यन्त जीवित, सामाजिक आ जनपक्षीय रूपमे प्रकट भेल अछि।

मण्डलजीक संस्कृति-विमर्श धर्मभावनाक स्तरपर अत्यन्त सूक्ष्म, ऐतिहासिक आ विश्लेषणात्मक अछि। हुनका अनुसार मिथिलामे संस्कार गीतक आरम्भ प्रायः गोसाउनिक गीतसँ होइत अछि। ई तथ्य साधारण लोक-रीति धरि सीमित नहि, बल्कि मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक संरचनाक गहींर संकेत छी। संस्कारक अवसरपर भगवानक गीत सेहो गौल जाइत अछि, मुदा भगवती अथवा गोसाउनिक गीतक प्रधानता विशेष रूपेँ देखाइ पड़ैत अछि। देवी-केन्द्रित लोकगीत मिथिलाक स्त्री-अनुभव, भय-भरोस, पारिवारिक मंगल, लोकविश्वास आ सामूहिक रक्षा-बोधसँ गहींर रूपेँ जुड़ल अछि। अइमे धर्म केवल पूजा-विधान नहि रहैत, बल्कि परिवार, समाज आ लोक-स्मृतिकेँ जोड़निहार भाव-व्यवस्था बनि जाइत अछि। मण्डलजी ऐ बिन्दुपर प्रश्न उठबै छैथ जे संस्कार-जकाँ सामाजिक-धार्मिक

अवसरपर भगवती-केन्द्रित गीत गायनक विशेष महत्त्व किएक अछि? ऐ प्रश्नक माध्यमसँ ओ मिथिलाक धर्मपरम्पराकेँ केवल वैदिक वा ब्राह्मणवादी व्यवस्था धरि सीमित नहि रखै छैथ, बल्कि ओकरा तंत्रसाधना, शाक्त चेतना, शैव परम्परा, पंचदेवोपासना आ लोकधर्मक समन्वित परम्परासँ जोड़ि कऽ देखै छैथ।

ऐ दृष्टिसँ संस्कार गीत मात्र धार्मिक भावनाकेँ व्यक्त धरि सीमित गायन नहि रहि जाइत अछि। ओ मिथिलाक दीर्घ सांस्कृतिक-संश्लेषण, लोकविश्वास, स्त्री-केन्द्रित देवी-चेतना आ सामुदायिक स्मृतिक जीवित साक्ष्य बनि उठैत अछि। गोसाउनिक गीतमे जे श्रद्धा, भय, भरोस, समर्पण आ लोक-आस्था व्यक्त होइत अछि, से मिथिलाक सांस्कृतिक मानसकेँ भीतरसँ बुझबाक आधार दैत अछि। ऐठाम धर्म केवल शास्त्रीय विधान नहि, लोकानुभवमे रचल-बसल सामुदायिक विश्वासक रूपमे उपस्थित होइत अछि। मण्डलजी अही बिन्दुकेँ पकैड़ मिथिलाक धार्मिक चेतनाक भीतर लोकसंस्कृतिक सक्रिय उपस्थिति देखबैक कोशिश केलैन अछि।

लोकजीवन आ भाषा-संरचनाक बीचक सम्बन्ध सेहो मण्डलजीक चर्चामे महत्त्वपूर्ण रूपेँ प्रकट होइत अछि। हुनका अनुसार मिथिलामे गीतक भाषा सामान्य बोलीचालीसँ भिन्न आ विशिष्ट होइत अछि, आ संस्कार-गीत ऐ भाषिक समृद्धिक महत्त्वपूर्ण भण्डार छी। लोकपरम्परामे प्रत्येक गीतक अपन प्रसंग, भावभूमि आ उपयोगिता होइत अछि। यएह कारण कुमार-गीत आ कुमारि-गीत एक नहि अछि, सोहर आ खेलौना सेहो परस्पर भिन्न अछि। मुदा जखन लोकपरम्पराक सूक्ष्म ज्ञान क्षीण भऽ जाइत अछि, तखन एक्के गीतक प्रयोग भिन्न-भिन्न अवसरपर होमए लगैत अछि। ऐ टिप्पणीसभसँ स्पष्ट होइत अछि जे लोकजीवनक भाषा अत्यन्त प्रसंगानुकूल, स्थितिसापेक्ष आ सांस्कृतिक संकेतसँ भरल रहैत अछि। लोक-चेतना केवल विचारक स्तरपर नहि, भाषिक व्यवहार, सामूहिक गायन आ प्रसंगानुकूल अभिव्यक्तिक स्तरपर सेहो निर्मित होइत अछि। ऐ कारण हुनकर संस्कार-चिन्तन भाषिक आ सांस्कृतिक अध्ययनक लेल एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करैत अछि।

एतए ई स्मरणीय अछि जे मण्डलजीक समग्र रचनाशीलता ग्राम्य जीवनसँ व्यावहारिक रूपमे अत्यन्त गहराइसँ जुड़ल अछि। यएह कारण आलोचकसभ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ग्राम्य जीवनक अनुभवी चित्रकार, जीवित लोक-समाजक गहींर रेखांकनकर्ता आ समानान्तर लोक-संसारक सर्जक कहने छैथ। ई मूल्यांकन पयस्विनीक सांस्कृतिक लेखसभपर सेहो लागू होइत अछि। हुनकर गद्य-लेखसभमे लोकानुभवक वैचारिक आ सांस्कृतिक विवेचन उपलब्ध होइत अछि। मिथिलाक गाम, कृषि-संस्कृति, आत्मनिर्भर जीवन, लोकधर्मी व्यवहार आ वंचित समाजक भीतरक संरचना आदि हुनकर लेखनक स्थायी आधार रहल अछि। ओइ कारण पयस्विनीमे संस्कृति, लोकजीवन आ लोक-चेतनाक चरचा बाहरी अवलोकनपर आधारित नहि, भीतरसँ अर्जित अनुभवपर आधारित प्रतीत होइत अछि।

मण्डलजीक संस्कृति-बोधक उल्लेखनीय पक्ष ई अछि जे ओ लोकजीवनक गौरव देखै छैथ, मुदा ओकर भीतरक विषमता आ जटिलताकेँ अनदेखी नहि करै छैथ। उपनयनक सीमित पहुँच, मुड़नक असमान रूप, विवाह-व्यवस्थाक विविधता, मृत्यु-संस्कारपर प्रश्न, गीतमे भनिताक बेलगाम प्रयोग, भिन्न-भिन्न प्रसंगक गीतक उलट-पुलट व्यवहार आ सांस्कृतिक आरोपणक इतिहास, ई सभ उदाहरण ऐ बातक प्रमाण अछि। लोकजीवन हुनका लेल केवल पवित्र अवशेष नहि, एक जटिल सामाजिक जीवित संरचना छी। तइ कारण हुनकर लोक-चेतना रोमानी लोकवाद नहि बनि, विवेकपूर्ण लोकपक्ष बनैत अछि। ओ लोककेँ केवल भावुक गौरवक विषय नहि बनबै छैथ, बल्कि ओकर अनुभव, संघर्ष, स्मृति, भूल, परिवर्तन आ रचनात्मक शक्तिकेँ एकसंग देखै छैथ।

पयस्विनीमे संस्कृति, संस्कार, लोकजीवन आ लोक-चेतनाक पूरा विमर्श अन्ततः जनपक्षीय धरातलपर केन्द्रित होइत अछि। जँ संस्कृति केवल प्रभुत्वशाली वर्गक विधान, भाषा आ व्यवहारक नाम रहि जाए, तँ समाजक पैघ हिस्सा ओइसँ बाहर रहि जाएत। मण्डलजी ऐ कारण लोकजीवनक दिशामे बढ़ै छैथ। संस्कार गीतमे नारी-कण्ठ, लोकभाषा, मौखिक परम्परा, सामूहिक गायन, जातिगत जीवन-रूप, सांस्कृतिक समावेशन आ

इतिहासक अवशेष इत्यादिकेँ ओ सांस्कृतिक सत्यक रूपमे दर्ज करै छैथ। ऐ प्रकारेँ लोक-चेतना एतए सांस्कृतिक लोकतंत्रक आधार बनि उठैत अछि। संस्कृति जेतेक पुस्तक-पोथीमे अछि, तेतेक गामक व्यवहारमे सेहो अछि। संस्कार जेतेक शास्त्रमे अछि, तेतेक लोकजीवनक रूपान्तरित क्रियामे सेहो अछि। गीत जेतेक शब्दमे अछि, तेतेक सामूहिक अनुभवमे सेहो अछि।

ऐ अध्यायक निष्कर्ष रूपमे ई बुझाइत अछि जे पयस्विनीमे संस्कृति, संस्कार, लोकजीवन आ लोक-चेतनाक विमर्श सघन, बहुस्तरीय आ गहींर मानवीय धरातलपर विकसित भेल अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजी संस्कारकेँ समाजक संरचनात्मक प्रक्रियाक रूपमे देखै छैथ, संस्कृतिकेँ ऐतिहासिक निर्माणक रूपमे परखै छैथ, लोकगीतकेँ सामूहिक रचना-परम्पराक रूपमे बुझै छैथ, स्त्रीकेँ सांस्कृतिक संवाहिकाक रूपमे प्रतिष्ठित करै छैथ आ लोक-चेतनाकेँ अनौपचारिक शिक्षाक जीवित स्रोत मानै छैथ। तैसंग मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानपर प्रश्न उठबैत ओ एक विवेकपूर्ण लोकपक्ष विकसित करै छैथ। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी मैथिली गद्यपरम्परामे संस्कृति-अध्ययनक एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लोकधर्मी पाठ मानल जा सकैत अछि। ❑

पयस्विनीमे हाशियाक समाज, वर्चस्व-विमर्श आ सामाजिक प्रतिरोध

पयस्विनीक सामाजिक चिन्तनक केन्द्रमे मनुक्ख अछि, मुदा ई मनुक्ख कोनो अमूर्त दार्शनिक इकाइ नहि अछि। ई ओ मनुक्ख अछि जे समाजक किनारपर ठेल देल गेल अछि, जेकर श्रमसँ समाजक आधार निर्मित होइत अछि, मुदा जेकर आवाज साहित्य, संस्कृति आ सार्वजनिक विमर्शमे समान मान्यता नहि पबैत। मण्डलजीक दृष्टि अही उपेक्षित, दबल आ वंचित मनुक्ख दिस निरन्तर मुड़ैत अछि। ओ समाजकेँ ऊपरसँ नहि, बल्कि ओइ जगहसँ देखै छैथ जेतए पीड़ा, परिश्रम, असमानता आ मौन संघर्ष एकसंग सक्रिय रहैत अछि।

'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' शीर्षक लेख पयस्विनीक एहेन केन्द्रीय पाठ छी, जइसँ मण्डलजीक सामाजिक दृष्टि, सांस्कृतिक विवेक आ प्रतिरोधधर्मी चेतना उद्घाटित होइत अछि। ऐ लेखमे उपेक्षित समाजक प्रश्नकेँ ओ सीमित शिकायत वा क्षणिक असन्तोषक रूपमे नइ देखै छैथ। ओ ओकरा इतिहास, भाषा, संस्कृति, साहित्य आ सत्ता-संरचनासँ जुड़ल गम्भीर प्रश्नक रूपमे सामने अनै छैथ। हुनका लेल हाशियाक समाजक विषय केवल सहानुभूतिक विषय नहि, बल्कि समाजक भीतरी गठन, प्रतिनिधित्वक असमानता आ सांस्कृतिक वर्चस्वक समीक्षा करबाक विषय अछि। फलस्वरूप पयस्विनीमे हाशियाक समाजक विमर्श करुणा भरल भावोच्छवास नहि रहि, सजग, विचारसंपन्न आ विश्लेषणपरक सामाजिक चिन्तनक रूप धारण करैत अछि।

मण्डलजी उपेक्षित समाजक प्रश्नकेँ केवल वर्तमान सामाजिक असमानतासँ नहि जोड़ै छैथ, बल्कि ओकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सेहो देखबै छैथ। मूल पाठमे मण्डलजी स्पष्ट करै छैथ जे उपेक्षित समाजपर वर्चस्ववादी संस्कृति युग-युगसँ जोर-जबरदस्ती करैत आबि रहल अछि, आ एगारहमी-बारहमी शताब्दीमे सामन्तवाद तथा ब्राह्मणवादक उदयक संग ई दमनात्मक संरचना आरो सुदृढ़ भेल। हुनका अनुसार हाशियाक समाजपर वर्चस्ववादी संस्कृति युग-युगसँ दबाव बनबैत आबि रहल अछि। शोषणक रूप समय-समयपर बदलैत रहल, मुदा मूल संरचना कायम रहल। ओ सामन्तवाद आ ब्राह्मणवादक उदय, सामाजिक वर्चस्वक सुदृढ़ीकरण आ शक्ति-संरचनाक ऐतिहासिक विस्तार दिस संकेत करैत ई स्पष्ट करै छैथ जे हाशियाक समाजक प्रश्न दीर्घ सामाजिक इतिहासक उपज छी। तँए पयस्विनीमे सामाजिक प्रतिरोध भावनात्मक प्रतिक्रिया रूपमे नहि, अपितु इतिहास-बोधपर आधारित वैचारिक प्रतिपक्षक रूपमे उभरैत अछि।

मण्डलजी हाशियाक समाजक चरचा आरम्भमे एक व्यापक ऐतिहासिक संकेतसँ करै छैथ। हुनकर मान्यता अछि जे उपेक्षित समाजपर वर्चस्ववादी संस्कृति युग-युगसँ जोर-जबरदस्ती करैत आबि रहल अछि। ऐ कथनमे इतिहासक दीर्घ अनुभव समाहित अछि। शक्ति-संरचना सदा केवल राजनीतिक नियन्त्रण वा प्रत्यक्ष शासन-सत्ताक रूपमे सामने नहि अबैत; ओ संस्कृति, भाषा, मान्यता आ सामाजिक व्यवहारक माध्यमसँ सेहो सक्रिय रहैत अछि। संस्कृति सेहो प्रभुत्वक औजार बनैत अछि। ऐ प्रभुत्वक प्रक्रिया किछु संकेतसँ बुझल जा सकैत अछि। जेकर भाषा मानक मानल जाए, जेकर जीवन-पद्धति सभ्यता घोषित कएल जाए आ जेकर आचार-विचार प्रतिष्ठाक मापदण्ड बनि जाए, ओ समूह समाजक केन्द्रपर अधिकार जमाबए लगैत अछि। जखन ओकर स्मृति इतिहास आ ओकर साहित्य सभक प्रतिनिधि साहित्य बनि प्रतिष्ठित होइत अछि, तखन बाकी लोकसमूह क्रमशः बाहर धकेलल जाइ छैथ। मण्डलजीक ‘हाशिया’ शब्द अही बहिष्कृत स्थानक संकेत करैत अछि।

मण्डलजीक दृष्टिमे हाशियाक समाजक अर्थ केवल आर्थिक निर्धनता

नहि अछि। ई ओ समाज अछि जे प्रतिनिधित्वसँ वंचित रहल; जेकर भाषाकेँ परिनिष्ठित भाषा नहि मानल गेल, जेकर संस्कृतिकेँ लोकक नामपर सीमित कऽ देल गेल, आ जेकर जीवनानुभव साहित्यक केन्द्रमे नहि आएल। ओकर सामाजिक प्रश्न गौण बुझल गेल आ बेर-बेर ओकरा यएह कहि कऽ चुप करौल गेल जे ओ 'मुख्यधारा'क बाहर अछि। ऐ प्रकारेँ हाशियाक समाज एक संयुक्त सामाजिक, भाषिक, सांस्कृतिक आ मानसिक स्थिति बनि जाइत अछि। मण्डलजी ऐ बहुस्तरीय हाशियाक अनुभवकेँ गम्भीर सामाजिक यथार्थक रूपमे चिन्हित करै छैथ। अही कारण हुनकर प्रतिरोधक भाषा केवल भावुक प्रतिक्रिया नहि, बल्कि सामाजिक न्याय, समान भागीदारी आ प्रतिनिधित्वक सुस्पष्ट आग्रहसँ संचालित अछि।

ऐ लेखमे एक बुनियादी स्थापना भाषा आ साहित्यक सम्बन्धक माध्यमसँ उद्घाटित होइत अछि। मण्डलजी ऐ लेखमे एक बुनियादी बात स्पष्ट करै छैथ जे साहित्य समाजक दर्पण अछि आ भाषा एक-दोसराक बीच संवाद स्थापित करैक माध्यम। ऐ वाक्यक सामाजिक आशय अत्यन्त गहींर अछि। जँ साहित्य दर्पण अछि, तँ प्रश्न उठत जे ओ कोन समाजक दर्पण अछि? जँ भाषा संवादक माध्यम अछि, तँ ईहो पुछए पड़त जे ई संवाद कोन-कोन लोकसमूहक बीच स्थापित भऽ रहल अछि आ केकर आवाज ऐ संवादमे अनुपस्थित अछि। मण्डलजीक चिन्ता एतएसँ प्रारम्भ होइत अछि। हुनका लग समस्या ई अछि जे भाषा आ साहित्य ओइ समाजक हाथमे केन्द्रित रहल जे बहुसंख्य लोकजीवनसँ दूर छल। फलतः साहित्यमे समाजक पैघ हिस्सा अदृश्य रहि गेल। ऐ अदृश्यताक विरोधसँ पयस्विनीक सामाजिक प्रतिपक्ष जन्म लैत अछि। एतए एकटा बात आरो रेखांकित करब आवश्यक अछि जे हुनकर लेल प्रतिनिधित्वक प्रश्न केवल विषय-चयनक प्रश्न नहि अछि। ई ज्ञान, भाषा आ साहित्यक संरचनासँ जुड़ल प्रश्न अछि। जँ समाजक बहुसंख्य लोकक अनुभव साहित्यक भीतर स्थान नहि पबैत, तँ समस्या केवल एतेक नहि रहैत जे किछु जीवनानुभव छुटि गेल; समस्या ईहो बनैत अछि जे साहित्यक नामपर समाजक एकांगी रूप प्रतिष्ठित भऽ जाइत अछि। तँए मण्डलजीक चिन्ता केवल हाशियाक लोककेँ देखाब

भरिसँ सम्बन्धित नहि, बल्कि साहित्यक दर्पणकेँ अधिक न्यायपूर्ण, अधिक समावेशी आ अधिक जनपक्षीय बनेबासँ सम्बन्धित अछि।

मण्डलजी भाषाक विकासक इतिहासक संक्षिप्त रूपरेखा दैत एक गूढ़ सामाजिक सत्य उद्घाटित करै छैथ। हुनका अनुसार जनभाषाक वैदिक रूपसँ लौकिक संस्कृतक निर्माण भेल। लौकिक संस्कृत अल्पसंख्यक लोकक बीच प्रतिष्ठित भेल। बहुसंख्य जन-मानस ओइसँ दूर रहल। तेकरा बाद पालीक उदय भेल। पाली जखन जनमानससँ दूर भेल तखन अपभ्रंश सामने आएल। ऐ ऐतिहासिक संकेतक माध्यमसँ लेखक ई प्रतिपादित करै छैथ जे भाषा जखन जीवनसँ कटैत अछि, तखन जीवन अपन नव भाषा गढ़ैत अछि आ भाषाक इतिहास अपने-आपमे जन-प्रतिरोधक इतिहास बनि जाइत अछि। ऐ बिन्दुपर हुनकर दृष्टि केवल भाषावैज्ञानिक नहि अछि, बल्कि ओ भाषाकेँ सामाजिक शक्ति-सम्बन्धक अभिव्यक्ति मानै छैथ। जे भाषा लोकजीवनक संग नहि चलैत, ओकरा अन्ततः जन-समुदाय चुनौती दैत अछि। मण्डलजी भाषाक इतिहासकेँ केवल व्याकरणिक परिवर्तनक कथा नइ मानै छैथ। हुनका अनुसार जनभाषा वैदिक रूपमे आएल, वएह परिमार्जित होइत लौकिक संस्कृत बनल; मुदा जखन लौकिक संस्कृत बहुसंख्य जन-मानससँ दूर गेल, तखन जन-समुदायक भीतर प्रतिरोध जन्मल आ पाली स्थापित भेल। पाली भाषा जखन जनजीवनसँ कटल, तखन अपभ्रंशक उदय भेल। ऐ उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे भाषापर अधिकार अंततः जीवनक होइत अछि, सत्ता-केन्द्रक नहि। यएह सोच हाशियाक समाजक भाषिक आत्मनिर्भरताक दिशामे महत्त्वपूर्ण संकेत दैत अछि।

मण्डलजी ऐ भाषिक अनुभवकेँ मैथिल समाजक वर्तमान स्थितिसँ जोड़ि कऽ देखै छैथ। ओ स्पष्ट करै छैथ जे भाषा-संस्कृतिक चरचा भरिसँ सामाजिक दूरी समाप्त नहि होइत। हुनकर मान्यता छैन जे मैथिली भाषा आ संस्कृतिक चर्चा बहुत होइत अछि, मुदा वर्चस्ववादी आ हाशियापर ठाढ़ समाजक बीच “हजारो कोसक दूरी” अखनो बनल अछि। ई दूरी बोली, उच्चारण, शैली वा क्षेत्रीय पहिचानक दूरी मात्र नहि, बल्कि सामाजिक जीवनस्थितिक दूरी अछि। मूल लेखमे ई बात अत्यन्त मार्मिक रूपेँ व्यक्त

भेल अछि- “वर्चस्ववादी आ हाशियापर ठाढ़ समाजक बीच ‘हजारो कोसक दूरी’ अछि; भरल हाथक जीवन आ खगल हाथक जीवन एकधारामे नहि चलि सकैए।” ऐ कथनक आशय ई अछि जे भाषा समान होइतो सामाजिक अनुभव समान नहि होइत। भरल हाथक जीवन संसाधन, प्रतिष्ठा, अवसर आ सांस्कृतिक आत्मविश्वासक जीवन अछि; खगल हाथक जीवन अभाव, श्रम, असुरक्षा, अपमान आ प्रतिनिधित्व-वंचनाक जीवन अछि। साहित्य जँ ऐ अन्तरकेँ नहि चिन्हत, तँ ओ समाजक सम्पूर्ण यथार्थकेँ व्यक्त नहि कऽ सकत। एक्के भाषामे लिखल साहित्य सेहो सभ वर्गक अनुभवकेँ अपने-आप बराबरीसँ प्रतिनिधित्व नहि दऽ दैत। अहीठाम मण्डलजीक हाशिया-विमर्श अधिक तीक्ष्ण बनैत अछि, किएक तँ ओ सामाजिक विषमताकेँ सांस्कृतिक वा भाषिक आडम्बरक भीतर ओझराए देबाक पक्षमे नइ छैथ।

मण्डलजीक वर्चस्व-विमर्शक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे ओ मैथिल समाजक भीतरक भाषिक-सांस्कृतिक श्रेष्ठताबोधकेँ सेहो चिन्हित करै छैथ । मूल लेखमे मण्डलजी स्पष्ट करै छैथ जे पूबरिया, पछबरिया, दछिनबरिया, बिचला हिस्सा, आ मधुबनी-दरभंगा केन्द्रित परिनिष्ठितताक दावा बहुत अंशमे भ्रमित विचार छी। हुनका अनुसार वास्तविकता ई अछि जे एक गाम-समाजमे जँ दस-बीस, पच्चीस-पचास जातिक लोक रहैत अछि, तँ सभक बोली-वाणी, सामाजिक जीवन आ अनुभवमे अन्तर स्वाभाविक रूपमे विद्यमान रहैत। तखन एक क्षेत्रक वा एक वर्गक भाषा-रूपकेँ श्रेष्ठ आ बाँकी सभकेँ गौण ठहराएब, ई वर्चस्ववादी मानसिकताक परिचायक बनि जाइत अछि। पूबरिया, पछबरिया, दछिनबरिया, बीचला हिस्सा, परिनिष्ठित भाषा, मधुबनी-दरभंगा केन्द्रित अभिजन-बोध जकाँ धारणासभक आलोचना करैत जगदीश प्रसाद मण्डल स्पष्ट करै छैथ जे ई सभ भेद बहुधा सामाजिक भ्रम आ वर्चस्ववादी मानसिकताक परिणाम छी। हुनका अनुसार एक गाम-समाजक भीतर दस-पचास जाति आ वर्गक लोकक बोली-वाणी, अनुभव आ जीवन-रीति भिन्न होइत अछि; अतः कोनो एक रूपकेँ ‘परिनिष्ठित’ आ बाँकी सभकेँ गौण कहब अन्यायपूर्ण अछि। ऐ विश्लेषणसँ हाशियाक समाजक प्रश्न केवल बाहरक दमनक प्रश्न नहि

रहिकऽ ओ मैथिल समाजक आन्तरिक संरचनात्मक असमानताक प्रश्न बनि जाइत अछि।

मूल लेखमे मण्डलजी सामाजिक न्यायकेँ मात्र सैद्धान्तिक घोषणाक रूपमे नहि, बल्कि व्यावहारिक प्रश्नक रूपमे सामने आनै छैथ। पंचायत आरक्षणक उदाहरण दैत देखबै छैथ जे महिलाकेँ पचास प्रतिशत आरक्षण देल गेल, मुदा व्यवहारमे शक्ति-सन्तुलन बहुधा ओहने बनल रहल; ऐ कारण सामाजिक परिवर्तनक प्रश्न केवल कानूनसँ नहि जुड़ल अछि, सामाजिक संरचनाक संशोधनसँ सेहो जुड़ल अछि। आरक्षण, अन्तर्जातीय विवाह, पंचायत-व्यवस्था, सार्वजनिक संस्थासभक जड़ता, नारी-शिक्षा आ सामाजिक दिशाहीनताक प्रसंगक माध्यमसँ ओ देखबै छैथ जे हाशियाक समाजक उन्नतिक बिना संरचनात्मक परिवर्तन सम्भव नहि। विशेष रूपेँ नारीक शिक्षापर हुनक बल ऐ अर्थमे उल्लेखनीय अछि जे समाजक आधा हिस्साकेँ शिक्षासँ वंचित राखि सामाजिक नवजागरण सम्भव नहि। ऐ प्रकारेँ पयस्विनीमे सामाजिक प्रतिरोध मात्र आलोचना नहि छी, बल्कि लोकतंत्रीकरणक व्यावहारिक कार्यक्रमक मांग सेहो छी।

ऐ सामाजिक दूरीक एक रूप मण्डलजी मैथिल समाजक भीतर भाषिक आ सांस्कृतिक श्रेष्ठताबोधक रूपमे सेहो देखै छैथ। पूबरिया, पछबरिया, दछिनबरिया आ बीचला हिस्सा जकाँ भौगोलिक संकेत, परिनिष्ठित भाषा, मधुबनी-दरभंगा केन्द्रित अभिजन बोध आ जाति-विशेषक बोली-वाणीपर हुनकर टिप्पणी ऐ समस्याकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। हुनकर मत छैन जे एक गामक भीतर जँ अनेक जातिक लोक रहैत अछि, तँ सभक सामाजिक जीवन, भाषिक प्रयोग, अनुभव आ संस्कारमे अन्तर अवश्य रहत। तखन एकटा भाषा-रूपकेँ सर्वश्रेष्ठ आ दोसर रूपसभकेँ गौण मानब भ्रमपूर्ण अछि। ऐ प्रकारेँ मण्डलजी मैथिल समाजक भीतरक भाषिक लोकतंत्रीकरणक मांग करै छैथ। आ तँए हाशियाक समाजक संघर्ष भाषा-अधिकारक संघर्ष सेहो बनि जाइत अछि। ऐ प्रसंगमे हुनकर संकेत केवल एतेक नहि अछि जे मैथिली क्षेत्रमे विभिन्न बोली-रूप विद्यमान अछि। हुनकर मूल आग्रह ई अछि जे भाषिक विविधताकेँ हीन-श्रेष्ठक कसौटीपर

नहि, जीवन-सत्यक कसौटीपर देखल जाए। जे बोली जइ समाजक श्रम, दु:ख, व्यवहार, उत्सव आ अनुभवकेँ वहन करैत अछि, ओकर साहित्यिक महत्त्व स्वतः सिद्ध अछि। अही अर्थमे मण्डलजी मैथिली आलोचना लेल लोकतांत्रिक मानदण्ड प्रस्तावित करैत देखि पड़ैत अछि; एतए परिनिष्ठितताक एकछत्र अधिकार टुटैत अछि आ लोकजीवनक भाषिक अनुभव साहित्यिक मान्यताक आधार बनैत अछि।

मण्डलजीक प्रतिरोधक दृष्टि मात्र भाषिक विविधताकेँ स्वीकृति देबाक आग्रहपर सीमित नहि अछि। ओ स्पष्ट रूपेँ पुछै छैथ जे मैथिली साहित्यमे जे रचना भऽ रहल अछि, ओ समाजसँ केतेक जुड़ल अछि? हुनकर अनुसार मूल प्रश्न मात्र इएह नहि जे मैथिलीमे लेखन भऽ रहल अछि, बल्कि ईहो अछि जे ओ लेखन समाजसँ केतेक जुड़ल अछि। ओ व्यंग्यात्मक रूपेँ पुछै छैथ जे अमेरिकाक बीस महलाक मकानक ऊपर बैस मिथिलाकेँ देखब आ साग-पातक लोकजीवनक प्रतिनिधित्वक दावा करब, की सचमुच समाजक संग जुड़ल साहित्यक द्योतक अछि? ऐ सन्दर्भमे हुनकर स्पष्ट आग्रह छैन जे अपन भाषा, अपन साहित्य आ अपन संस्कृतिकेँ अपने निरमित करए पड़त; अपने केलासँ हएत। ऐ प्रश्नमे सम्पूर्ण साहित्यिक आत्मपरीक्षण निहित अछि। साहित्य जँ केवल शैली, वाक्पटुता, लाक्षणिकता आ कल्पनालोकक बीच सीमित रहि जाए, तँ हाशियाक समाजक जीवन ओइसँ बाहर छुटल रहत। यएह कारण मण्डलजी कहै छैथ जे अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ अपने निरमित करए पड़त। ऐ वाक्यमे स्वाधीन रचनात्मक सक्रियता, सामाजिक आत्मविश्वास आ सांस्कृतिक स्वामित्वक संयुक्त आग्रह निहित अछि। हाशियाक समाजकेँ अपन प्रतिनिधित्व स्वतः नहि भेटत। ओकरा अपन भाषा, अपन लेखन, अपन मञ्च, अपन पाठक-समाज आ अपन सांस्कृतिक श्रमक बलपर स्वयं अर्जित करए पड़त।

आरक्षणक प्रश्नक माध्यमसँ मण्डलजी वर्चस्वक एक अन्य रूपपर प्रहार करै छैथ। पंचायत स्तरपर महिला, हरिजन आ पनिचल्लाकेँ आरक्षण देल गेल, मुदा वास्तविक शक्ति-स्थितिमे बेसी परिवर्तन नहि भेल, ई तथ्य

ओ बहुत मार्मिक ढंगसँ सामने आनै छैथ। एतए मण्डलजी व्यवस्थागत प्रतीक आ वास्तविक सामाजिक शक्तिक बीचक अन्तरकेँ चिन्हित करै छैथ। कानूनी आरक्षण जँ सामाजिक संरचना, शिक्षा, आत्मनिर्णय, आर्थिक स्वतंत्रता आ राजनीतिक जागरूकतासँ नहि जुड़त, तँ ओ केवल प्रतिनिधित्वक आवरण बनिकऽ रहि जाएत। ऐ टिप्पणीसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजी सामाजिक परिवर्तनकेँ शुष्क नीतिगत घोषणाक रूपमे नहि, बल्कि व्यवहारक धरातलपर नापै छैथ। हुनका लेल प्रतिरोधक वास्तविक अर्थ समाजक भीतरी संरचनामे परिवर्तन आनब अछि, केवल पद देब नहि।

हाशियाक समाजक विमर्श मण्डलजीक गद्यमे स्त्रीक प्रश्नसँ सेहो जुड़ल अछि। ओ स्त्रीक प्रश्नकेँ अलग-थलग सुधारवादी मुद्दाक रूपमे नइ देखै छैथ। पंचायत आरक्षण, भ्रूण-हत्या, लड़कीक घटैत संख्याक अनुपात, पढ़ाइ-लिखाइक महग व्यवस्था, बेटीपर दोहरा आर्थिक भार आ सार्वजनिक संस्थासभक जड़ताकेँ ओ एक्के सामाजिक रोगक परस्पर जुड़ल रूप मानै छैथ। विशेष रूपेँ हुनकर आग्रह अछि जे जँ नारी-जागरण सचमुच चाही, तँ नारी-शिक्षा अनिवार्य अछि; कारण समाजक आधा हिस्साकेँ शिक्षासँ, सम्मानसँ आ निर्णय-अधिकारसँ वंचित राखि कोनो लोकतांत्रिक नवजागरण सम्भव नहि। पंचायत आरक्षण, नारी-शिक्षाक आवश्यकता, भ्रूण-हत्या, विवाहक असमान आर्थिक ढाँचा, बेटीपर निवेश आ तेकर पश्चात् विवाहक समय पुनः आर्थिक भार, ई सभ बिन्दु लेखमे एक-दोसरासँ जुड़ल रूप धारण केने छैथ। मण्डलजी स्पष्ट देखै छैथ जे नारीक प्रश्न समाजक हाशियाक प्रश्नक अभिन्न हिस्सा अछि। जेतए स्त्री शिक्षा, निर्णयक अधिकार, सम्मान आ सामाजिक सुरक्षा सुदृढ़ नहि अछि, ओइठाम समाजक आन्तरिक रूपमे लोकतांत्रिक बनबे नहि करत। यएह कारण मण्डलजी नारी-जागरणकेँ सामाजिक प्रतिरोधक महत्त्वपूर्ण शर्त मानै छैथ। आ ऐ स्तरपर हुनकर सामाजिक चिन्तन व्यापक मानवीय स्वर ग्रहण करैत अछि।

प्रश्नोत्तरक अंशसभ ऐ अध्यायक वैचारिक धरातलकेँ आरो मजगूत करैत अछि आ तँए ओ बेर-बेर कहै छैथ जे साहित्यमे किछु समाजक चरचा

आवश्यकतासँ अधिक भेल, आ समाजक बहुत पैघ हिस्सा ओइसँ “कटल” रहल। अपन सृजनमे हुनकर लगातार कोशिश रहै छैन जे ओइ छुटल समाजकेँ पकैड़ कऽ लिखल जाए। ई कथन पयस्विनीक सामाजिक आत्मा अछि। हाशियाक समाजक प्रश्न हुनका लेल परिधीय विषय नहि, लेखकीय प्रतिबद्धताक केन्द्रबिन्दु अछि। ऐ कथनसँ स्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनीमे सामाजिक प्रतिरोध मात्र सिद्धान्तक रूपमे नहि, बल्कि रचनात्मक दायित्वक रूपमे उपस्थित अछि। ऐ तरहेँ लेखक अपन साहित्यक उद्देश्य स्पष्ट शब्दमे चिन्हित करै छैथ।

मण्डलजीक वर्चस्व-विमर्श सांस्कृतिक स्तरपर सेहो प्राय: सक्रिय अछि। हुनका अनुसार समाजक किछु वर्ग आ किछु परिवार अछि जे मिथिला आ मैथिलीकेँ अपन चारागाह बना चरैत रहल, समाजक हवाकेँ दूषित करैत रहल। ऐ कथनक आशय ई अछि जे भाषा, साहित्य आ संस्कृति ईमानदार सामाजिक श्रमक क्षेत्र नहि रहिकऽ, प्रतिष्ठा, कब्जा, वर्चस्व आ प्रतीकात्मक उपभोगक वस्तु बनि गेल। मण्डलजी ऐ नकली सांस्कृतिक स्वामित्वक विरोध करै छैथ। हुनका लेल भाषा आ संस्कृति प्रेम, निष्ठा आ श्रम, व्यवहार आ जिम्मेदारीसँ जुड़ल प्रश्न अछि। बंगाली समाजक उदाहरण दैत ओ ई बात कहै छैथ जे मातृभाषाक प्रति निष्ठाक व्यावहारिक रूप होइत अछि। मैथिल समाजक लेल हुनकर संकेत स्पष्ट छैन। भाषापर गर्व केवल कहने (बजने) टासँ सिद्ध नहि होइत; एकर वास्तविक प्रमाण व्यवहारमे प्रकट होइत अछि। एतए प्रतिरोधक आशय अपन सांस्कृतिक जीवनकेँ वास्तविक आचरण, श्रम आ जिम्मेदारीक माध्यमसँ सार्थक बनाएब अछि।

मण्डलजीक सामाजिक प्रतिरोध विध्वंसक रूप नहि लैत; ओकर मूल स्वर रचनात्मक अछि। ओइ कारण ओ आग्रह करै छैथ- “जे जेतइ छी, से तेतइ ठाढ़ भऽ अपन शक्तिकेँ जगाउ।” ई कथन स्पष्ट करैत अछि जे हुनका लेल संघर्षक अर्थ असन्तोष व्यक्त करबा धरि सीमित नहि अछि; अपन स्थानपर सक्रिय भऽ समाजक लेल सार्थक काज करब सेहो अछि। ऐ सन्दर्भमे ओ भाय राजनन्दन लाल दासक ‘कर्णामृत’ पत्रिकाक सम्पादन आ हैदराबादमे मैथिल रचनाकारक मञ्च-निर्माणक उदाहरण दइ छैथ।

पटना-दिल्लीसँ लऽ कऽ गुजरात, मुंबई, हैदराबाद, बंगलोर, मद्रास आ कोलकाता धरि बसल मैथिल समाजकेँ ओ भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक लेल किछु-ने-किछु करबाक प्रेरणा दइ छैथ। ऐ माध्यमसँ मण्डलजी हाशियाक समाजक संघर्षकेँ शिकायत वा प्रतिवाद धरि सीमित नहि रखै छैथ। ओ ओकरा सेवा, संगठन, मञ्च-निर्माण आ भाषिक-सांस्कृतिक जागरणक ठोस मार्ग दिस मोड़ै छैथ।

स्वाधीनता आ सामाजिक उत्तरदायित्वक सम्बन्धपर मण्डलजीक विचार ऐ अध्यायक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। ओ स्वतंत्रताकेँ केवल राजनीतिक घटना नहि मानै छैथ, बल्कि लाखो देशभक्तक बलिदानसँ प्राप्त उत्तरदायित्वक विरासत मानै छैथ। हुनकर कथनानुसार 15 अगस्त 1947 केँ देश स्वतंत्र जरूर भेल, मुदा ऐ स्वतंत्रताकेँ सामान्य लेन-देन जकाँ नहि बुझबाक चाही। जँ लाखो देशभक्त अपन प्राण देलैन, तँ हुनक बलिदानकेँ अकारथ नहि जाए देबाक भार वर्तमान पीढ़ीपर अछि। ऐ जिम्मेदारीकेँ ओ भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्रसँ सेहो जोड़ै छैथ। हुनका अनुसार अपन भाषा, अपन साहित्य आ अपन संस्कृतिकेँ परिमार्जित करैत ऐगला पीढ़ी धरि पहुँचाएब समाजक आवश्यक दायित्व अछि। ऐ प्रसंगमे ओ मैथिली भाषा-साहित्यमे लोकतंत्रीकरणक प्रश्न उठबै छैथ। हुनका अनुसार आन भारतीय भाषाक साहित्यमे लोकतंत्रीकरण भऽ चुकल अछि, मुदा मैथिली भाषा-साहित्यमे ई प्रक्रिया अखनो प्रतीक्षामे अछि। एतए लोकतंत्रीकरणक अर्थ केवल मैथिलीमे अधिक लोकक लिखब-पढ़ब नहि अछि। एकर गहींर अर्थ ई अछि जे मैथिली साहित्यक केन्द्रमे ओ समाज सेहो आबए, जे आबधि प्रायः हाशियापर रहल अछि। किसान, मजदूर, स्त्री, वंचित जाति-वर्ग, क्षेत्रीय बोली आ गामक लोक-अनुभव जखन साहित्यक भीतर सम्मानित स्थान पबैत अछि, तखने भाषा-साहित्य सचमुच जनपक्षधर आ लोकतांत्रिक बनैत अछि। ऐ रूपमे मण्डलजीक सामाजिक प्रतिरोध राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक दायित्व आ पीढ़ीगत जिम्मेदारीक रूपमे विस्तार पबैत अछि। हाशियाक समाजक कल्याण एतए स्वतंत्र समाज गढ़बाक नैतिक कर्तव्य बनि जाइत अछि।

मण्डलजी एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात कहै छैथ जे आन भारतीय भाषाक साहित्यमे लोकतंत्रीकरणक प्रक्रिया अपेक्षाकृत आगाँ बढ़ल, मुदा मैथिली भाषा-साहित्यमे ई प्रक्रिया अखन धरि पूर्ण रूपेँ साकार नहि भऽ सकल अछि। हुनका लेल लोकतंत्रीकरणक अर्थ केवल पाठकसंख्या बढ़ि जाएब नहि अछि। एकर अर्थ अछि: भाषा आ साहित्यक भीतर अधिकाधिक समाज-समूहक प्रवेश होअए; उपेक्षित लोक, वर्ग, समुदाय आ बोलीकेँ उचित स्थान भेटए; मौन आवाज सृजनक भीतर सम्मानपूर्वक सुनाइ दिअए; आ जे जीवनानुभव पहिने केन्द्रमे नहि छल, से रचनाक विषय बनए। जे बोली उपहास, हीनताबोध वा उपेक्षाक विषय बना देल गेल छल, ओकरा सेहो अभिव्यक्तिक मान्यता भेटए। जे लोकसमूहकेँ पिछलग्गू, गौण वा असाहित्यिक बुझि छोड़ि देल गेल, ओकर अनुभव, संघर्ष आ सामाजिक इतिहासकेँ साहित्यिक रूपमे दर्ज कएल जाए। अही अर्थमे मण्डलजीक सम्पूर्ण सामाजिक प्रतिपक्ष लोकतंत्रीकरणक माँगपर केन्द्रित अछि। पयस्विनी ऐ दृष्टिसँ मैथिली साहित्यक सामाजिक पुनर्समीक्षा, जनपक्षधर पुनर्विचार आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नकेँ गम्भीरतापूर्वक सामने आनैबला एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेजक रूपमे देखि पड़ैत अछि।

मण्डलजीक जीवनवृत्तमे हुनकर सामाजिक योगदानक जे संकेत भेटैत अछि, से ऐ अध्यायक तर्ककेँ पुष्ट करैत अछि। ओ 35 वर्षसँ अधिक समय धरि सामाजिक संघर्ष, अन्धविश्वासक विरोध आ सामन्तवादक प्रतिरोधसँ जुड़ल रहला, आ ऐ क्रममे अनेक संगोष्ठी, मुकदमा आ जहल-यात्रासँ सेहो गुजरला। अर्थात् सामाजिक प्रतिरोध हुनका लेल केवल किताबी विषय नहि रहल, बल्कि जीवनक एक व्यावहारिक क्रिया रहल अछि। तइ कारण 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' लेख पढ़ैत काल ई अनुभव होइत अछि जे प्रस्तुत गद्य बाहरसँ कएल टिप्पणी नहि, भीतरसँ जीअल सत्यक अभिव्यक्ति छी। लेखक समाजक शक्ति-सम्बन्ध, छल, असमानता, दिखावटी सुधार, भाषिक उपेक्षा आ सांस्कृतिक कब्जाक विविध रूपसभकेँ प्रत्यक्ष जीवनानुभवक आधारपर चिन्हित करै छैथ। ऐ तरहक अनुभवक समर्थता हुनकर प्रतिरोधी स्वरकेँ गम्भीरता आ विश्वसनीयता प्रदान करैत अछि।

समग्र रूपेँ देखल जाए तँ मण्डलजीक सामाजिक प्रतिरोध तीन धरातलपर एकसंग सक्रिय देखि पड़ैत अछि। पहिल धरातल विचारक अछि, जेतए ओ इतिहास, भाषा, संस्कृति आ सत्ता-संरचनाक आलोचनात्मक परीक्षण करै छैथ। दोसर धरातल रचनात्मक अछि, जेतए छुटल समाजक अनुभवकेँ साहित्यक केन्द्रमे आनबाक कोशिश होइत अछि। तेसर धरातल सामाजिक कर्मक अछि, जेतए संगठन, जागरण, नारी-शिक्षा, भाषिक सक्रियता, सांस्कृतिक निष्ठा आ जनपक्षधर हस्तक्षेपक आग्रह सामने अबैत अछि। फलस्वरूप मण्डलजीक प्रतिरोध मात्र सिद्धान्त नहि रहि जाइत, आ ने मात्र भावुक असहमति बनैत अछि; बल्कि ई विचार, लेखन आ सामाजिक व्यवहारक त्रिसंयुक्त रूपमे प्रकट होइत अछि।

ऐ समस्त विवेचनसँ बुझाइत अछि जे पयस्विनीमे हाशियाक समाजक विमर्श एकाङ्गी नहि, बहुआयामी आ गहींर सामाजिक चिन्तनक रूपमे उपस्थित अछि। एतए भाषा-साहित्यक प्रश्न संस्कृति, राजनीति, शिक्षा, स्त्री-प्रश्न आ प्रतिनिधित्वसँ जुड़ैत अछि। मण्डलजी वर्चस्वकेँ प्रत्यक्ष दमन धरि सीमित नहि देखै छैथ; ओ ओकरा एहेन सांस्कृतिक-सामाजिक संरचनाक रूपमे चिन्हित करै छैथ जे बहुसंख्य लोकजीवनकेँ केन्द्रसँ दूर कऽ दैत अछि। अही प्रकारेँ हाशिया हुनका लेल आर्थिक वंचनाक नाम मात्र नहि; ओ ओहन सामाजिक स्थिति अछि जेतए दबल, छुटल, वंचित आ अल्पप्रतिनिधित समाज अपन आवाज, अनुभव आ अस्मिताक संग निरन्तर संघर्षरत रहैत अछि। एही कारण हुनका लग सामाजिक प्रतिरोधक अर्थ विरोध दर्ज करबा धरि सीमित नहि अछि। ओ विवेकक जागरण, आत्मनिर्माण, जनपक्षीय लेखन, संगठन, भाषिक अधिकार, सांस्कृतिक आत्मगौरव आ लोकतांत्रिक पुनर्समीक्षाक दिशामे सक्रिय होएबाक आग्रहसँ जुड़ल अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीक ई सामाजिक अध्याय आधुनिक मैथिली गद्यमे प्रतिरोध, प्रतिनिधित्व आ जनसरोकारक प्रश्नकेँ गम्भीरताक संग उठौनिहार एक सशक्त अभिलेखक रूपमे उद्घाटित होइत अछि। ❑

पयस्विनीमे साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक लेखन

✳

पयस्विनीमे मण्डलजीक वैचारिक लेखनक संग-संग हुनकर साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक लेखनक रूप सेहो सुस्पष्ट होइत अछि। अनुक्रममे ‘अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2011 गुवाहाटी’, ‘सगर राति दीप जरय’क 100म कथागोष्ठीक मादे, ‘वेब प्रोग्राम, 29 जुलाइ 2020’ आ ‘भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा’क उपस्थिति विशेष अर्थ रखैत अछि। विभिन्न प्रश्नक जवाब आ परिसंवादक खण्डसभ ऐ सार्वजनिक स्वरकेँ आरो बल दैत अछि। अही सामग्रीक कारण पयस्विनी लेखकक निजी चिन्तन धरि सीमित नहि रहि, सार्वजनिक साहित्यिक जीवनक सहभागी पाठकक रूप धारण करैत अछि। एतए लेखकक विचार खाली निबन्धक रूपमे संगृहीत नहि अछि; साहित्यिक समाजक बीच हुनकर सक्रिय उपस्थिति, उत्तरदायित्व आ सहभागिता सेहो अभिव्यक्त भेल अछि। ध्यान देबाक बात ई अछि जे हुनकर सार्वजनिक लेखन कोनो बाहरी गतिविधिक परिशिष्ट नहि छी। ई हुनकर वैचारिक गद्यक स्वाभाविक विस्तार छी। जइ लेखकक लेल साहित्य जन-संवादक माध्यम अछि, हुनका लेल सम्मेलन, गोष्ठी, प्रश्नोत्तर, वेब-मञ्च आ व्यक्तित्व-लेखन सभ साहित्यिक कर्मक आवश्यक अंश बनि जाइत अछि। अही कारण पयस्विनीमे सार्वजनिक लेखनक उपस्थिति आकस्मिक नहि, बल्कि लेखकक समग्र साहित्य-दर्शनक व्यावहारिक रूप छी।

मण्डलजीक समग्र साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ देखल जाए तँ स्पष्ट होइत अछि जे हुनकर लेखन एकान्त-निविष्ट साधना आ सार्वजनिक उपस्थिति

दुनूकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि। मण्डलजीक जीवनवृत्तमे 'सगर राति दीप जरय'क त्रैमासिक साहित्यिक आयोजनमे 2008 ई.सँ अद्यतन सक्रिय सहभागिताक उल्लेख अछि। नव लेखकक प्रोत्साहन, सम्पादकीय सहयोग, मञ्च-सम्बन्ध, सामाजिक संघर्ष आ जन-संवादक प्रति प्रतिबद्धता सेहो स्पष्ट रूपेँ दर्ज अछि। ऐ पृष्ठभूमिमे पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनक अर्थ आरो बुझाइत अछि। ई कृति लेखकक ओइ हिस्साकेँ सामने आनैत अछि, जेतए साहित्य खाली रचना नहि, सहभागिता बनैत अछि; खाली पाठ नहि, आयोजन बनैत अछि; खाली विचार नहि, लोक-सम्बन्ध बनैत अछि।

'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2011 गुवाहाटी' जकाँ शीर्षकक उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि जे मण्डलजीक साहित्यिक दृष्टि क्षेत्रीय सीमामे आबद्ध नहि अछि। मैथिली समाज भौगोलिक रूपेँ विस्तीर्ण अछि। एकर सांस्कृतिक उपस्थिति मिथिला धरि सीमित नहि रहि सकैत। सम्मेलन-लेखन अही विस्तृत सांस्कृतिक उपस्थितिकेँ शब्द दैत अछि। सार्वजनिक लेखनक ई रूप विशेष महत्त्व रखैत अछि, किएक तँ सम्मेलन मात्र औपचारिक आयोजन नहि होइत। ओ सामूहिक आत्मचेतना, भाषिक अस्मिता, साहित्यिक संवाद आ सांस्कृतिक भविष्यक प्रश्नकेँ एक मञ्चपर आनैत अछि। एहेन सम्मेलन-लेखनक महत्त्व एतए ई अछि जे ओ आयोजनक सूचना तँ दैत अछि, संगहि ईहो संकेत दैत अछि जे मैथिली समाज अपनाकेँ केना देखैत अछि आ अपन भविष्यक कल्पना केना करैत अछि। जखन एहेन आयोजन पुस्तकमे स्थान पबैत अछि, तखन साहित्यिक इतिहासक एक चलैत रूप सुरक्षित होइत अछि। पयस्विनी ऐ अर्थमे मैथिलीक जीवित सांस्कृतिक प्रवाहक अभिलेख बनि जाइत अछि। तँए सम्मेलन-लेखन एतए केवल विवरणात्मक गद्य नहि रहि जाइत, बल्कि मैथिल समाजक सामूहिक आत्मचेतनाक अभिव्यक्ति बनि उठैत अछि।

'सगर राति दीप जरय'क 100म कथागोष्ठीक मादे पयस्विनीक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक-साहित्यिक दस्तावेज अछि। ऐ कथा-गोष्ठीक पहिल आयोजन जनवरी 1990 ई.मे भेल छल आ समयक्रमेँ ई आयोजन एक दीर्घ साहित्यिक परम्पराक रूपमे विकसित भेल। पहिल गोष्ठीमे विविध

कथाकारक कथापाठक उल्लेख भेटैत अछि। ऐ सूचना मात्रसँ दूटा महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने अबैत अछि। पहिल, मैथिली कथा-परम्परा मंचीय वाचन, सामूहिक श्रवण आ आपसी आलोचनाक अभ्याससँ जुड़ल रहल अछि। आ दोसर ई जे एहेन आयोजन लेखक-केन्द्रित नहि, समुदाय-केन्द्रित साहित्यिक संस्कृति गढ़ैत अछि। मण्डलजी जखन एहेन गोष्ठीक मादे लिखै छैथ, तखन ओ केवल स्मरणक लेख नहि लिखि रहल छैथ। ओ एक साहित्यिक सामूहिकता, संवादशीलता आ निरन्तरताकेँ दर्ज करै छैथ।

'सगर राति दीप जरय'क चरचा पयस्विनीमे सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक लेखनक बीचक गहींर सम्बन्धकेँ रेखांकित करैत अछि। ऐ कथा-गोष्ठीक आयोजनक महत्त्व केवल एतेक नहि जे ओतए कथापाठ भेल। असल महत्त्व ऐ बातमे अछि जे एहेन आयोजन भाषा आ साहित्यकेँ जीवित सामाजिक व्यवहारमे बदलैत अछि। लेखक असगर नहि रहैत। श्रोता निष्क्रिय नहि रहैत। पाठ सामूहिक अनुभव बनैत अछि। आलोचना आ प्रशंसा तत्क्षण जनमैत अछि। ऐ प्रकारेँ कथा-लेखन खाली लिखल पाठ भरि नहि रहि जाइत, बल्कि सामूहिक बौद्धिक विनिमयक प्रक्रिया बनि जाइत अछि। युवा रचनाकार प्रेरित होइ छैथ। वरिष्ठ लेखकक उपस्थिति परम्परा आ परिवर्तनक बीच सेतु बनबैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीमे ऐ आयोजनक लेख साहित्यक सार्वजनिक संस्कृतिक प्रमाण-पत्र छी।

'वेब प्रोग्राम, 29 जुलाइ 2020' शीर्षक पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनकेँ एक नव आयाम दैत अछि। एतए साहित्यिक सक्रियता पारम्परिक मञ्चसँ डिजिटल मञ्च धरि प्रवेश करैत अछि। डिजिटल मञ्च मिथिलासँ बाहर बसल मैथिल समाजकेँ भाषा-संवादक नव अवसर दैत अछि। अइसँ साहित्य भौगोलिक दूरीसँ मुक्त भऽ अधिक व्यापक लोक-सम्पर्कक माध्यम बनैत अछि, आ मैथिली भाषिक समुदाय देश-विदेशक विस्तारमे एक-दोसरासँ संवाद कायम कऽ सकैत अछि। उद्धृत अंशसँ ज्ञात होइत अछि जे पुरान संगतिक माध्यमसँ कार्यक्रम शुरू भेल आ लेखक तइमे सहभागी बनला। ऐ तथ्यक सांस्कृतिक महत्त्व विशेष अछि। ई बतबैत अछि जे मण्डलजी साहित्यिक समाजकेँ स्थूल भौगोलिक उपस्थिति धरि सीमित नहि

मानै छैथ। समय बदलैत अछि तँ मञ्च बदलैत अछि। संवादक माध्यम बदलैत अछि। मुदा भाषा, साहित्य आ सामाजिक जुड़ावक आवश्यकता कायम रहैत अछि। पयस्विनी अही संक्रमणक क्षणकेँ भीतरी आत्मीयता संग अभिलेखित करैत अछि।

वेब-आधारित कार्यक्रमपर लिखल लेखसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजीक सार्वजनिक लेखन समय-सापेक्ष आ जागरूक अछि। ओ केवल बीतल गौरवक स्मरणमे सीमाबद्ध नहि रहै छैथ, बल्कि नव माध्यम आ भाषिक उपस्थितिक नव सम्भावनापर सेहो गम्भीरतापूर्वक विचार करै छैथ। डिजिटल मञ्चक अर्थ एतए आधुनिकता मात्र नहि, अपितु प्रसार, पहुँच आ सतत् संवादक अवसर सेहो अछि। अर्थात् मञ्च बदलने साहित्यक सार्वजनिक चरित्र समाप्त नहि होइत, बल्कि नव रूपमे विस्तृत होइत अछि। मैथिली भाषिक समुदाय देश-विदेश धरि पसरल छैथ। एहेन स्थितिमे वेब-प्रोग्राम भाषा-संस्कृतिक समागमक नव माध्यम बनैत अछि। पयस्विनीमे ऐ लेखकेँ शामिल करब ऐ बातक सूचक अछि जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी साहित्यिक सक्रियताकेँ जीवित समकालीन प्रक्रिया मानै छैथ।

‘भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा’ शीर्षक लेख पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनकेँ व्यक्तित्व-केन्द्रित सांस्कृतिक दिशा दैत अछि। उपलब्ध सामग्रीसँ स्पष्ट अछि जे राजनन्दन लाल दासजीक जीवन मातृभाषानुराग, मिथिला-सांस्कृतिक सक्रियता आ दीर्घ सम्पादकीय साधनासँ जुड़ल रहल। 1958 ई.मे मिथिला सांस्कृतिक सम्मेलनमे हुनकर सक्रियता, बाहरी जीवनानुभवक बीच मिथिला-मिथिलीक प्रति अनुराग, आ ‘कर्णामृत’ पत्रिकाक दीर्घ सम्पादनक प्रसंग ऐ व्यक्तित्वकेँ साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्मयोद्धाक रूपमे सामने आनैत अछि। मण्डलजी एहेन व्यक्तित्वक जीवन-यात्राकेँ लिखिकऽ मात्र श्रद्धांजलि नहि देलैन अछि, बल्कि मैथिल समाजक सांस्कृतिक संरक्षकमण्डलक स्मृतिकेँ सुरक्षित केलैन अछि।

ऐ प्रकारक व्यक्तित्व-लेखनक महत्त्व अत्यन्त पैघ होइत अछि। साहित्यिक इतिहास खाली पुस्तकसूचीसँ नहि बनैत; ओ ओइ लोकक

जीवनक आधारपर बनैत अछि, जे मञ्च बनबै छैथ, पत्रिका चलबै छैथ, लोककेँ जोड़ै छैथ, भाषिक अनुरागक वातावरण बनबै छैथ, आ क्षेत्रीय संस्कृतिक निरन्तरताकेँ अक्षुण्ण रखै छैथ। राजनन्दन लाल दास सम्बन्धी लेख ऐ अर्थमे सार्वजनिक लेखनक महत्त्वपूर्ण रूप छी। पयस्विनी एतए व्यक्तित्व-स्मरणकेँ साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहासक अंग बना दैत अछि। ऐ सन्दर्भमे सार्वजनिक लेखन निजी संस्मरण नहि रहि, सांस्कृतिक उत्तरदायित्व बनि जाइत अछि। एहेन लेखसभसँ ई बुझाइत अछि जे मैथिली साहित्यक इतिहास केवल महान कृतिसभक इतिहास नहि, बल्कि ओइ लोकसभक इतिहास सेहो छी जे निस्वार्थ भावसँ भाषा, पत्रिका, मञ्च आ सांस्कृतिक वातावरणकेँ जीवित रखने छैथ। मण्डलजीक एहेन लेखनक माध्यमसँ साहित्यिक समाज अपन अदृश्य कर्मयोगीसँ परिचित होइत अछि आ सांस्कृतिक कृतज्ञताक बोध सेहो विकसित होइत अछि।

पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनक सभसँ विशिष्ट पक्ष प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभ अछि। ‘विदेह ई-पत्रिका’क सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक जवाब, मुन्नाजीक प्रश्नक जवाब, मुकेश दत्तजीक प्रश्नक जवाब आ दूटा परिसंवाद ऐ कृतिक संरचनाकेँ बहुध्वन्यात्मक, जीवित आ संवादधर्मी बनबैत अछि। एतए मण्डलजी एकतरफा व्याख्याता रूपमे सामने नहि अबै छैथ, बल्कि संवादकर्मी रूपमे उपस्थित होइ छैथ। प्रश्नक समक्ष अपन विचारक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत ओ साहित्य-दर्शन, सामाजिक बोध, भाषा-विचार, रचनात्मक प्राथमिकता आ सांस्कृतिक सरोकारकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ उद्घाटित करै छैथ। यएह कारण प्रश्नोत्तरक अंशसभ पयस्विनीकेँ स्थिर निबन्ध-संकलनसँ आगाँ लऽ जाइत अछि आ पुस्तककेँ जीवित सार्वजनिक विचार-विनिमयक रूप प्रदान करैत अछि। एतए लेखक अपन विचारकेँ निजी लेखनक सुरक्षित कोठरीमे बन्द रखनिहार रचनाकार नहि रहि जाइ छैथ; ओ पाठक, सम्पादक, शोधार्थी आ व्यापक साहित्यिक समाजक सम्मुख उपलब्ध, उत्तरदायी आ संवादशील व्यक्तित्वक रूपमे सामने अबै छैथ।

गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक उत्तरमे मण्डलजी साहित्यक उद्देश्यपर

विचार करैत कहै छैथ जे साहित्य समाजक ओहन दर्पण छी जइमे भूत, वर्तमान आ भविष्यक दर्शन होइत अछि। ई कथन अपने-आपमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ एतए साहित्यकेँ कलात्मक आस्वादक वस्तुक संग सामाजिक बोधक सक्रिय माध्यमक रूपमे परिभाषित कएल गेल अछि। संगहि ओ ई व्यथा प्रकट करै छैथ जे मैथिली साहित्य "एकभग्गू" भऽ गेल अछि, किछु समाजक चरचा आवश्यकतासँ अधिक भेल अछि, आ समाजक अधिकांश हिस्सा कटि कात भऽ गेल अछि। ऐ कथनक सार्वजनिक महत्त्व अत्यन्त गहींर अछि। ई मात्र आत्मालोचन नहि, बल्कि मैथिली साहित्यिक जगतक दिशाबोधक वक्तव्य छी। एतए मण्डलजी साहित्यक भीतर उपस्थित असन्तुलन, प्रतिनिधित्वक अभाव आ सामाजिक विषमताक प्रश्नकेँ निर्भीकतापूर्वक सामने आनै छैथ। प्रश्नोत्तरक माध्यमेँ एहेन कथन उपलब्ध भेलासँ पाठककेँ लेखकक भीतरी चिन्ता, साहित्यिक ईमानदारी आ जनपक्षधर दृष्टि प्रत्यक्ष रूपेँ बुझबाक अवसर भेटैत अछि। ऐ अर्थमे पयस्विनीक प्रश्नोत्तर साहित्यिक लोकचेतनाक निर्माणक सक्रिय औजार बनि जाइत अछि।

मुकेश दत्तजीक प्रश्नक उत्तरमे मण्डलजी आर्थिक वृत्ति आ बौद्धिक वृत्तिक अन्तर स्पष्ट करै छैथ। शरीरक भरण-पोषण आ मनक भरण-पोषण दुनूकेँ अलग-अलग, मुदा समान रूपेँ महत्त्वपूर्ण मानैत ओ जीवन आ साहित्यक बीचक गहींर सम्बन्धपर प्रकाश देलैन अछि। नियमित अर्थोपार्जनक संग नियमित सृजनक समय निकालबाक बात हुनकर साहित्यिक अनुशासन, जीवन-संघर्ष आ लेखन-प्रतिबद्धताक ठोस संकेत दैत अछि। ऐ उत्तरसँ स्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजीक साहित्यिक सक्रियता आकस्मिक, अवकाशजन्य वा अवसरसापेक्ष क्रिया नहि अछि; ई एक योजनाबद्ध, अनुशासित आ जीवनक समानान्तर चलैत साधना छी। ओइ कारण हुनकर सार्वजनिक लेखन मञ्चीए उपस्थिति भरि नहि रहि कऽ आत्मनियोजित बौद्धिक कर्मक विस्तार बनि जाइत अछि। अर्थात् मञ्चपर उपस्थित लेखक आ एकान्तमे लिखनिहार साधक, एतए दू अलग व्यक्ति नहि रहैत; दुनू एक्के अनुशासित जीवन-दृष्टिक परस्पर सम्बद्ध रूप बनि

प्रकट होइत अछि। लेखक अपन श्रम, समय, जीवन-स्थितिक यथार्थ आ सृजनात्मक दायित्वक बीच जे सन्तुलन स्थापित करै छैथ, से हुनकर सार्वजनिक व्यक्तित्वक अतिरिक्त विश्वसनीयता, गम्भीरता आ नैतिक दृढ़ता प्रदान करैत अछि।

समग्र रूपेँ देखल जाए तँ प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभ पयस्विनीक सार्वजनिकताकेँ एक नव आ गम्भीर स्तर प्रदान करैत अछि। सम्मेलन, गोष्ठी आ वेब-प्रोग्राम लेखकक बाहरी सहभागिता देखौलक अछि आ तहिना प्रश्नोत्तर लेखकक वैचारिक उपलब्धता, आत्मव्याख्यात्मक स्पष्टता आ सार्वजनिक जवाबदेहीकेँ सामने आनलक अछि। एतए मण्डलजी प्रश्न लेल खुलल छैथ, असहमति लेल खुलल छैथ, आ व्याख्या लेल सेहो खुलल छैथ। ऐ प्रकारक खुलापन सार्वजनिक लेखनक अत्यन्त आवश्यक शर्त छी। जखन लेखक प्रश्नक सम्मुख ठाढ़ भऽ अपन साहित्य-दृष्टि, सामाजिक चिन्ता, भाषिक आग्रह आ रचनात्मक प्रतिबद्धताकेँ स्पष्ट करै छैथ, तखन साहित्य समाजक संग जीवित सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। पयस्विनीक एही संरचनात्मक विशेषताक कारण ई पुस्तक मात्र विचारक संकलन नहि रहिकऽ सामाजिक विचार-चेतना, लोक-संवाद, साहित्यिक उत्तरदायित्व आ जनपक्षधर चेतनाक एक महत्त्वपूर्ण पाठ बनि जाइत अछि।

मण्डलजीक सार्वजनिक लेखनक सांस्कृतिक अर्थ ऐ बातमे सेहो निहित अछि जे ओ भाषा, साहित्य आ समाजकेँ एक-दोसरासँ अलग विभाग रूपेँ नइ देखै छैथ। हुनकर जीवनवृत्तमे साहित्य-दर्शनक वाक्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। “लेखन प्रदर्शन नहि, प्रतिबद्धताक अनुशासित साधना छी।” “हम ओइ लोक लेल लिखै छी जे जीबि रहल छैथ, मुदा बाजि नहि सकैत।” “मैथिली साहित्य जन-संवादक सजग दस्तावेज बनए।” ऐ कथनसभक आलोकमे पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनकेँ देखल जाए तँ बुझाइत अछि जे सम्मेलन, गोष्ठी, वेब-प्रोग्राम, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सभ ऐ साहित्य-दर्शनक व्यावहारिक रूप अछि। एतए लेखन लोककेँ जोड़बाक, बौककेँ बोली देबाक, आ जन-संवाद रचबाक माध्यम बनैत अछि।

मण्डलजीक संगठनात्मक सम्बद्धता आ सामाजिक सक्रियता

सम्बन्धी सूचनासभ ऐ अध्यायक तर्ककेँ बल दैत अछि। 'सगर राति दीप जरय'क सहभागी, नव लेखकक प्रोत्साहक, पल्लवी प्रकाशनसँ जुड़ल सक्रिय व्यक्तित्व आ समाजसेवा-आधारित लेखनक साधक रूपमे हुनकर परिचय उपलब्ध अछि। अनेक सामाजिक प्रश्नपर हुनकर सक्रियता सेहो देखल जाइत अछि। ऐ पृष्ठभूमिकेँ ध्यानमे रखलासँ पयस्विनीक सार्वजनिक लेखनक महत्त्व आरो बढ़ि जाइत अछि। ई कृति एहेन रचनाकारक पुस्तक अछि जे मञ्चकेँ माटिसँ, गोष्ठीकेँ गामसँ आ लेखनकेँ समाज-सेवासँ जोड़ि कऽ चलै छैथ।

सार्वजनिक लेखनक एकटा महत्त्वपूर्ण गुण अभिलेखीयता होइत अछि। एहेन लेख भविष्यक शोधार्थी, आलोचक आ साहित्य-इतिहासकार लेल स्रोत-सामग्री बनैत अछि, कारण ओ आयोजन, व्यक्ति, विचार, मञ्च, समयक वातावरण आ साहित्यिक सक्रियताक जीवित साक्ष्य सुरक्षित रखैत अछि। मौखिक वा क्षणिक रहि जाइबला घटना पुस्तकमे आबि दीर्घकालीन सांस्कृतिक स्मृति बनि जाइत अछि। 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन', '100म कथागोष्ठी', 'वेब प्रोग्राम', 'जीवन यात्रा', 'प्रश्नक जवाब' आ 'परिसंवाद' शीर्षक रचनासभ मैथिल समाजक समकालीन साहित्यिक इतिहासक प्राथमिक दस्तावेजक रूपमे देखल जा सकैत अछि। जँ एहेन सामग्री पुस्तकमे संगृहीत नहि होइत, तँ बहुत बात मौखिक स्मृति धरि सीमित रहि जाइत। पयस्विनी ऐ अभावक पूर्ति करैत अछि। ई पुस्तक पाठककेँ कहैत अछि जे मैथिलीक सांस्कृतिक जीवन मात्र रचना-ग्रन्थक भीतर नहि, जीवित मञ्च, गोष्ठी, पत्रिका, प्रश्नोत्तर, डिजिटलक प्रसार आ व्यक्तित्वक सक्रिय उपस्थितिमे सेहो घटित होइत अछि। अर्थात् पयस्विनी एतए साहित्यक पाठ मात्र नहि, बल्कि साहित्यक परिवेश, प्रक्रिया, स्मृति आ सामाजिक संचारक इतिहास सेहो सुरक्षित करैत अछि। एहेन अभिलेखीय चेतनाक बिना कोनो भाषाक सार्वजनिक साहित्यिक जीवनक सम्यक् पुनर्निर्माण सम्भव नहि।

समग्र रूपेँ देखल जाए तँ पयस्विनीमे सार्वजनिक लेखन तीन स्तरपर सक्रिय भेल अछि। पहिल, ई साहित्यिक समुदायकेँ एक-दोसरासँ जोड़बाक माध्यम छी। दोसर, ई सांस्कृतिक स्मृतिसभकेँ सुरक्षित रखबाक

अभिलेखीय कार्य करैत अछि। तेसर, ई लेखकक वैचारिक उत्तरदायित्वकेँ सार्वजनिक रूपेँ व्यक्त करैत अछि। फलस्वरूप सम्मेलन, गोष्ठी, वेब-मञ्च, व्यक्तित्व-लेखन आ प्रश्नोत्तर सभ मिलिकऽ पयस्विनीकेँ मैथिली साहित्यक सार्वजनिक जीवनक एक सजीव आ सार्थक परिप्रेक्ष्यक रूपमे सामने अनैत अछि।

ऐ अध्यायक समग्र विवेचनसँ ई बुझाइत अछि जे पयस्विनीमे साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ सार्वजनिक लेखन एक महत्त्वपूर्ण पूरक आयाम रूपेँ उपस्थित अछि।

सम्मेलन-लेखन मैथिलीक व्यापक सांस्कृतिक भूगोलकेँ सामने आनैत अछि। कथागोष्ठीक लेख सामूहिक साहित्यिक परम्पराक दस्तावेज बनैत अछि। वेब-प्रोग्राम डिजिटल युगमे साहित्यिक सार्वजनिकताक नव रूपक संकेत करैत अछि। राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा भाषिक-सांस्कृतिक समर्पणक स्मृति सुरक्षित करैत अछि। प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद लेखकक विचारक सार्वजनिक उत्तरदायित्वकेँ प्रकट करैत अछि। ऐ समस्त सामग्रीक कारण पयस्विनी एक एहेन पुस्तक बनि गेल अछि जे जगदीश प्रसाद मण्डलक वैचारिक गद्यक संग-संग हुनकर साहित्यिक कर्म, सांस्कृतिक सहभागिता आ सार्वजनिक वैचारिक सक्रियताकेँ सेहो सम्यक् रूपेँ उद्घाटित करैत अछि। ऐ अर्थमे ई कृति मैथिली साहित्यक सार्वजनिक जीवनक अध्ययन लेल अपरिहार्य महत्त्व रखैत अछि। ❑

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे उद्घाटित मण्डलजीक व्यक्तित्व

✳

पयस्विनीक भीतर प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभ विशेष महत्त्व रखैत अछि। ऐ अंशसभक कारण ई पोथी निबन्ध-संग्रह भरि नहि रहैत, बल्कि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रत्यक्ष वाणी, आत्मदृष्टि, जीवनानुभव, साहित्य-दर्शन, सामाजिक समझ आ मानवीय स्वभावक साक्षात्कार-ग्रन्थ बनि जाइत अछि। 'गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक जवाब', 'मुन्नाजीक प्रश्नक जवाब', 'मुकेश दत्तजीक प्रश्नक जवाब', 'परिसंवाद:01' आ 'परिसंवाद:02' देखबैत अछि जे मण्डलजी लेखनकेँ एकतरफा कथन नहि, संवादक प्रक्रिया मानै छैथ। एतए पाठक, सम्पादक, संवादकर्त्ता आ लेखकक बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध बनैत अछि। ऐ कारण हुनकर व्यक्तित्वक जे रूप ऐ खण्डसभमे उद्घाटित होइत अछि, से विश्वसनीय, आत्मीय आ बहुआयामी बनि उठैत अछि। आलोचकक टिप्पणी वा बाहरी मूल्यांकनक अपेक्षा एतए रचनाकार स्वयं अपन स्वरमे बजै छैथ। तँए ऐ अंशसभ हुनकर भीतरी व्यक्तित्वक प्रत्यक्ष प्रवेश-द्वार बनि जाइत अछि।

सभसँ पहिने ऐ प्रश्नोत्तर-परिसंवादक खण्डसभसँ मण्डलजीक आत्मीयता आ विनम्रता उद्घाटित होइत अछि। गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक आरम्भेँ मण्डलजी 'हेराएल-भोतियाएल रचनाकारक खोज-खबैर लेबा लेल विदेह परिवारकेँ धन्यवाद' कहि अपन बात शुरू करै छैथ। ई वाक्य सामान्य औपचारिकता नहि छी। अइमे दोसरक श्रमक प्रति सम्मान, खोजक प्रति कृतज्ञता आ साहित्यिक सहकारक प्रति आदर निहित अछि। सौम्या झाक

संग परिसंवादमे सेहो "अपनेक जिज्ञासा लेल धन्यवाद" कहि मण्डलजी वार्तालापक शुरुआत करै छैथ। ऐ प्रकारक सम्बोधन स्वत: स्पष्ट करैत अछि जे हुनका लग संवाद शक्ति-प्रदर्शनक मञ्च नहि, परस्पर आदरक क्षेत्र अछि। हुनकर व्यक्तित्वक ई आत्मीय पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ अहीसँ बुझाइत अछि जे ओ सार्वजनिक जीवनमे सम्मान ग्रहण करबाक संग-संग संवादकर्त्ता आ सहयात्रीक योगदान सेहो मानै छैथ।

ऐ खण्डसभमे मण्डलजीक आत्मपरिचय देबाक साहस आ स्पष्टता सेहो उल्लेखनीय अछि। मुकेश दत्तजीक प्रश्नपर अपन प्रारम्भिक जिनगीक चरचा करैत ओ बेरमा गाम, मध्यवर्गीय जाति, मध्यवर्गीय परिवार, जमीन, गुजर-बसर, जेठ-रैयति, भूमिहीनता आ सामाजिक विभाजनपर बिना झिझक बात करै छैथ। ओ परिवारक सामाजिक-आर्थिक अवस्थाकेँ धुँधलामे अर्थात् अन्हारमे नहि रखै छैथ। ऐ प्रकारक स्पष्टता लेखकक आत्मविश्वासक चिन्ह छी। एतए आत्मपरिचय आत्ममुग्ध शैलीमे नहि, यथार्थवादी शैलीमे अबैत अछि। ओ अपन स्थितिक सामाजिक धरातल बुझै छैथ आ ओही धरातलसँ अपन व्यक्तित्वक निर्माण बुझबैक प्रयास सेहो करै छैथ। अही कारणेँ प्रश्नोत्तर खण्डसभ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जीवन-सत्यकेँ सजावटविहीन रूपमे सामने अनैत अछि।

सौम्या झाक संग परिसंवादक अंश मण्डलजीक गाम-केन्द्रित जीवनबोधकेँ विशेष रूपेँ उद्घाटित करैत अछि। ओ स्पष्ट रूपेँ कहै छैथ जे अपन गामे अपन जन्मस्थान छी, आ शिक्षा-दीक्षाक चरचा सेहो गामेक स्कूलसँ शुरू करै छैथ। 1934 इस्वीक भूकम्प, स्कूलक स्थान-परिवर्तन, लोअर प्राइमरीसँ उच्चतर शिक्षा धरि सम्पूर्ण यात्राक वर्णन करैत ओ अपन जीवन-गठनकेँ सामाजिक स्मृतिक संग जोड़ै छैथ। ऐ प्रकारक आत्मकथनसँ हुनकर व्यक्तित्वमे माटि-संबद्धता, स्मृतिशीलता आ स्थानीय परिवेशक प्रति गहींर लगाव सुस्पष्ट होइत अछि। ओ महानगरक दूरीसँ गामक चरचा नहि करै छैथ। गाम हुनकर व्यक्तित्वक मूल स्रोत छिऐन।

प्रश्नोत्तरसभमे मण्डलजीक साहित्य-दर्शन सेहो अत्यन्त स्पष्ट रूपेँ उद्घाटित होइत अछि। गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नपर ओ कहै छैथ जे साहित्य

समाजक ओहन दर्पण छी जइमे भूत, वर्तमान आ भविष्यक दर्शन होइत अछि। ऐ एक वाक्यमे हुनकर सम्पूर्ण साहित्यिक दृष्टि निहित अछि। हुनका लेल साहित्य मनोरंजनक वस्तु भरि नहि, बल्कि ई समय-बोधक माध्यम सेहो छी। समाजक दिशा आ दशा दुनू साहित्यक भीतर देखल जा सकैत अछि। ऐ कथनक संग जे व्यथा ओ प्रकट करै छैथ, से आरो महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर मत अछि जे मैथिली साहित्य "एकभग्गू" भऽ गेल अछि, किछु समाजक चरचा आवश्यकतासँ अधिक भेल अछि, आ समाजक अधिकांश हिस्सा "कटि कात" भऽ गेल अछि। ऐ आत्मालोचनसँ हुनकर व्यक्तित्वक नैतिक ईमानदारी, साहित्यिक सजगता आ जनपक्षीय विचार-दृष्टि प्रकट होइत अछि। एतए विशेष ध्यान देबाक बात ई अछि जे मण्डलजी आत्मालोचनकेँ नकारात्मक असन्तोषक रूपमे नइ देखै छैथ, बल्कि साहित्यकेँ अधिक समावेशी आ न्यायपूर्ण बनेबाक आवश्यक शर्तक रूपमे देखै छैथ।

ऐ उत्तरक क्रममे मण्डलजी साफ-साफ कहै छैथ जे समाजक ओ दबल-कुचलल, वंचित हिस्सा हुनकर मुख्य आधार अछि, आ ओही लेल ओ लिखै छैथ। ई कथन मण्डलजीक व्यक्तित्वक केन्द्रीय सूत्र छी। एतए लेखक अपन पाठक-वर्ग, अपन रचनात्मक पक्षधरता आ अपन नैतिक प्रतिबद्धता तीनूकेँ एकसंग रेखांकित करै छैथ। ऐ प्रकारक आत्मघोषणा बहुत कम लेखक करै छैथ। हुनकर विशिष्टता अइमे छैन जे ओ अपन रचना-दृष्टिक वास्तविक सामाजिक पक्षकेँ नुकबै नइ छैथ। तँए प्रश्नोत्तरक अंशसभसँ हुनकर व्यक्तित्व समाजक छूटल लोकक लेखक रूपमे सामने अबैत अछि।

मण्डलजीक व्यक्तित्वक एक विशेष पक्ष निष्पक्ष अवलोकन आ विवेकशील निर्णय छैन। एक प्रश्नक उत्तर दैत ओ कहै छैथ जे कोनो समस्या आकि कोनो घटनाक प्रति हुनकर सदिखन प्रयास रहैत अछि जे निष्पक्ष भऽ देखी आ निराकरणो करी। ऐ वाक्यसँ बहुत किछु स्पष्ट होइत अछि। पहिल, हुनका लग साहित्य दलीय शोर नहि छी। दोसर, ओ घटनाकेँ भावावेगक आधारपर नहि, बल्कि निरीक्षणक आधारपर देखए चाहै छैथ। तेसर, हुनका लेल देखब आ निराकरण करब एक-दोसरासँ अलग नहि अछि। ई प्रवृत्ति

हुनकर निबन्धसभमे सेहो देखल जाइत अछि, मुदा प्रश्नोत्तरमे ई प्रत्यक्ष वचनक रूपमे सामने आएब अधिक महत्त्वपूर्ण बनि जाइत अछि। ऐ आधारपर कहि सकैत छी जे हुनकर व्यक्तित्व तथ्य-सजग, विचारशील आ समाधानमुखी अछि।

मुन्नाजीक प्रश्नक प्रसंग मण्डलजीक भाषिक निष्ठा आ आन्तरिक रचनात्मक आग्रह उद्घाटित भेल अछि। प्रश्नक उत्तरमे हुनकर ई विचार प्रकट होइत अछि जे ओना ओ हिन्दी साहित्यक विद्यार्थी रहला, मुदा मैथिलीसँ हुनकर सम्बन्ध परिवारसँ समाज धरि लगातार बनल रहल। ओ स्पष्ट कहै छैथ जे जे विचार मैथिलीमे गहराइसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि, से हिन्दीमे ओइ तरहेँ सम्भव नहि भऽ पबैत। ऐ कथनसँ हुनकर व्यक्तित्वक बहुतो महत्त्वपूर्ण पक्ष खुलैत अछि। ओ भाषा-चयनकेँ मात्र सुविधा वा प्रतिष्ठाक प्रश्न नहि मानै छैथ। भाषा हुनका लेल आन्तरिक अभिव्यक्तिक स्वाभाविक धरातल अछि, से स्पष्ट होइए। मैथिलीमे लिखब हुनका लेल भावात्मक निर्णय सेहो अछि आ सामाजिक निर्णय सेहो, मुदा रचनात्मक सत्य सेहो अछिए। ई भाषिक आत्मनिष्ठा हुनकर व्यक्तित्वकेँ स्वाभिमानी आ अस्मिताचेतस बनबै छैन। हुनकर भाषिक आग्रहक एकटा आन्तरिक पक्ष ईहो अछि जे भाषा हुनका लेल मात्र अभिव्यक्तिक साधन नहि, आत्मपहिचानक धरातल अछि। ओ मैथिलीमे लिखबाक निर्णयकेँ कोनो बाहरी आग्रह वा भाषिक आग्रहणक रूपमे नइ देखै छैथ, बल्कि अपन अनुभव-जगतक स्वाभाविक परिणतिक रूपमे देखै छैथ। ऐ प्रकारेँ हुनकर भाषिक निष्ठा मात्र साहित्यिक विकल्प नहि रहिकऽ, व्यक्तित्वक सांस्कृतिक स्वभावक अंग बनि जाइत अछि। तँए प्रश्नोत्तरक अंशसभमे भाषा-चयनक प्रश्न वस्तुतः आत्मबोध, अस्मिता आ रचनात्मक प्रामाणिकताक प्रश्न बनि उद्घाटित होइत अछि।

मुकेश दत्तजीक प्रश्नक उत्तरमे मण्डलजीक जीवनक सामाजिक-सांस्कृतिक वर्गीकरण बुझबाक क्षमता प्रखर रूपसँ सामने अबैत अछि। ओ अपन परिवारक आर्थिक आ सामाजिक स्थितिकेँ विभाजित करैत अपन जन्म-परिवेशकेँ एकटा व्यापक सामाजिक संरचनाक अंगक रूपमे प्रस्तुत

करै छैथ। जइसँ ई बुझाइत अछि जे हुनकर आत्मबोध खाली निजी जीवनक विवरण नहि, समाजशास्त्रीय समझसँ जुड़ल अछि। आशय ई अछि जे मण्डलजी अपन जीवनकेँ केवल व्यक्तिगत सुख-दुखक चश्मासँ नइ देखै छैथ। हुनकर 'स्व' (Self) क पहिचान ओइ समाजक ताना-बाना आ वर्ग-विभाजनसँ अभिन्न अछि। ओ अपन कथा कहैत-कहैत समाजक ओइ अदृश्य नक्शाकेँ उघारि दइ छैथ, जइमे आर्थिक विषमता आ सामाजिक श्रेणीबद्धता स्पष्ट देखाइत अछि।

ऐ अर्थमे मण्डलजीक व्यक्तित्व एकटा 'निरीक्षक-चेतना' सँ ओतप्रोत अछि। ओ स्वयंकेँ ओइ तटस्थ दृष्टि (Objective Vision) सँ देखै छैथ, जइ दृष्टि ओ समाजक अन्य गतिविधिकेँ देखबाक लेल प्रयोग करै छैथ। हुनकर ई 'आत्मावलोकन' (Self-observation) हुनकर प्रश्नोत्तरकेँ एकटा साधारण संस्मरणक स्तरसँ ऊपर उठा कऽ एकटा गम्भीर सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श बना दैत अछि।

ऐ खण्डसभसँ मण्डलजीक परिवर्तन-चेतना सेहो प्रबल रूपेँ उद्घाटित होइत अछि। नवयुवक रचनाकारसभक लेल सन्देश दैत ओ कहै छैथ जे व्यवस्था परिवर्तनक प्रश्न नहि तँ एक दिनमे हल होइत अछि आ ने कोनो एक व्यक्तिक सामर्थ्यसँ पूरा भऽ सकैत अछि। सबहक कल्याणक लेल सभकेँ सम्मिलित प्रयास करए पड़त।

“जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ, आगू बढ़ू” जकाँ वाक्य मण्डलजीक प्रेरक सार्वजनिक स्वरकेँ सामने आनैत अछि। ऐ सम्बोधनमे कोनो थोपल गेल भाषणबाजी नहि, बल्कि सामूहिक जागरणक आत्मीय आग्रह अछि। मण्डलजी नवपीढ़ीकेँ खाली उपदेशक स्वरमे नहि, अपितु एकटा सहभागीक रूपमे सम्बोधित करै छैथ।

ओ ईहो कहै छैथ जे मिथिला सबहक मातृभूमि आ मैथिली सबहक भाषा छी। ऐ कथनमे मण्डलजी मिथिला आ मैथिलीकेँ कोनो जाति, वर्ग, क्षेत्र वा अभिजन-मंडलीक निजी सम्पत्ति नहि मानै छैथ। हुनका लग मातृभूमि आ मातृभाषा साझा सांस्कृतिक अधिकार आ साझा जिम्मेदारी दुनू अछि। तँए मैथिलीप्रेम हुनका लग केवल भावुक आग्रह नहि, बल्कि समावेशी लोक-जवाबदेहीक प्रश्न बनि उठैत अछि। हुनकर ऐ कथनमे

व्यक्तित्वक समावेशी चेतना, सार्वजनिक जिम्मेदारी आ सांस्कृतिक साझेदारीक भाव स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि।

मुकेश दत्तजीक अन्तिम प्रश्नपर मण्डलजी नवयुवककेँ “सन्देशकर्ता” कहै छैथ। ई बहुत अर्थपूर्ण बात अछि। ओ युवा पीढ़ीकेँ केवल सीख ग्रहण करएबला समुदाय नहि मानै छैथ। हुनका लग नवपीढ़ी स्वयं परिवर्तनक वाहक छैथ। “ओ अपन शक्तिकेँ जगा अपनासँ परिचित करथु” कहिकऽ मण्डलजी युवा-चेतनाक स्वायत्त स्वरूप स्वीकार करै छैथ। ऐ प्रकारेँ हुनकर व्यक्तित्व पितृसत्तात्मक निर्देशकारी रूप नहि ग्रहण करैत। ओ प्रेरणादाता छैथ, नियन्त्रणकर्ता नहि। ई मानवीय उदारता आ पीढ़ीगत विश्वास हुनकर व्यक्तित्वक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि।

जीवनवृत्तमे उल्लिखित मण्डलजीक साहित्य-दर्शन प्रश्नोत्तर-परिसंवादमे प्रकट व्यक्तित्वक पुष्टि करैत अछि। “लेखन प्रदर्शन नहि, प्रतिबद्धताक अनुशासित साधना छी”, “हम ओइ लोक लेल लिखै छी जे जीबि रहल छैथ, मुदा बाजि नहि सकैत”, “साहित्यक उद्देश्य मौन पीड़ाकेँ स्वर देब अछि” आ “मैथिली साहित्य जन-संवादक सजग दस्तावेज बनए” जकाँ कथन हुनकर आत्मदृष्टिकेँ सुस्पष्ट करैत अछि। ऐ कथनसभक प्रकाशमे प्रश्नोत्तरक उत्तर पढ़ल जाए तँ बुझाइत अछि जे हुनकर व्यक्तित्वक मूल स्वभाव अनुशासन, प्रतिबद्धता, लोकपक्षधरता आ संवादशीलतापर आधारित अछि। अइमे रचना आ जीवन अलग-अलग बाट नहि पकड़ैत अछि। विचार, कर्म आ लेखन एक-दोसराक पूरक बनैत अछि।

आलोचकसभक मत सेहो ऐ बातक समर्थन करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मूल्यांकनसँ ई बात सुस्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजीक कथ्य आ कर्मक प्रति दृष्टिकोणमे एकत्व अछि। “जे सोचै छी, जे करै छी, सएह लिखै छी।” ऐ मूल्यांकनक महत्त्व ऐ कारण पैघ अछि जे ई मण्डलजीक व्यक्तित्वमे विचार आ व्यवहारक एकत्वक पुष्टि करैत अछि। डॉ. योगानन्द झाक मतानुसार मण्डलजी समानता, स्वतंत्रता आ बन्धुत्वक स्थापना लेल प्रतिबद्ध छैथ आ अज्ञानसँ ज्ञान दिसक यात्रापथपर अपन जीवन आ लेखन दुनूमे जीबै छैथ। ऐ प्रकारक मूल्यांकन प्रश्नोत्तर-परिसंवादमे प्रत्यक्ष रूपेँ प्रकट व्यक्तित्वकेँ पुष्ट करैत अछि। मण्डलजी केवल लिखनिहार नहि, अपन

लिखल बातपर चलएबला, जीबएबला रचनाकारक रूपमे सामने अबै छैथ।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभसँ मण्डलजीक संवादप्रियता स्पष्ट होइत अछि। एतए ओ कठिन प्रश्नसँ कन्नी नहि काटै छैथ। साहित्यक उद्देश्य, मुख्यधारासँ कटाएल महसूस होएबाक प्रश्न, भाषा-चयन, सामाजिक प्रतिनिधित्व, प्रारम्भिक जिनगी, नवपीढ़ीक भूमिका आ व्यवस्था-परिवर्तनपर ओ खुलि कऽ उत्तर दइ छैथ। ऐ खुलापनमे एक प्रकारक नैतिक निर्भीकता निहित अछि। लेखक जखन सार्वजनिक रूपेँ अपन विचार व्यक्त करै छैथ, तखन ओ अपनाकेँ आलोचनाक लेल सेहो प्रस्तुत करैत अछि। मण्डलजी ऐ तैयारीसँ लैस छैथ। ऐ आधारपर हुनकर व्यक्तित्व खुलल, संवादशील, उत्तरदायी आ निडर प्रतीत होइत अछि। ऐ अर्थमे कहल जा सकैत अछि जे हुनका लेल निर्भय जीवन श्रेष्ठ जीवन छी। मण्डलजीक निडरता केवल व्यक्तिगत साहस नहि, सार्वजनिक नैतिकता अछि। जे लेखक असुविधाजनक प्रश्नसँ बचैत नहि आ अपन विचारकेँ परीक्षणक लेल खुला रखैत अछि, से अपन साहित्यिक जीवनकेँ सत्य, विवेक आ समाजक प्रति उत्तरदायी बनबैत अछि।

ऐ अंशसभमे मण्डलजीक लोकसम्बद्ध विद्वत्ता सेहो प्रकट होइत अछि। ओ उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति छैथ। हिन्दी आ राजनीति शास्त्रमे स्नातकोत्तर छैथ। मुदा हुनकर अभिव्यक्ति अकादमिक दुरूहता ग्रहण नहि करैत अछि। ओ गाम, परिवार, जमीन, समाज, भाषा, रचना, व्यवस्था, युवा, सेवा आ मातृभूमि सदृश शब्दसभक माध्यमसँ अपन गहींर विचार रखै छैथ। अही गुण जीवनवृत्तमे उल्लिखित हुनकर लोकबोली-आधारित संवादपरक भाषा-शैलीक पुष्टि करैत अछि। हुनकर व्यक्तित्वक ई पक्ष महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ एतए विद्वत्ता लोकसँ कटैत नहि; लोकसँ जुड़िकऽ अर्थवान बनैत अछि। ओ कठिन सामाजिक वा साहित्यिक प्रश्नोपर विचार करैत काल दुरूह भाषिक आडम्बरक सहारा नहि लइ छैथ। हुनकर कथन-शैलीमे लोकजीवनक सहजता, बोलचालक निकटता आ संवादक आत्मीय लय बनल रहैत अछि। यएह कारण हुनकर उत्तर केवल विचारोत्तेजक नहि, पठनीय आ सम्प्रेषणीय सेहो बनैत अछि। ऐ गुणसँ मण्डलजीक व्यक्तित्वमे विद्वत्ता आ लोकनिकटताक सन्तुलन स्पष्ट रूपेँ

देखाइ पड़ैत अछि।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे उद्घाटित मण्डलजीक व्यक्तित्वक एक सुन्दर विशेषता स्वावलम्बी स्वाभिमान सेहो अछि। ओ अपन माटि, अपन भाषा, अपन समाज आ अपन अनुभवक प्रति गहींर विश्वास रखै छैथ। ओ मैथिलीकेँ अपन विचारक सभसँ स्वाभाविक अभिव्यक्तिक भूमि मानै छैथ। ओ मिथिलाकेँ सबहक मातृभूमि कहै छैथ। ओ नवपीढ़ीकेँ अपन शक्तिकेँ जगबैत अपनासँ परिचित होएबाक प्रेरणा दइ छैथ। ऐ वाक्य-समूहसँ बुझाइत अछि जे हुनकर व्यक्तित्व परनिर्भरतापर आधारित नहि अछि, बल्कि आत्मबलपर आधारित अछि। साहित्यिक साधना, सामाजिक दृष्टि आ भाषिक स्वाभिमान ऐठाम एक सूत्रमे देखाइत अछि। समग्र रूपेँ देखल जाए तँ ऐ प्रश्नोत्तर-परिसंवादक खण्डसभ हुनकर व्यक्तित्वकेँ बाहरसँ परिभाषित नहि करैत, बल्कि भीतरसँ खुलैत व्यक्तित्वक रूपमे सामने आनैत अछि; एतए लेखकक विचार, अनुभव, भाषा आ मानवीय स्वभाव एक-दोसरासँ जुड़ि जाइत अछि।

ऐ अध्यायक निष्कर्ष रूपेँ ई सुस्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनीक प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद खण्डसभ मण्डलजीक व्यक्तित्वक बहुआयामी रूप उद्घाटित करैत अछि। एतए विनम्रता, आत्मीयता, यथार्थपरक आत्मबोध, गामक माटिसँ गहींर जुड़ाव आ साहित्यक प्रति प्रतिबद्धता एकसंग उपस्थित अछि। भाषा-निष्ठा अछि। दबल-कुचलल समाजक पक्षधरता अछि। निष्पक्ष अवलोकन आ समाधानमुखी दृष्टि अछि। नवपीढ़ीक प्रति विश्वास अछि। सार्वजनिक संवाद लेल तत्परता अछि। विचार, कर्म आ लेखनक एकत्व अछि। ऐ सभ कारणेँ ई कहब उचित होएत जे पयस्विनीक प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक अंश जगदीश प्रसाद मण्डलक व्यक्तित्व बुझबाक लेल केवल सहायक सामग्री टा नहि, बल्कि मूल स्रोतक रूपमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ऐ अंशसभमे रचनाकार स्वयं अपन स्वरमे बजै छैथ, आ तइसँ उभरैत व्यक्तित्व आधुनिक मैथिली साहित्यमे एक लोकधर्मी, प्रतिबद्ध, संवादशील आ मानवीय रचनाकारक रूपमे स्थिर होइत अछि। ❑

पयस्विनीक आलोकमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व

✺

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वकेँ बुझबाक लेल केवल हुनकर जीवन-वृत्त, कृतिसूची वा आलोचक लोकनिक मत पर्याप्त नहि अछि। रचनाकारक असल वैचारिक स्वर ओइ ठाम बेसी स्पष्ट होइत अछि जेतए ओ प्रत्यक्ष रूपेँ अपन प्रश्न, असहमति, विश्वास, सामाजिक पक्षधरता आ सांस्कृतिक आग्रह व्यक्त करै छैथ। पयस्विनी ऐ अर्थमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पोथी छी। अइमे संकलित वैचारिक लेख, सांस्कृतिक विवेचन, सामाजिक प्रतिरोध, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद मिलि कऽ हुनकर भीतरक चिन्तककेँ सामने आनैत अछि। एतए ओ केवल कथाकार वा उपन्यासकार नहि, बल्कि सजग, तर्कशील, लोकसम्बद्ध आ सामाजिक रूपेँ उत्तरदायी वैचारिक व्यक्तित्वक रूपमे उभरै छैथ। कथा वा उपन्यासमे लेखकक विचार पात्र, कथानक वा स्थितिक भीतर रहि सकैत अछि। मुदा प्रश्नोत्तर, सामाजिक लेख, सांस्कृतिक विवेचन आ सार्वजनिक वक्तव्यसभमे लेखक स्वयं अपन स्वरमे बजै छैथ। ओइ कारण ऐ पोथीमे हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वक ओ रूप उद्घाटित होइत अछि जे आत्मसजग, विचारोन्मुख आ सार्वजनिक रूपेँ उत्तरदायी अछि।

मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक मूल आधार लोकजीवन अछि। हुनकर जीवन-दृष्टिक निर्माण पुस्तकालयक शुष्क ज्ञानसँ नहि, बल्कि गाम, खेती, श्रम, सामुदायिक सम्बन्ध, सामाजिक विषमता आ लोकानुभवक निरन्तर संसर्गसँ भेल अछि। हुनकर सामाजिक परिचय आत्मनिर्भर

कृषकक रूपमे सर्वविदित अछि। खेतीकेँ ओ समाज-निर्माणक आधार मानै छैथ। एहेन जीवनभूमिसँ निकलल विचार स्वाभाविक रूपेँ माटिसँ जुड़ल, अनुभवसिद्ध आ सामाजिक रहैत अछि। तइ कारण हुनकर चिन्तन अमूर्त दार्शनिक भाषामे समटाएल नहि रहैत अछि। ओ लोकजीवनक ठोस यथार्थक आधारपर विकसित होइत अछि। पयस्विनीक भीतर ई लोकसम्बद्ध वैचारिक आधार निरन्तर सक्रिय देखि पड़ैत अछि। ऐठाम विचार जीवनसँ बाहर पैदा नहि होइत अछि, बल्कि जीवनक भीतरसँ उगैत अछि; अही कारण मण्डलजीक वैचारिक स्वरमे जमीनक गन्ध आ सामाजिक यथार्थक ताप एकसंग अनुभव होइत अछि।

ऐ लोकसम्बद्धताक संग मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक दोसर केन्द्रीय गुण तर्कशीलता अछि। 'अवतारवाद' मे ओ धार्मिक मिथक, अवतार-कल्पना, शास्त्रीय परम्परा आ नैतिक प्रश्नक सम्बन्धमे जइ प्रकारेँ एकक पछाइत दोसर प्रश्न उठबै छैथ, तइसँ हुनकर चिन्तनक मूल स्वभाव बुझाइत अछि। ओ मात्र श्रद्धा-आधारित पारम्परिक स्वीकृतिपर सन्तुष्ट नइ छैथ। ओ पुछै छैथ, परखै छैथ, तर्कक कसौटी लगबै छैथ, आ नैतिक परिणामक परीक्षण सेहो करै छैथ। ई तर्कशीलता केवल निषेधक मुद्रा नहि अछि। अइमे मानवीय विवेकक पुनर्स्थापनाक आग्रह निहित अछि। ई गुण हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वकेँ निर्भीक, स्वायत्त आ आलोचनात्मक सिद्ध करै छैन। ओ मान्यताकेँ मात्र परम्परागत सम्मानक आधारपर स्वीकार करबाक पक्षमे नइ छैथ; हुनका लेल विचारक मूल्य तखन अछि जखन ओ परीक्षणक योग्य हो।

मण्डलजी प्रश्न मात्र बौद्धिक विलास वा दर्शनक शास्त्रार्थ लेल नहि करै छैथ, बल्कि ओकरा पाछां एकटा नैतिक उद्देश्य रहै छैन। ओ ई देखए चाहै छैथ जे कोनो विचार वा परम्परा मानवता आ न्यायक कसौटीपर केतेक खरा उतरैत अछि। हुनकर व्याकुलता (प्रश्नाकुलता) सत्यक अन्वेषण आ समाजक नैतिक उत्थानक लेल प्रतिबद्ध अछि। हुनका लेल कोनो विचारक मान्यता तखने अर्थपूर्ण होइछ जखन ओ मनुक्खक गरिमा, न्यायबोध आ जीवनक सत्यसँ मेल खाए। यएह कारण अवतारवादक आलोचना करैत ओ

अन्ततः मनुक्खक आत्मबल, विवेक आ नैतिक स्वाधीनताक महत्त्वकेँ प्रतिष्ठित करै छैथ। ई दृष्टि बतबैत अछि जे मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक केन्द्रमे मनुक्ख अछि। कल्पित चमत्कार, अन्धविश्वास, मिथकीय दमन वा धार्मिक आडम्बर हुनका लेल विचारक अन्तिम बिन्दु नहि, बल्कि आलोचनाक विषय अछि। ऐ प्रकारेँ ओ विवेकप्रधान लोकचिन्तक रूपमे सामने अबै छैथ। तर्क एतए मात्र बौद्धिक कसरत नहि, मानवीय मुक्ति आ नैतिक स्पष्टताक साधन बनि जाइत अछि।

सांस्कृतिक स्तरपर मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व समान रूपेँ सजग आ गहींर छैन। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे ओ मिथिलाक संस्कृतिकेँ श्रद्धाभरि स्थिर इकाइक रूपमे नइ देखै छैथ। ओ संस्कारक शास्त्रीय अर्थ, सामाजिक प्रयोजन, जातिगत भिन्नता आ मौखिक परम्परासँ जुड़ल ऐतिहासिक प्रक्रिया सभपर विचार करै छैथ। ऐ लेखसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे हुनका लेल संस्कृति संग्रहालयक वस्तु नहि, बल्कि जीवित समाजक व्यवहार, स्मृति आ संरचना छी। ओ परम्पराकेँ मात्र स्मृति स्वरूप सुरक्षित नहि राखैत छैथ, बल्कि ओकर भीतर व्याप्त सत्ता आ शक्ति-सम्बन्धक सूक्ष्म पड़ताल सेहो करैत छैथ। फलस्वरूपेँ हुनकर वैचारिक व्यक्तित्व लोकधर्मी सांस्कृतिक विवेकसँ सम्पन्न प्रतीत होइत अछि। आ तँए हुनका लेल संस्कृति केवल गौरवगानक विषय नहि रहिकऽ परीक्षण, पुनर्पाठ आ सामाजिक सूझ-बूझक क्षेत्र सेहो अछि।

लोकजीवनक प्रति सम्मान आ परम्पराक आलोचनात्मक पुनर्पाठ, ई दू गुण मण्डलजीकेँ सांस्कृतिक दृष्टिए विशिष्ट बनबै छैन। ओ मैथिल संस्कृतिकेँ निर्विवादक रूपमे स्वीकार नहि करै छैथ। मूलवासी समाज, द्विज वर्चस्व, लोकधर्म, संस्कार-व्यवस्था आ व्यावहारिक विविधताक माध्यमसँ ओ देखबै छैथ जे संस्कृति सत्ताक प्रभाव, लोकजीवनक जीबटता आ ऐतिहासिक घालमेलक सम्मिलित परिणाम होइत अछि। ऐ प्रकारक सोचसँ हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वमे एक तरफ लोकसंवेदना अछि, तँ दोसर तरफ आलोचनात्मक इतिहासबोध सेहो। अही सन्तुलनक कारण हुनकर सांस्कृतिक चिन्तन ने तँ अन्धश्रद्धाक अंग बनैत अछि आ ने मात्र

वितण्डावादी निषेध; बल्कि ई एकटा विवेकपूर्ण आ रचनात्मक पुनरावलोकनक रूप धारण करैत अछि।

मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक सभसँ उज्ज्वल पक्ष हाशियाक समाजक प्रति हुनकर पक्षधरता अछि। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' मे ओ ई तथ्य रेखांकित करैत छैथ जे भाषा, साहित्य, संस्कृति आ समाजक अन्तःसम्बन्धक बीच सत्ता-वर्चस्वक एकटा सूक्ष्म संरचना सक्रिय रहैत अछि। बहुसंख्यक लोकजीवन, विस्मृत समाज, उपेक्षित समुदाय आ सामाजिक न्यायसँ वंचित मनुक्खक प्रश्न हुनकर चिन्तनक प्रस्थान-बिन्दु छी। साक्षात्कारक क्रममे ओ स्पष्टताक संग स्वीकार करै छैथ जे मैथिली साहित्यक एकटा वृहद् हिस्सा अखनो धरि मुख्यधारासँ 'बाहर' अछि; अतः अपन रचनामे हुनकर सतत प्रयास रहल अछि जे ओइ उपेक्षित समाजकेँ सृजनक केन्द्रमे स्थापित कएल जाए। एतए हुनकर साहित्यिक चयन वस्तुतः एकटा नैतिक प्रतिबद्धता बनि जाइत अछि। ओ साहित्यक परिधिपर ठाढ़ ओइ लोककेँ केन्द्रमे आनए चाहै छैथ, जेकरा मुख्यधाराक सृजन आ आलोचना निरन्तर हाशियापर राखने अछि।

ऐ पक्षधरताकेँ मात्र साहित्यिक अभिरुचि मानब पर्याप्त नहि होएत; ई वस्तुतः मण्डलजीक सामाजिक न्यायबोधक प्रस्थान-बिन्दु छी। हुनका दृष्टिमे साहित्यक सार्थकता तखने सिद्ध होइत अछि, जखन ओ समाजक अदृश्य, मौन, दमित आ उपेक्षित जीवनकेँ स्वर प्रदान करैत अछि। हुनकर जीवनवृत्तमे समाहित साहित्य-दर्शन ऐ तथ्यक सशक्त पुष्टि करैत अछि। 'हम ओइ लोक लेल लिखै छी जे जीबि रहल छैथ, मुदा बाजि नहि सकैत' आ 'साहित्यक उद्देश्य मौन पीड़ाकेँ स्वर देब अछि' जकाँ कथन मात्र भावुक उद्गार नहि, बल्कि हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वक नैतिक आधार-सूत्र छी।

ऐ अर्थमे मण्डलजीक चिन्तन जनपक्षीय आ नैतिक- दुनू अछि। हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वक एक महत्त्वपूर्ण धुरी 'साहित्यक लोकतंत्रीकरण' अछि। हुनका लेल साहित्यक उद्देश्य तखन पूर्ण होइत अछि, जखन ओ केवल कतिपय प्रतिष्ठित वर्गक संवेदना धरि सीमित नहि रहि, विस्मृत आ कम-प्रतिनिधित्व प्राप्त समाजक अनुभवकेँ सेहो अभिव्यक्तिक

केन्द्रमे आनए। अही कारण ओ साहित्यिक प्रतिनिधित्वकेँ मात्र सौन्दर्यबोधक सीमित प्रश्न नहि मानै छैथ; ई हुनका लेल सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक भागीदारी आ मानवीय गरिमाक अपरिहार्य प्रश्न बनि जाइत अछि। ऐ दृष्टिसँ हुनकर वैचारिक व्यक्तित्व केवल संवेदनशील नहि, बल्कि परिवर्तनमुखी आ सामाजिक पुनर्संतुलनक एक सशक्त पक्षधरक रूपमे उभरैत अछि।

मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक एक महत्त्वपूर्ण आयाम भाषाक निष्ठा अछि। प्रश्नोत्तर आ सामाजिक लेखनसभसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली हुनका लेल मात्र संवादक माध्यम नहि, अपितु आत्म-अभिव्यक्तिक स्वाभाविक भूमि अछि। ओ भाषा आ साहित्यक भेद अवश्य करै छैथ, मुदा दुनूकेँ सामाजिक जीवनक अभिन्न हिस्सा मानि कऽ रखै छैथ। हुनका दृष्टिमे भाषा संवादक सेतु अछि तँ साहित्य समाजक जीवन्त दर्पण। अही द्वैत-चेतनामे हुनकर भाषिक व्यक्तित्व प्रखर होइत अछि।

ओ जनभाषाक प्रतिष्ठा, क्षेत्रीय विविधता, लोकबोलीक स्वाभाविकता आ भाषिक लोकतंत्रीकरणक प्रबल पक्षधर छैथ। तँए मण्डलजीक भाषा-निष्ठा मात्र भावनात्मक आग्रह धरि सीमित नहि रहिकऽ सामाजिक आ सांस्कृतिक स्वाभिमानक एकटा सचेत रूप धारण कऽ लैत अछि। हुनकर भाषिक आग्रहक एक आन्तरिक पक्ष ईहो अछि जे भाषा अभिव्यक्तिक साधनसँ आगाँ बढ़ि आत्मपहिचानक धरातल बनैत अछि। ओ मैथिलीकेँ अपन विचारक बाह्य उपकरणक रूपमे नहि देखै छैथ; हुनका लेल ई अपन अनुभव-संसारकेँ प्रकाशित करयवाला स्वाभाविक आ अभिन्न ज्योति अछि। यएह कारण भाषा-चयन हुनका लेल सुविधा, अवसर वा प्रतिष्ठाक विषय नहि रहि जाइत अछि, बल्कि ओ रचनात्मक प्रामाणिकता, सांस्कृतिक अस्मिता आ आत्मिक स्वाभाविकताक प्रश्न बनि जाइत अछि। अतः ई भाषिक निष्ठा हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वकेँ दृढ़ताक संग एकटा स्वाभिमानी आयाम प्रदान करैत अछि।

मण्डलजीक सामाजिक दृष्टिमे भाषा आ साहित्यक भेद विशेष महत्त्व रखैत अछि। हुनका अनुसार साहित्य समाजक दर्पण अछि, जखन

कि भाषा मनुक्ख-मनुक्खक बीच संवाद स्थापित करबाक माध्यम। ई साधारण भेद नहि, बल्कि प्रतिनिधित्वक प्रश्नक मूलाधार अछि। भाषा समाजक विभिन्न वर्गसभमे थोड़-बहुत अलग-थलग रूपमे भऽ सकैत अछि, मुदा साहित्यक प्रश्न एतए उठैत अछि जे ओ केकर जीवनकेँ केन्द्रमे आनैत अछि आ केकर अनुभवकेँ बाहर छोड़ि दैत अछि। ऐ बिन्दुपर मण्डलजी हाशियाक समाजक प्रश्नकेँ मात्र भाषिक रूपान्तरक प्रश्न नहि रहए दइ छैथ, बल्कि प्रतिनिधित्व, स्मृति आ सांस्कृतिक भागीदारीक प्रश्नमे बदैल दइ छैथ। ओइ कारण भाषा-विचार हुनका लग केवल व्याकरण वा रूप-विन्यासक विषय नहि रहिकऽ, सामाजिक न्याय आ सांस्कृतिक हिस्सेदारीक प्रश्न बनि जाइत अछि।

मूल लेखमे मण्डलजी भाषाक इतिहासकेँ सेहो वर्चस्व आ प्रतिरोधक दृष्टिसँ देखै छैथ। हुनक कथनानुसार जनभाषा वैदिक रूपमे प्रकट भेल, पछाइत परिमार्जित होइत लौकिक संस्कृत बनल, मुदा जखन ई बहुसंख्य जनमानससँ दूर भऽ गेल, तखन पालीक उदय भेल; फेर पालीकेँ जनजीवनसँ कटिते अपभ्रंशक स्थापना सम्भव भेल। ऐ विकास-क्रमक उल्लेखक माध्यमसँ मण्डलजी कहै छैथ जे भाषा केवल व्याकरणिक संरचना नहि, बल्कि सामाजिक पहुँच आ जनसम्बन्धपर निर्भर सत्ता-रचना सेहो अछि। अतः हाशियाक समाजक विमर्शमे भाषाक प्रश्न केन्द्रीय अछि, किएक तँ भाषा जखन तक जनसमुदायक निकट रहैत अछि, तखने तक ओकर सामाजिक जीवन्तता सुरक्षित रहैत अछि। भाषाक इतिहासकेँ ऐ रूपेँ पढ़ब वस्तुतः समाजक इतिहासकेँ पढ़ब छी।

भाषा सम्बन्धी मण्डलजीक सोच हुनकर वैचारिक व्यक्तित्वक लोकतांत्रिक पक्षकेँ स्पष्ट करैत अछि। ओ भाषाकेँ एकरूपी सत्ता नहि मानै छैथ, बल्कि समाजक विविध परतसँ बनल जीवित संरचना रूपमे देखै छैथ। परिनिष्ठित भाषा-बोधक अहंकारक विरोध आ लोक-व्यवहारसँ जुड़ल भाषा-चेतना हुनकर जनपक्षधर दृष्टिक स्वाभाविक विस्तार अछि। ऐ प्रसंगक विस्तृत विवेचन आगाँ भाषा, शैली, तर्क-पद्धति आ गद्य-सौष्ठव सम्बन्धी अध्यायमे कएल गेल अछि। सातम अध्यायक सन्दर्भमे मुख्य बात

ई अछि जे मण्डलजी भाषा केँ केवल अभिव्यक्तिक माध्यम नहि मानै छैथ; ओकरा लोकजीवनक अनुभव, स्मृति आ सामाजिक सहभागिताक आधार रूपमे ग्रहण करै छैथ।

साहित्य-दर्शनक स्तरपर मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व अत्यन्त स्पष्ट, संयत आ उत्तरदायी अछि। "लेखन प्रदर्शन नहि, प्रतिबद्धताक अनुशासित साधना छी" जकाँ कथन बतबैत अछि जे हुनका लेल लेखन आत्म-प्रदर्शन, वैभव-प्रदर्शन वा बौद्धिक आडम्बरक साधन नहि। लेखन एक नैतिक श्रम अछि। ऐ श्रमक लक्ष्य समाजक भीतर मौन पीड़ा, कतियाएल लोकक, लोकजीवनक दबा देल अनुभव आ जन-संवादक आवश्यकताकेँ अभिव्यक्ति देब अछि। साहित्यकेँ ओ समय, समाज आ मानवीय उत्तरदायित्वक संग जोड़ै छैथ। ऐ दृष्टिसँ हुनकर वैचारिक व्यक्तित्व लेखकक छवि सामाजिक जिम्मेदारीसँ युक्त बौद्धिक मनुक्खक रूपमे उभरैत अछि। अहीठाम हुनकर लेखन-साधना आ जीवन-साधना एक-दोसराक पूरक बनैत देखाइ पड़ैत अछि।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक अंशसभ मण्डलजीक संवादधर्मिताकेँ विशेष रूपेँ उद्घाटित करै छैन। ओ कठिन प्रश्नसँ बँचैक कोशिश नइ करै छैथ; अपन स्थिति स्पष्ट करै छैथ, साहित्यक आलोचना करै छैथ, मैथिल समाजक सीमासभ स्वीकार करै छैथ आ नवपीढ़ीक प्रति आशा प्रकट करै छैथ। संघर्ष, परिवर्तन, भाषा, समाज, प्रतिनिधित्व, परम्परा, व्यवस्था, शिक्षा आ जन-सरोकारपर सेहो ओ खुलि कऽ विचार रखै छैथ। ऐ खुलापन हुनका सार्वजनिक बौद्धिक व्यक्तित्व प्रदान करैत अछि। ओ एकान्तमे सीमित रहएबला लेखक नइ छैथ। ओ समाजसँ बात करएबला, प्रश्न लेल उपस्थित, आ असहमतिक सामने सेहो ठाढ़ रहएबला चिन्तक छैथ। संवादधर्मिता मात्र वैचारिक स्पष्टताक परिचायक नहि; ई हुनकर मानवीय उदारता आ लोकतान्त्रिक व्यक्तित्वक सूचक सेहो अछि। जखन लेखक कठिन प्रश्नसँ कन्नी नहि काटि, असहमतिक सम्भावनाकेँ स्वीकार करैत अछि आ अपन स्थिति खोलि कऽ रखैत अछि, तखन ओ सार्वजनिक नैतिकता निर्वाह करएबला मनुक्खक रूपमे सामने अबैत अछि। अहू रूपमे

हुनकर व्यक्तित्वमे संवादप्रियता, उत्तरदायित्व आ नैतिक निर्भीकता एक-दोसरासँ जुड़ल अछि।

ऐ संवादधर्मिताक संग मण्डलजीक व्यक्तित्वमे आत्मालोचनक क्षमता सेहो विशेष रूपेँ देखाइत अछि। मैथिली साहित्य "एकभग्गू" भऽ गेल अछि, समाजक अधिकांश हिस्सा कटिकऽ कतिया गेल अछि, एहेन स्पष्ट कथन बिना आत्मालोचनक सम्भव नहि। मण्डलजी स्वयं मैथिली साहित्य-समाजक भीतर छैथ, मुदा तइसँ मोहित नइ छैथ। ओ ओकर सीमा देखै छैथ, ओकर दोष कहै छैथ, आ ओकर परिवर्तनक आवश्यकताकेँ रेखांकित करै छैथ। ऐ आधारपर कहि सकै छी जे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व आत्ममुग्ध नहि, आत्मसजग छैन। ओ आत्मालोचनकेँ साहित्यिक विनयक भावुक मुद्रा नहि बनबै छैथ, बल्कि सुधार, पुनर्संतुलन आ वैचारिक ईमानदारीक आवश्यक शर्तक रूपमे ग्रहण करै छैथ।

मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्वक एक अन्तःसूत्र परिवर्तन-चेतना अछि। यद्यपि पयस्विनीक प्रत्येक लेख अलग विषयक अछि, तथापि ओकर भीतरी दिशा समाजक बदलाव, सांस्कृतिक पुनर्विचार, भाषिक जागरण, लोकपक्षीय साहित्यिक पुनर्संतुलन आ सामाजिक न्यायक दिशामे देखाइत अछि। ओ अतीतक चरचा करै छैथ, मुदा अतीतमे फँसै नइ छैथ। ओ परम्पराकेँ सेहो पढ़ै छैथ, मुदा वर्तमानक कसौटीपर। ओ समाजक दोष सेहो देखै छैथ, मुदा निराश भऽ कऽ नहि। "जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ, आगू बढ़ू" जकाँ आवाहन हुनकर वैचारिक स्वभावक गतिशील पक्षकेँ सामने आनैत अछि। ऐ कारण हुनकर चिन्तन स्थिर समीक्षा नहि, परिवर्तनमुखी लोक-विचार बनि जाइत अछि। एतए आलोचना आ आशा परस्पर विरोधी नहि, बल्कि एक्के परिवर्तनशील दृष्टिक दू रूप बनि प्रकट होइत अछि।

समग्र पयस्विनी पढ़लापर ई अनुभव होइत अछि जे मण्डलजीक वैचारिक व्यक्तित्व केवल विचारक स्तरपर निर्मित नहि अछि। अइमे जीवन-अनुभव, सामाजिक संघर्ष, भाषिक निष्ठा आ सांस्कृतिक सजगताक संग नैतिक उत्तरदायित्व सेहो एक-दोसरासँ जुड़ल रहैत अछि। फलस्वरूप

हुनकर वैचारिक स्वर अकादमिक दुरूहता वा पाण्डित्य-प्रदर्शनकेँ ग्रहण नहि करैत, व्यवहार, अनुभव आ जनजीवनक माटिसँ जुड़ल रहैत अछि। एतए लेखकक वैचारिक निष्कर्ष, जीवन-दृष्टि आ सामाजिक पक्षधरता कोनो पृथक धरातलपर ठाढ़ नहि देखाइत; ओ हुनकर एकात्म व्यक्तित्वक पूरक आ सुसंगत अभिव्यक्ति रूपमे परिलक्षित होइत अछि।

समग्र रूपेँ देखल जाए तँ पयस्विनीक आलोकमे मण्डलजीक जे वैचारिक व्यक्तित्व उद्घाटित होइत अछि, से एकाङ्गी नहि देखाइत। ओ बहुआयामी, लोकसम्बद्ध, तर्कशील, सांस्कृतिक रूपेँ सजग आ जनपक्षधर व्यक्तित्वक रूपमे स्थापित होइत अछि। ओ लोकसम्बद्ध छैथ। ओ तर्कशील छैथ। ओ सांस्कृतिक रूपेँ सजग छैथ। ओ सामाजिक न्यायक पक्षधर छैथ। ओ मातृभाषाक प्रति निष्ठावान छैथ। ओ संवादधर्मी छैथ। ओ आत्मालोचनसँ सम्पन्न छैथ। ओ लेखनकेँ नैतिक दायित्व मानै छैथ। ओ वंचित समाजकेँ साहित्यक केन्द्रमे आनबाक प्रयत्नशील चिन्तक छैथ। ऐ प्रकारेँ हुनकर वैचारिक व्यक्तित्व आधुनिक मैथिली साहित्यमे ऐ तरहेँ स्थापित होइत अछि जेतए लोकजीवन, प्रतिरोध, भाषा, संस्कृति आ जन-सम्बद्ध नैतिकता एक-दोसरासँ अभिन्न अछि। अत: कहल जा सकैए जे पयस्विनी ऐ अभिन्न वैचारिक व्यक्तित्वक सभसँ सघन पाठ छी। ❑

पयस्विनीक भाषा, शैली, तर्क-पद्धति आ गद्य-सौष्ठव

✳

पयस्विनीक साहित्यिक महत्त्व केवल एकर विषय-विस्तारमे सीमित नहि अछि, वरण ऐ पोथीक वास्तविक शक्ति एकर भाषा, शैली, तर्क-पद्धति आ गद्य-सौष्ठवमे निहित अछि। कोनो रचनाकारक वैचारिक सामग्री मजगूत हो, एतेक भरिसँ पाठकपर स्थायी प्रभाव स्वतः उत्पन्न नहि होइत। प्रभाव तखने सम्भव होइत अछि जखन विचारक अनुरूप भाषा मिलैत अछि, शैली विचारक भार वहन करैत अछि, तर्कक क्रम स्पष्ट रहैत अछि, आ गद्य अपन आन्तरिक गरिमा बनौने रहैत अछि। पयस्विनी ऐ चारू दृष्टिसँ विचार करबाक योग्य कृति छी। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक सन्दर्भमे हुनकर भाषा-शैलीकेँ “सजीव, लोकबोली-आधारित, संवादपरक” कहि रेखांकित कएल गेल अछि। संगहि हुनकर अनुशासन, शुद्धलेखन, नियमित पुनर्पाठ आ शब्द-गणनाक अभ्यासक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। ई सभ तथ्य स्पष्ट करैत अछि जे पयस्विनीक गद्य संयोगक उपज नहि, बल्कि दीर्घ साधना, सजगता आ अनुशासित रचनात्मक व्यवहारक परिणाम छी।

सभसँ पहिने पयस्विनीक भाषापर विचार करब आवश्यक अछि। मण्डलजीक भाषा जनजीवनसँ उपजल भाषा अछि। अइमे लोकबोलीक लोकगन्ध, व्यवहारक सहजता, संवादक त्वरा आ विचारक स्पष्टता एकसंग भेटैत अछि। ओ शुष्क दार्शनिक शब्दाडम्बरक आश्रय नहि लइ छैथ। हुनका लग शब्दक चयन एहेन ढंगसँ होइत अछि जे रचना आ पाठकक बीच कोनो

दूरी नहि रहि जाइत; भाषा सीधे पाठकक अनुभव, संवेदना आ विचार-क्षेत्रमे प्रवेश कऽ जाइत अछि। 'अवतारवाद'क आरम्भिक विन्यास देखल जाए तँ "जीव आ ईश्वर" जकाँ सरल पदबंधक बाद एकदम सीधा प्रश्न उठैत अछि। देह धारण करब, जन्म लेब, मरब, सर्वव्यापक होएब, हत्या करब, छल करब, भीख माँगब आदि ई सभ एहेन व्यावहारिक शब्द छी जे पाठकक अनुभव-क्षेत्रसँ बाहर नहि अछि। एही कारण मण्डलजीक दार्शनिक विमर्श दुरूह नहि बनैत; ओ जनभाषिक तर्कक रूप धारण करैत अछि। विचार आ भाषा बीच कोनो कृत्रिम अन्तराल नहि रहैत।

मण्डलजी भाषाक सैद्धान्तिक समझ सेहो रखै छैथ। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' लेखमे ओ स्पष्ट कहै छैथ जे साहित्य समाजक दर्पण छी आ भाषा एक-दोसराक बीच संवाद स्थापित करैक माध्यम। ऐ कथनसँ हुनकर भाषिक दृष्टि उद्घाटित होइत अछि। तैसंग ईहो बुझाइत अछि जे भाषा हुनका लेल केवल अभिव्यक्तिक साधन नहि छी, बल्कि ई सामाजिक सम्बन्ध, अनुभव-प्रेषण आ सामुदायिक उपस्थिति-निर्माणक आधार छी। जनभाषासँ वैदिक रूप, तइसँ लौकिक संस्कृत, तदनन्तर पाली आ अपभ्रंश धरि भाषिक विकासक जे रूपरेखा ओ रखै छैथ, तइसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे भाषापर हुनकर विचार ऐतिहासिक, सामाजिक आ जनपक्षीय अछि। ओ भाषाकेँ जीवित प्रक्रिया मानै छैथ। भाषा समयक संग बदलैत अछि। क्षेत्रक हिसाबसँ रूप ग्रहण करैत अछि। जन-समुदायसँ कटि गेलापर भाषा अपन स्वाभाविक प्रवाह, लोकस्वीकृति आ संवादक शक्ति गमा दैत अछि; फलतः ओकर विरोध वा अस्वीकार स्वाभाविक बनि जाइत अछि। एही कारण पयस्विनीक भाषा-चिन्तन कोनो स्थिर, गतिहीन आ एकरूपी शुद्धतावादपर आधारित नहि अछि, बल्कि भाषाक जीवित प्रवाह, लोक-व्यवहार आ बहुरूपी विकासपर आधारित अछि।

ऐ भाषिक दृष्टिक व्यावहारिक रूप मण्डलजीक शैलीमे सेहो देखाइ पड़ैत अछि। ओ परिनिष्ठित भाषा-बोधक अहंकारक विरोध करै छैथ। क्षेत्रीय मैथिली, जातिगत बोली-वाणी आ सामाजिक जीवनक भाषिक अन्तरक

चरचा करैत ओ कहै छैथ जे एक गाम-समाजमे जँ अनेक जातिक लोक छैथ तँ सभक बोली-वाणी आ सामाजिक जीवनमे अन्तर रहबे करत। ऐ तरहक टिप्पणी बतबैत अछि जे मण्डलजी भाषिक एकरूपताक वर्चस्वकेँ स्वीकार नहि करै छैथ। हुनकर भाषा-संवेदना लोकतांत्रिक अछि। ओ भाषाक भीतर लोकजीवनक विविधता सुनै छैथ। तँए पयस्विनीक भाषा औपचारिकता आ जीवित अभिव्यक्तिक बीच सन्तुलन बनौने रहैत अछि। लिखित गद्य होइतो एकर भीतर बाजल जनजीवनक लय सुनाइ पड़ैत अछि। अही कारण पाठककेँ ई भाषा अप्पन लगैत अछि।

मण्डलजीक भाषा-शैलीकेँ “dialogue-oriented, rooted in folk idiom and everyday speech” रूपमे चिह्नित कएल गेल अछि। ई मूल्यांकन पयस्विनीपर पूर्ण रूपेँ लागू होइत अछि। ऐ पोथीक बहुतो गद्यांश एहेन अछि जेतए लिखित निबन्ध आ बाजल विचारक बीचक दूरी घटि जाइत अछि। वाक्य-रचना जँ केतौ शास्त्रीय संयम धारण करैत अछि, तँ तुरन्त ओकर पाछाँ कोनो बोलचालक मुहावरा, प्रश्न, उदाहरण, कहबी वा प्रतिप्रश्न सेहो आबि जाइत अछि। ई विन्यास गद्यकेँ कठोर नहि होमए दैत अछि। एकर स्वर मानवीय बनल रहैत अछि। पाठककेँ अनुभव होइत अछि जे कोनो जीवनसाक्षी रचनाकार अपन बात निधोख कहि रहल छैथ। ऐ संवादपरकतासँ पयस्विनीक भाषा आन्तरिक आत्मीयता प्राप्त करैत अछि। एतए विद्वत्ता पाठकपर थोपल नहि जाइत; ओ संवादक रूपेँ खुलैत अछि।

आब जगदीश प्रसाद मण्डलजीक शैलीपर विचार करब आवश्यक अछि। हिनकर शैलीक पहिल गुण प्रत्यक्षता अछि। ओ घुमा-फिरा कऽ नहि कहै छैथ। जेकरा लऽ कऽ प्रश्न अछि, तैपर सीधा आँगुर रखै छैथ। ‘अवतारवाद’मे एकक पछाइत दोसर प्रश्नक माला जकाँ शैली विकसित होइत अछि। ईश्वर सर्वदयालु छैथ तँ हिंसा केना? सर्वव्यापक छैथ तँ अबै-जाइक आवश्यकता कोन? वामनावतार छलक रूप किएक धारण करैत अछि। एहेन प्रश्न-आधारित शैली पाठकक भीतर आलोचनात्मक जागरण उत्पन्न करैत अछि। अइमे वक्रता कम, तर्कधर्मी सीधापन बेसी अछि। ऐ

सीधापनक कारण गद्य स्मरणीय बनैत अछि। पाठक हिनक विचारकेँ बुझैसँ बाज नहि जा सकैत। प्रश्न वाक्य-संरचनाक भीतर सक्रिय शक्ति बनि जाइत अछि।

दोसर महत्त्वपूर्ण शैलीगत गुण विचार आ अनुभवक मिश्रण अछि। मण्डलजी शास्त्रीय सन्दर्भ दइ छैथ, मुदा शास्त्रपर अँटकै नइ छैथ। 'अवतारवाद'मे 'शतपथ ब्राह्मण', 'तैत्तिरीय संहिता', 'ऐतरेय ब्राह्मण', पुराण, भागवत आदिक उल्लेखक संग ओ वर्तमान मानवीय विवेकक कसौटक प्रयोग करै छैथ। "हम सभ एक्कैसम शताब्दीक समर्थ चेतना छी" जकाँ वाक्य शैलीक दार्शनिक मोड़ चिन्हित करैत अछि। ऐ शैलीमे परम्परा आ वर्तमानक बीच एक जीवित मुठभेड़ घटित होइत अछि। लेखक इतिहास बतबै छैथ, तत्क्षण ओइ इतिहासक नैतिक परिणाम पुछै छैथ। तँए प्रस्तुत गद्य विचारक संग्रह मात्र नहि रहिकऽ, वैचारिक टकरावक सक्रिय क्षेत्र बनि जाइत अछि।

तेसर शैलीगत विशेषता लोकधर्मी व्याख्यात्मकता अछि। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे मण्डलजी एकरा बेस स्पष्ट रूपमे प्रस्तुत करै छैथ। पहिने संस्कारक अर्थ स्पष्ट करै छैथ। पाछाँ ओ शास्त्रीय अर्थसँ सामाजिक अर्थक दिशामे बढ़ै छैथ। तत्पश्चात् मिथिलाक व्यावहारिक जीवनमे उपनयन, मुड़न, विवाह, मृत्यु, गीत, जातिगत भिन्नता, स्त्रीक भागीदारी, लोक-परम्परा आदिक रूप सामने आनै छैथ। ऐ शैलीमे अवधारणा आ उदाहरण प्राय: संग-संग चलैत अछि। पाठककेँ परिभाषा सेहो भेटैत अछि, स्थिति सेहो आ ओकर सामाजिक अर्थ सेहो। ई व्याख्यात्मक सन्तुलन मण्डलजीक शैलीकेँ शोधोपयोगी बनबैत अछि। ओ केवल कहै नइ छैथ; बल्कि खोलि कऽ बुझबैक प्रयास सेहो करै छैथ।

चारिम शैलीगत गुण संवादात्मकता अछि। आ से केवल प्रश्नोत्तर-खण्ड टामे नहि, सम्पूर्ण पयस्विनीक रचनात्मक बनावटमे ई गुण भेटैत अछि। प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद तँ प्रत्यक्ष रूपमे संवादात्मक अछि। मुदा निबन्धसभमे सेहो लेखक प्रश्नक आश्रय लइ छैथ, काल्पनिक पाठकसँ बात करै छैथ, कहबी, उदाहरण, अनुभव, प्रतिप्रश्न आ लोक-सम्बोधनक प्रयोग

करै छैथ। यएह कारण गद्य शुष्क अकादमिक निबन्ध नहि बनैत। ई लोक-सभामे बाजल जा रहल, सुनल जा रहल, फेर लिखि सुरक्षित कएल जा रहल विचार-जकाँ प्रतीत होइत अछि। एही कारण पयस्विनीक सार्वजनिकता आ पठनीयता दुनू बढ़ैत अछि। पाठक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता बनि नहि रहैत अछि, ओ अनायास विचारक सहभागी बनि जाइत अछि।

आब तर्क-पद्धतिपर विचार कएल जाए। मण्डलजीक तर्क-पद्धतिक पहिल गुण प्रश्नोन्मुखता अछि। ओ निष्कर्ष थोपै नइ छैथ। ओ प्रश्न उठबै छैथ, तर्कक स्थितिसभ निर्मित करै छैथ, आ पाठककेँ सोचबाक बाध्य करै छैथ। 'अवतारवाद'मे ई पद्धति अत्यन्त स्पष्ट अछि। पहिने परम्परागत ईश्वर-परिभाषा राखल गेल। तेकर बाद मिथकीय घटनाक नैतिक परीक्षण कएल गेल। तत्पश्चात् शास्त्रीय स्रोतक ऐतिहासिक क्रम देखौल गेल। अन्तमे निष्कर्ष मानवीय विवेकक समर्थनमे पहुँचैत अछि। ई पूरा क्रम एक सुव्यवस्थित तर्क-पद्धतिक द्योतक अछि। ओ प्रतिज्ञा, उदाहरण, सन्दर्भ, तुलना आ निष्कर्षक एक सघन लय उत्पन्न करै छैथ। ऐ तर्कक क्रममे पाठककेँ मत तँ भेटिते अछि जे तैसंग सोचबाक प्रक्रिया सेहो भेटैत अछि।

दोसर तर्कगत विशेषता शास्त्रीय सन्दर्भ आ व्यावहारिक विवेकक संयुक्त प्रयोग अछि। मण्डलजी केवल अनुभववादी नइ छैथ, केवल ग्रन्थवादी सेहो नइ छैथ। ओ शास्त्रक उल्लेख करै छैथ, मुदा तेकर उपयोग अन्धस्वीकृति लेल नहि, परीक्षा लेल करै छैथ। शास्त्रक भीतरक बहुलता, परम्पराक विकासक्रम, कथाक रूपान्तरण आ अवधारणाक इतिहासकेँ पहिने चिन्हित करै छैथ, पछाइत पुछै छैथ जे ई केतेक मानवीय, केतेक न्यायसंगत आ केतेक तर्कसम्मत अछि। अइसँ हुनकर तर्क-पद्धति दू स्तरपर सक्रिय देखि पड़ैत अछि। पहिल स्तरपर ओ शास्त्रीय स्रोत, परम्परा आ ऐतिहासिक सन्दर्भक गम्भीरतासँ परीक्षण करै छैथ; दोसर स्तरपर ओ सभकेँ मानवीय न्याय, सामाजिक उपयोगिता आ तर्कक कसौटीपर परखै छैथ। ओ स्रोतक महत्त्वकेँ स्वीकार करै छैथ, मुदा ओकरा अन्तिम सत्य मानि चुप नहि रहै छैथ। स्रोतक प्रति सम्मान राखितो ओ आलोचनात्मक विवेककेँ सक्रिय रखै छैथ। एही सन्तुलनक कारण हुनकर गद्य ने

भावनात्मक आवेगमे बहैत अछि आ ने पाण्डित्य-प्रदर्शनक बोझिलतामे फँसैत अछि; ओ विचार, प्रमाण आ विवेकक सन्तुलित रूप बनि सामने अबैत अछि।

मण्डलजीक तर्क-पद्धतिक तेसर महत्त्वपूर्ण गुण ई अछि जे ओ कोनो विचारक मूल्यांकन मात्र सिद्धान्तक स्तरपर नहि करै छैथ, बल्कि ओकर सामाजिक परिणामपर सेहो ध्यान दइ छैथ। हुनकर तर्क सैद्धान्तिक सत्यक खोज धरि सीमित नहि रहैत। ओ बेर-बेर पुछै छैथ जे कोनो विचार वा व्यवस्था मनुक्खपर की असर करैत अछि। 'अवतारवाद' मनुक्खमे हीनभावनाक जन्म दैत अछि, ई हुनकर निष्कर्ष ऐ बातक उदाहरण अछि। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष'मे भाषा, साहित्य आ संस्कृतिपर विचार करैत ओ सामाजिक प्रतिनिधित्व, लोकतंत्रीकरण, शिक्षा, आरक्षण, नारी-जागरण आ सार्वजनिक संस्थाक जिम्मेदारी धरि पहुँचै छैथ। अर्थात् तर्कक लक्ष्य केवल विचारक शुद्धता नहि, सामाजिक जीवनक दिशा सेहो अछि। ई सामाजिक परिणतिमूलक तर्क-पद्धति हुनकर गद्यकेँ व्यावहारिक आ प्रासंगिक बनबैत अछि। एतए विचार जीवनसँ कटैत नहि अछि, बल्कि जीवनमे उतैर कऽ अपन असर देखबैत अछि।

चारिम गुण निष्पक्ष रूपेँ देखबाक चेष्टा अछि। प्रश्नोत्तरमे मण्डलजी स्वयं कहै छैथ जे कोनो समस्या वा घटनाक प्रति हुनकर सदिखन कोशिश रहै छैन जे निष्पक्ष भऽ देखबो करी आ निराकरणो करी। ई गुण हुनकर तर्क-पद्धतिक असली सूत्र छी। ओ पूर्वाग्रहसँ भरल भावावेगक लेखक नइ छैथ । हुनका लग पक्षधरता अवश्य छैन, मुदा ओ बिनु सोचने-विचारने भावुक आग्रहमे परिवर्तित नइ होइ छैथ। निष्पक्षता हुनका लेल उदासीनता नहि, वस्तुस्थितिक ईमानदार मूल्यांकन अछि। तर्कक बाद समाधानक दिशा देखबैबला प्रवृत्ति ऐ कथनसँ पुष्ट होइत अछि। यएह कारण हुनकर लेखन प्रतिरोधी होइतो अराजक नहि बनैत।

आब गद्य-सौष्ठवक प्रश्नपर विचार कएल जाए। गद्य-सौष्ठवक अर्थ केवल अलंकृत भाषा नहि होइत। एकर अर्थ विचारक अनुरूप गद्यक गठन, वाक्य-प्रवाह, अर्थ-संयम, लय, शब्द-चयन, प्रभावोत्पादकता आ सम्पूर्ण

अभिव्यक्तिक कलात्मक संयोजन होइत अछि। पयस्विनीक गद्य-सौष्ठवक पहिल गुण स्वाभाविक प्रवाह अछि। डॉ. धीरेन्द्र कुमारक मूल्यांकनमे मण्डलजीक रचनासभमे “निरन्तर प्रवाह” आ “सजीव चित्रण”क उल्लेख अछि। ऐ तरहक मूल्यांकनक महत्त्व पयस्विनीक गद्य पढ़िते सिद्ध होइत अछि। विचार एक विषयसँ दोसर विषय धरि झटका दऽ कऽ नहि जाइत; ओ क्रमशः खुलैत, फैलैत आ अपन तर्क-लयमे आगाँ बढ़ैत अछि। पयस्विनीक गद्यक सौष्ठव अही क्रमिकता, अर्थ-संयम, वाक्य-प्रवाह आ विचारक स्वाभाविक प्रसरणमे निहित अछि। एतए गद्य सजावटसँ नहि, विचारक स्पष्ट गति आ पाठकीय बोधगम्यतासँ प्रभावी बनैत अछि। ऐ कारण गद्यक प्रवाह अत्यन्त सहज बनि जाइत अछि। पाठक अवरोधक अनुभूतिक बिना विचारक संग चलैत रहैत अछि।

दोसर गुण सजीवता अछि। ई सजीवता पयस्विनीमे अनेक रूपमे देखाइत अछि। मिथकीय प्रसंगक चरचा हो, संस्कार-गीतक चरचा हो, ग्रामीण भाषिक विभेदक वा आरक्षण-व्यवस्थाक विडम्बनाक चरचा हो, केतौ मण्डलजी अमूर्त कथनपर नहि रुकै छैथ। ओ दृश्य बनबै छैथ, स्थिति रखै छैथ, व्यवहारक ठोस उदाहरण दइ छैथ। ऐ सजीवतासँ हुनकर गद्य विचारपूर्ण होइतो निर्जीव नहि बनै छैन। अइसँ पाठककेँ दृश्य, स्वर आ सामाजिक तनावक अनुभूति होइत अछि। ओइ कारण गद्य केवल पढ़ल नहि जाइत अछि, बल्कि अनुभव सेहो कएल जाइत अछि।

तेसर गुण लोकबोधजन्य सौन्दर्य अछि। मण्डलजीक गद्यमे लोकक कहबी, स्वाभाविक मुहावरा, क्षेत्रीय शब्द-संवेदना, बोलीक स्पर्श आ व्यवहारक अनगढ़ जीबटता रहैत अछि। तँए हुनकर गद्य पढ़िते कृत्रिम विद्वत्ता बाधा नहि बनैत अछि। शब्द जीवित रहैत अछि। ऐ प्रकारक गद्य-सौष्ठव अकादमिक प्रशंसा मात्रक विषय नहि रहि, भाषिक संस्कृति बँचेबाक साधन सेहो बनैत अछि। मण्डलजी स्वयं मैथिलीकेँ जनभाषा कहै छैथ आ एकर विकास समयक अनुकूल बदलैत रहैबला प्रक्रियाक रूपमे देखै छैथ। भाषा-बोधक ई लचीलापन आ जीवन-स्पर्श हुनकर गद्यक सौष्ठवकेँ गतिशील बनबैत अछि।

चारिम गुण संरचनात्मक अनुशासन अछि। मण्डलजीक लेखनमे शुद्धता, नियमित पुनर्पाठ आ शब्द-गणनाक अभ्यास विशेष रूपेँ दृष्टिगत होइत अछि। ऐ अनुशासनक प्रभाव हुनकर गद्यपर स्पष्ट रूपेँ देखाइत अछि। हुनकर लेखनमे विषयक फलक अवश्य विस्तृत होइत अछि, मुदा ओ बिखरैत नहि अछि। प्रत्येक लेख अपन एक निश्चित केन्द्रबिन्दु धारण करैत अछि आ विचार ओइ केन्द्रक चारूकात क्रमबद्ध रूपेँ विकसित होइत अछि। प्रश्नोत्तरमे हुनकर उत्तर विषयानुकूल दिशामे आगाँ बढ़ैत अछि। सांस्कृतिक लेखसभमे सामग्रीक विस्तार होइतो मुख्य सूत्र नहि छुटैत अछि। ई गुण लेखन-अनुशासनक बिना सम्भव नहि। फलस्वरूप पयस्विनीक गद्य-सौष्ठवक चरचा करैत काल शिल्पक ऐ अदृश्य अनुशासनकेँ अवश्य स्मरण करबाक चाही। ई अनुशासन हुनकर गद्यकेँ ठहराव, सन्तुलन आ विश्वसनीयता प्रदान करैत अछि।

पाँचम गुण विचारक अनुरूप भाषिक स्वर अछि। मण्डलजी जखन हाशियाक समाजक प्रश्नपर लिखै छैथ, तखन हुनकर भाषा तेजस्वी, सजग आ प्रतिरोधधर्मी भऽ उठैत अछि। जखन ओ संस्कार-गीत वा लोक-संस्कृतिक चरचा करै छैथ, तखन हुनकर स्वर व्याख्यात्मक, सांस्कृतिक आ संवेदनशील बनि जाइत अछि। तहिना प्रश्नोत्तरमे जखन ओ आत्मीयताक संग अपन रचनात्मक यात्रा कहै छैथ, तखन भाषा आत्मकथात्मक अपनत्व ग्रहण करैत अछि। जखन ओ साहित्यक भूमिका, भाषाक सामाजिक महत्त्व अथवा मानवीय मूल्यपर विचार करै छैथ, तखन हुनकर वाक्य अधिक घोषणात्मक, विचारप्रधान आ दार्शनिक भऽ जाइत अछि। ऐ प्रकारक प्रसंगानुकूल स्वर-परिवर्तन हुनकर शैलीक परिपक्वता प्रमाणित करैत अछि। हुनकर गद्य एकरेखी नहि अछि; ओ विषय, प्रसंग आ भावभूमिक अनुरूप अपन रूप बदलैत चलैत अछि। ऐ लचीलापनमे हुनकर गद्य-सौष्ठवक महत्त्वपूर्ण अंश निहित अछि। अही कारण पयस्विनीक विविध लेख अलग-अलग विषयपर आधारित होइतो समग्र रूपेँ एक्के सजग, लोकधर्मी आ विचारशील रचनाकारक वैचारिक व्यक्तित्वकेँ उद्घाटित करैत अछि।

मण्डलजीक गद्य-सौष्ठवक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष विचार आ भावक

सन्तुलित समन्वय सेहो अछि। हुनका लग विचारक प्रखरता अछि, मुदा ओ शुष्क बौद्धिक रूपेँ उपस्थित नहि होइत। ओ दबल आ उपेक्षित समाजक पक्षमे स्पष्ट स्वर उठबै छैथ, मुदा ऐ स्वरमे भावुकता विवेकहीन नहि बनैत। ओ अवतारवादक आलोचना करै छैथ, मुदा ऐ आलोचनामे क्रोधक असंयम नहि, तर्कक अनुशासन देखाइत अछि। ओ भाषाक बहुरूपतापर बल दइ छैथ, मुदा भाषा-विमर्शकेँ विखण्डनवादी अतिशयता धरि नहि लऽ जाइ छैथ। ओ नवपीढ़ीकेँ सम्बोधित करै छैथ, मुदा हुनकर सम्बोधन उपदेशात्मक बोझिलतामे परिवर्तित नहि होइत अछि। ऐ प्रकारक संयत, स्पष्ट आ सन्तुलित अभिव्यक्तिमे हुनकर गद्यक असल गरिमा निहित अछि। तँए हुनकर गद्य एकसंग मानवीय, विचारशील आ आत्मीय बनि उठैत अछि। पाठककेँ ऐ गद्यमे विचारक दृढ़ता आ अनुभूतिक अपनत्व एकसंग प्राप्त होइत अछि।

प्रस्तुत अध्यायक निष्कर्षक रूपमे ई कहब उचित होएत जे पयस्विनीक भाषा जनजीवनसँ उपजल, लोकबोली-आधारित, संवादपरक आ सजीव अछि। एकर शैली प्रत्यक्ष, प्रश्नोन्मुख, व्याख्यात्मक, लोकधर्मी आ प्रसंगानुकूल रूपेँ परिवर्तित होइत रहैत अछि। एकर तर्क-पद्धति प्रश्न, उदाहरण, शास्त्रीय सन्दर्भ, सामाजिक विवेक, निष्पक्ष अवलोकन आ समाधानोन्मुख निष्कर्षक क्रममे विकसित होइत अछि। एकर गद्य-सौष्ठव प्रवाह, सजीवता, संरचनात्मक अनुशासन, लोकबोध, भाषिक स्वरक लचीलापन आ विचार-भावक सन्तुलनमे निहित अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी केवल विषयगत स्तरपर महत्त्वपूर्ण नहि, भाषिक आ शैलीगत स्तरपर सेहो उल्लेखनीय कृति सिद्ध होइत अछि। मण्डलजीक गद्य एतए पठनीय, विचारोत्तेजक, स्मरणीय आ विश्लेषणयोग्य रूपमे प्रकट होइत अछि। ऐ तरहेँ पयस्विनी मैथिली गद्य-साहित्यक एक उल्लेखनीय आ मूल्यवान कृति छी। ❑

पयस्विनीक रचना-शिल्प, विन्यास आ अभिव्यक्ति-कौशल

✳

पयस्विनीक प्रभाव केवल एकर विचार-वस्तु, सामाजिक सरोकार आ सांस्कृतिक गहराइमे नहि, एकर रचना-शिल्पमे सेहो निहित अछि। जँ कोनो पोथीमे सामग्री गम्भीर हो, मुदा विन्यास बिखरल, प्रस्तुति असन्तुलित आ अभिव्यक्ति निष्प्राण हो, तँ पाठकीय प्रभाव कमि जाइत अछि। पयस्विनी ऐ अर्थमे उल्लेखनीय अछि जे विविध प्रकृतिक सामग्रीक समावेश होइतो ई आकस्मिक संग्रह जकाँ नहि लगैत। एकरा क्रमशः खुलैत वैचारिक-सांस्कृतिक गद्ययात्राक रूपमे अनुभव कएल जा सकैत अछि। शीर्षक-पृष्ठपर एकरा शोध-पत्र, निबन्ध आ समीक्षाक संग्रह कहल गेल अछि, मुदा अनुक्रम देखि बुझाइत अछि जे ई केवल लेख केर संग्रह नहि, आन्तरिक रूपेँ संगठित बौद्धिक दस्तावेज अछि।

रचना-शिल्पक प्रश्न पयस्विनीक सन्दर्भमे ऐ कारण आओर महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि जे मण्डलजीक समग्र लेखन-संस्कार, अनुशासन, पुनर्पाठ, स्वच्छ प्रारूप-निर्माण, लोकबोलीक जीवित संवेदना आ सार्वजनिक लेखकीय जिम्मेदारीपर आधारित अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखन-अनुशासन, विशुद्ध लेखन, नियमित पुनर्पाठ, शब्द-गणना आ लोक-आधारित संवादपरक भाषा-शैलीक स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि। ऐ आधारपर कहब अनुचित नहि होएत जे पयस्विनीक स्थापत्य आकस्मिक नहि, बल्कि दीर्घ अभ्यास आ रचनात्मक सजगतासँ निर्मित अछि। एतए एकटा बात विशेष रूपेँ ध्यान देबाक अछि जे रचना-शिल्पक अर्थ केवल

बाहरी गठन नहि अछि। एकर सम्बन्ध सामग्रीक क्रम, विचारक प्रस्तुति-विधि, भिन्न गद्य-रूपक संयोजन आ पाठकपर पड़ैबला समग्र प्रभावसँ अछि। पयस्विनीमे ई सभ तत्त्व परस्पर सम्बद्ध रूपेँ सक्रिय देखि पड़ैत अछि। यएह कारण एकर शिल्पक चरचा मात्र रूपगत नहि रहिकऽ वैचारिक प्रभावक चरचा सेहो छी।

1. समग्र विन्यास : संग्रहसँ अधिक, एक विचार-यात्रा

पयस्विनीक अनुक्रम अपने-आपमे एक महत्त्वपूर्ण पाठ छी। 'अवतारवाद'सँ आरम्भ भऽ 'संस्कार आ संस्कार गीत' आ 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' धरि पहिल गति बनैत अछि। तकर बाद 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन', 'सगर राति दीप जरय'क कथागोष्ठी, 'वेब प्रोग्राम' आ 'भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा'क लेख सार्वजनिक साहित्यिक धरातल खोलैत अछि। अन्तिम भागमे तीन प्रश्नोत्तर आ दू गोट परिसंवाद लेखकक प्रत्यक्ष वाणीकेँ सामने अनैत अछि। ई क्रम देखबैत अछि जे पुस्तकक गठन विषयक समानतापर मात्र नहि, वैचारिक प्रगतिक आन्तरिक लयपर आधारित सेहो अछि। पहिल भागमे जिज्ञासापरक चिन्तन अछि, दोसरमे संस्कृति आ समाजक धरातल, तेसरमे सार्वजनिक साहित्यिक सक्रियता, आ अन्तिम भागमे लेखकक प्रत्यक्ष वाणी। ई विन्यास पयस्विनीकेँ साधारण संकलन होइसँ बँचबैत अछि। अनुक्रमक ई नियोजन पाठककेँ बिखरावक अनुभव नहि होमए दैत अछि। ओ क्रमशः एक वैचारिक धरातलसँ दोसर धरातल धरि बढ़ैत जाइत अछि। एतए विन्यास पाठकक मार्गदर्शकक काज करैत अछि।

ऐ क्रमक भीतर एक प्रकारक आरोह सेहो देखि पड़ैत अछि। पोथीक क्रम दार्शनिक प्रश्नसँ शुरू होइत अछि, माने विचारक मूल धरातल पहिने बिछौल जाइत अछि। तेकर बाद लोक-संस्कृति, सामाजिक असमानता आ वर्चस्व-विमर्शक क्षेत्र खुलैत अछि। तदनन्तर सम्मेलन, गोष्ठी, वेब-प्रोग्राम आ व्यक्तित्व-लेखनक माध्यमेँ साहित्यक सार्वजनिक जीवन उद्घाटित होइत अछि। अन्तमे प्रश्नोत्तर-परिसंवादक माध्यमेँ लेखक स्वयं संवादक

केन्द्र बनि जाइ छैथ। ऐ प्रकारेँ पयस्विनीक समग्र विन्यास विचारसँ समाज, समाजसँ सार्वजनिकता आ सार्वजनिकतासँ आत्मदर्शी संवाद दिस क्रमशः बढ़ैत अछि।

यएह कारण ई कहब समीचीन होएत जे पयस्विनीक विन्यास बहुध्वन्यात्मक होइतो बिखरल नहि अछि। जे पाठक पोथीकेँ शुरूसँ अन्त धरि पढ़ैत अछि, से अनुभव करैत अछि जे लेखक अपन वैचारिक संसारक भिन्न-भिन्न कक्ष खोलैत जाइ छैथ। प्रत्येक लेख स्वतंत्र अछि, मुदा तइ बीचमे अन्तःसूत्र मौजूद अछि। ई अन्तःसूत्र लेखकक तर्कशीलता, लोकसम्बद्धता, सामाजिक पक्षधरता आ संवादधर्मी चेतनासँ बन्हल अछि। ओइ कारणेँ पयस्विनीक स्थापत्य एक प्रकारक लचीला, मुदा संगठित बौद्धिक विन्यास छी।

2. विधागत बहुरूपता : एक्के पोथीमे अनेक गद्य-रूप

पयस्विनीक रचना-शिल्पक सभसँ विशिष्ट पक्ष एकर विधागत बहुरूपता अछि। एतए वैचारिक निबन्ध, सांस्कृतिक-समाजशास्त्रीय लेख, सार्वजनिक व्याख्यानधर्मी आलेख, आयोजन-स्मृति, व्यक्तित्व-आधारित रचना, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सभ समाविष्ट अछि। एहेन बहुविध सामग्रीक एक्के पोथीमे समावेश साधारण बात नहि, बल्कि असाधारण कार्य छी। पयस्विनीमे ई विविधता विसंगति नहि बनैत; अइसँ कृतिक क्षितिज आरो विस्तृत होइत अछि। प्रत्येक गद्य-रूप अपन विशिष्ट प्रयोजन पूरा करैत अछि। वैचारिक निबन्ध प्रश्न उठबैत अछि, सांस्कृतिक लेख पृष्ठभूमि खोलैत अछि, सार्वजनिक लेखन साहित्यक सामाजिक व्यवहार देखबैत अछि, आ प्रश्नोत्तर-परिसंवाद लेखकक प्रत्यक्ष बौद्धिक उपस्थिति प्रस्तुत करैत अछि। फलस्वरूप बहुरूपता एतए बिखराव नहि, कार्य-विभाजनक रूप ग्रहण करैत अछि।

'अवतारवाद' शीर्षक लेख वैचारिक निबन्धक श्रेणीमे अबैत अछि। एतए प्रतिपक्ष, तर्क, शास्त्रीय सन्दर्भ आ नैतिक प्रश्नक संयोजन अछि। 'संस्कार आ संस्कार गीत' सांस्कृतिक-समाजशास्त्रीय विवेचनक रूप ग्रहण

करैत अछि। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' सामाजिक प्रतिरोधधर्मी सार्वजनिक लेखनक स्वरूप धारण करैत अछि। सम्मेलन, कथागोष्ठी आ वेब-प्रोग्राम सम्बन्धी लेख सार्वजनिक-साहित्यिक सक्रियताक दस्तावेज अछि। 'भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा' व्यक्तित्व-केन्द्रित सांस्कृतिक लेखनक उदाहरण छी। प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद तँ प्रत्यक्ष संवाद-विधाकेँ सामने आनैत अछि। ऐ बहुरूपतासँ स्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनी विधागत सीमा तोड़िकऽ एक समेकित गद्य-संसारक निर्माण केने अछि।

ऐ विधागत बहुरूपताकेँ मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मिताकेँ एकसंग जोड़ि देखब उपयोगी अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखन कथा, उपन्यास, नाटक, पद्य, बाल-साहित्य, आत्मकथात्मक गद्य आ शोधालेख धरि पसरल अछि। एहेन रचनाकार जखन एक गद्य-पोथी तैयार करै छैथ, तँ एकर भीतर अनेक गद्य-रूपक स्वाभाविक सहअस्तित्व देखि पड़ैत अछि। तइ कारण पयस्विनीक विधागत बहुवचनता बोझ नहि बनैत, बल्कि हुनकर रचनात्मक स्वभावक प्राकृतिक विस्तार बुझाइत अछि। निबन्ध, प्रश्नोत्तर, परिसंवाद, सार्वजनिक टिप्पणी आ व्यक्तित्व-स्मरण, ई सभ अलग-अलग खण्ड नहि रहि पोथीक वैचारिक संरचनामे अपन-अपन जरूरी काज करैत अछि।

3. प्रश्न-प्रधान शिल्प : विचारकेँ गतिशील बनएबाक कला

पयस्विनीक रचना-शिल्पमे प्रश्नक भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। विशेषतः 'अवतारवाद'मे ई गुण अत्यन्त प्रखर रूपेँ उपस्थित अछि। लेख आरम्भिक परिभाषासँ तुरन्त प्रश्नक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। ईश्वर सर्वदयालु छैथ तखन हिंसा केना? सर्वव्यापक छैथ तखन अबै-जाइक आवश्यकता कोन? छल, कपट, वध, दमन सदृश क्रियाकेँ दैवी कर्म केना मानल जाए? ई प्रश्नक क्रम लेखकेँ खाली जानकारीप्रधान निबन्ध बनिकऽ नहि रहए दैत अछि। ओ पाठककेँ तर्कक प्रवाहमे भीतर धरि लऽ जाइत अछि। ऐठाम लेखक अपन कथनकेँ पाठकपर नइ थोपै छैथ, बल्कि पहिने

शंका जगबै छैथ, तदनन्तर परम्परागत आधारक परीक्षण करै छैथ।

प्रश्न-प्रधान शिल्पक एक विशिष्ट शक्ति ई अछि जे ओ पाठककेँ निष्क्रिय स्वीकृतिसँ बाहर निकालि दैत अछि। जँ लेखक आरम्भमे निष्कर्ष लिखि दैत, तखन पाठक सहमत वा असहमत भऽ अलग-थलग पड़ि जाइत मुदा प्रश्नक लगातार पुनरावृत्ति पाठककेँ सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि। ऐ अर्थमे पयस्विनीक रचना-शिल्प मूलतः विचारोत्तेजक अछि। ई पोथी पाठककेँ पढ़बाक संग-संग मनन करबाक लेल प्रेरित करैत अछि। ई गुण केवल 'अवतारवाद' धरि सीमित नहि, संस्कार, भाषा, समाज, प्रतिनिधित्व आ सार्वजनिकता सम्बन्धी लेखसभमे सेहो देखाइ पड़ैत अछि।

4. व्याख्यात्मक आ विश्लेषणात्मक संरचना

पयस्विनीक रचना-शिल्पमे प्रश्नक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अवश्य अछि, मुदा ई पोथी प्रश्नमालामय संरचना धरि सीमित नहि अछि। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे मण्डलजी पहिने संस्कारक अर्थ स्पष्ट करै छैथ। तदनन्तर ओ शास्त्रीय अवधारणा, सामाजिक प्रयोजन, जातिगत विविधता, व्यावहारिक भिन्नता, स्त्रीक भागीदारी आ मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास धरि क्रमशः बढ़ैत जाइ छैथ। ई शिल्प अति महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ एतए लेखक परिभाषा, उदाहरण, समाजशास्त्र, लोक-स्मृति आ सांस्कृतिक निष्कर्षकेँ एकसंग बुनै छैथ।

ऐ विश्लेषणात्मक पद्धतिसँ पाठक भ्रमित नहि होइ छैथ। जटिल अवधारणा सेहो क्रमिक रूपेँ खुलैत अछि। मण्डलजी अकस्मात् निष्कर्षपर नहि कूदि पड़ै छैथ। ओ अपने सामग्री सजबै छैथ, फेर ओकर व्याख्या करै छैथ, तेकर सामाजिक अर्थ निकालै छैथ। ई शिल्प शोधोपयोगी लेखनक मूल अपेक्षा पूर्ण करैत अछि। एतए भावुक सांस्कृतिक स्तुति नहि, विश्लेषित सांस्कृतिक बोध उपस्थित अछि। तइ कारण पयस्विनीक रचना-शिल्प विचारकेँ व्यवस्थित रूपेँ पाठक धरि पहुँचाबैमे समर्थ अछि।

'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' शीर्षक लेखमे पयस्विनीक व्याख्यात्मक संरचना स्पष्ट देखाइ पड़ैत अछि। ई लेख

ऐतिहासिक संकेतसँ आरम्भ होइत अछि। तदनन्तर भाषा-साहित्यक भेद, भाषिक विकास, समाजक वर्गीय दूरी, मैथिल समाजक आन्तरिक असमानता, आरक्षण, स्त्रीक प्रश्न, शिक्षणक संरचना, क्षेत्रीयता आ लोकतंत्रीकरणक प्रसंग क्रमशः अबैत अछि। ऐ प्रसंगसभ अलग-अलग टिप्पणी रूपमे नहि अबै छैथ; मण्डलजी ओकरा एक साझा सामाजिक दृष्टिक भीतर संयोजित करै छैथ। तइ कारणेँ लेखमे विचारक क्रमबद्धता, तर्कक विस्तार आ सामाजिक सरोकारक स्पष्ट दिशा बनल रहैत अछि। प्रस्तुत लेख व्याख्यानधर्मी अवश्य अछि, मुदा ओ केवल सूचना वा भाषणक स्तरपर सीमित नहि रहैत; अपन वैचारिक सघनता आ सामाजिक प्रतिबद्धताक कारण ई विचार-संपृक्त गद्य-रचना बनि जाइत अछि।

5. संवादात्मक विन्यास : एकालापसँ बहसक क्षेत्र धरि

पयस्विनीक रचना-शिल्पक एक विशिष्ट उपलब्धि एकर संवादात्मक विन्यास अछि। गजेन्द्र ठाकुरजी, मुन्नाजी आ मुकेश दत्तजीक प्रश्नक जवाब तथा दू गोट परिसंवाद ई स्पष्ट करैत अछि जे पोथी मात्र एक लेखकक दीर्घ एकालाप नहि अछि। एकर अन्तिम भागमे बहस, प्रश्न, आत्मव्याख्या, प्रतिपुष्टि आ सार्वजनिक बौद्धिक आदान-प्रदानक स्वर प्रवेश करैत अछि। पोथीक ई शिल्पगत परिवर्तन अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि। एकर पहिल भाग जेतए विचारक स्थापना करैत अछि, अन्तिम भाग ओइ विचारकेँ सार्वजनिक सवाल-जवाबक कसौटीपर रखैत अछि। संवादात्मक विन्यासक एक महत्त्वपूर्ण परिणाम विश्वसनीयता अछि। जखन लेखक प्रश्नक सम्मुख उत्तर दैत छैथ, तखन ओ अपन विचारकेँ पाठकक परीक्षा लेल सेहो प्रस्तुत करै छैथ। अइसँ पयस्विनीमे प्रतिपादित विचार सार्वजनिक तर्क-विनिमयक रूपमे देखाइ पड़ैत अछि।

प्रश्नोत्तरक समावेश खाली सामग्रीक वृद्धि नहि अछि। एकरा माध्यमेँ लेखक अपन विचारकेँ जाँच लेल प्रस्तुत करै छैथ। प्रश्नकर्त्ता अलग-अलग दिशासँ सवाल उठबै छैथ। लेखक उत्तर दइ छैथ। ऐ प्रक्रियामे रचनाकारक आत्मदृष्टि, भाषा-निष्ठा, साहित्य-दर्शन, सामाजिक पक्षधरता, नवपीढ़ीक

प्रति विश्वास आ लोकसम्बद्ध जीवन-दृष्टि प्रत्यक्ष रूपेँ सामने अबैत अछि। रचना-शिल्पक दृष्टिए देखल जाए तँ ई विन्यास पयस्विनीक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि, किएक तँ पाठक लेखकक प्रत्यक्ष बौद्धिक उपस्थितिसँ साक्षात्कार करैत अछि।

परिसंवादक समावेश ऐ संवादात्मकताकेँ आओर विकसित करैत अछि। संवाद एतए जानकारी लेबाक औपचारिक विधि धरि नहि रहि जाइत, बल्कि चिन्तनक आदान-प्रदानक माध्यम बनि जाइत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजी प्रश्न लेल खुलल छैथ। ओ असहमतिसँ बाँचैक प्रयास नहि करै छैथ। मैथिली साहित्य, समाज, भाषा, जनपक्ष, प्रतिनिधित्व, रचना-प्रक्रिया, नवपीढ़ी आदिक सम्बन्धमे ओ अप्पन स्पष्ट मत रखै छैथ। ऐ प्रकारक संवादात्मक शिल्प पयस्विनीकेँ जीवित पुस्तक बनबैत अछि। आ तही दुआरे ई पोथी पढ़बाक वस्तु मात्र नहि रहि कऽ, वार्तालाप आरम्भ करएबला पाठ बनि जाइत अछि।

6. सार्वजनिक लेखनक स्थापत्य : घटनासँ सांस्कृतिक अर्थ धरि

पयस्विनीक रचना-शिल्पक एक महत्त्वपूर्ण आयाम सार्वजनिक जीवनसँ जुड़ल लेखनमे देखाइत अछि। लेखक सार्वजनिक घटना, गोष्ठी, डिजिटल संवाद वा व्यक्तित्व-स्मरणकेँ सामान्य विवरण भरि नहि रहए दइ छैथ; ओ ओकरा सांस्कृतिक अर्थ, भाषिक सेवा, सामूहिक स्मृति आ साहित्यिक दायित्वसँ जोड़ि दइ छैथ। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, सगर राति दीप जरय, वेब प्रोग्राम आ भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा सम्बन्धी लेखसभमे सूचना, स्मरण, मूल्यांकन आ सांस्कृतिक चिन्ता एकसंग चलैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनीमे सार्वजनिक लेखन रिपोर्टिंग नहि रहि, मूल्यांकनात्मक आ अभिलेखीय गद्यक रूप ग्रहण करैत अछि।

ऐ शिल्पक विशेषता ई अछि जे घटना समाप्त भेलाक बादो ओकर सांस्कृतिक ऊर्जा पाठमे सुरक्षित रहैत अछि। लेखक आयोजनक बाह्य विवरणमे अटकैत नहि; ओ ओकर भाषिक, सामाजिक आ सामूहिक अर्थकेँ

चिन्है छैथ। फलस्वरूप ई लेखसभ मैथिलीक सार्वजनिक साहित्यिक जीवनक स्मृति-संरक्षणक काम करैत अछि आ पयस्विनीकेँ साहित्यक परिवेश, प्रक्रिया आ संवादक दस्तावेज बनबैत अछि।

एतए मूल बात सार्वजनिक सामग्रीक उपस्थिति नहि, ओकर रचनात्मक रूपान्तरण अछि। घटना, संस्मरण आ व्यक्तित्व-चिन्तन लेखकक हाथमे साहित्यिक शिल्पक अंग बनि जाइत अछि। अही कारण पयस्विनी सार्वजनिक जीवनकेँ मात्र दर्ज नहि करैत; ओकर सांस्कृतिक आशयकेँ गद्यात्मक रूपमे व्यवस्थित सेहो करैत अछि।

7. लोकधर्मी अभिव्यक्ति-कौशल

यद्यपि भाषा-शैलीपर पृथक अध्याय मौजूद अछि, तथापि रचना-शिल्पक दृष्टिए पयस्विनीक अभिव्यक्तिक कौशलक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष एकर लोकधर्मिता अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजी कठिन विचारकेँ जीवन-जगतक परिचित उदाहरण, लोक-ध्वनि, व्यावहारिक सन्दर्भ, संस्कारगत दृश्य, सामाजिक मुहावरा आ जनभाषिक सादगीक सहारे अभिव्यक्त करै छैथ। ऐ कारण हुनकर गद्य बौद्धिक होइतो पाठकसँ कटैत नहि अछि। ओ अभिजन-पाठक लेल आरक्षित पाठ नहि रहि, जनसम्बद्ध बौद्धिक गद्यक रूपमे विकसित होइत अछि। मण्डलजीक भाषा-शैलीक सम्बन्धमे जे “लोकभाषा-आधारित संवादात्मकता” कहल गेल अछि, से रचना-शिल्पक धरातलपर विशेष अर्थ ग्रहण करैत अछि। हुनकर लोकधर्मी अभिव्यक्ति मात्र सादगी नहि, बल्कि जटिल विचारकेँ जीवन-सन्निकट, बोधगम्य आ प्रभावी रूपमे विन्यस्त करबाक सृजनात्मक कला छी। अही गुणक कारण पयस्विनीक गद्य विचारप्रधान होइतो आत्मीय, सहज आ पाठकीय प्रभावसँ सम्पन्न बनि उठैत अछि।

लोकधर्मी अभिव्यक्तिक कौशलक एक महत्त्वपूर्ण लाभ ई होइत अछि जे मण्डलजीक लेखनमे बौद्धिक तनाव आ मानवीय निकटता दुनू संग चलैत अछि। ओ जँ आरक्षण, हाशिया, संस्कार, अवतारवाद वा भाषिक वर्चस्व जकाँ गम्भीर विषयपर लिखै छैथ, तँ पाठकपर बोझ नहि रखै छैथ।

ओ विचारकेँ जीबैत अनुभवरूप दइ छैथ। ऐ कौशलक कारण पयस्विनीक लेखसभ पठनीयता आ विचारोत्तेजना दुनू बँचा कऽ रखैत अछि।

8. अन्तःसंगति : विविधताक बीच एकसूत्रता

पयस्विनीक रचना-शिल्पक सभसँ सूक्ष्म गुण एकर अन्तःसंगति अछि। सतही दृष्टिसँ पोथीमे दार्शनिक लेख, सांस्कृतिक निबन्ध, सामाजिक प्रतिरोधक विमर्श, सम्मेलन-सम्बन्धी आलेख, कथागोष्ठी, वेब-प्रोग्राम, जीवन-यात्रा, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सन अनेक सामग्री समाविष्ट अछि। मुदा गम्भीर अवलोकन केलासँ बुझि पड़ैत अछि जे ऐ सभक बीच मण्डलजीक एक समान चेतना निरन्तर प्रवाहित अछि। ई चेतना तर्कशील अछि, लोकसम्बद्ध अछि, दबल समाजक पक्षधर अछि, भाषा-सजग अछि आ सार्वजनिक संवादक प्रति खुलल अछि। यएह अन्तःसूत्र पयस्विनीकेँ विखण्डित संग्रह बनबासँ बचबैत अछि।

ऐ अन्तःसंगतिक कारण पाठक एकर बहुविध सामग्रीकेँ अलग-अलग प्रसंगक रूपमे देखैत अछि, मुदा अन्ततः ओ एक व्यापक वैचारिक संरचनाक भीतर पहुँचैत अछि। प्रत्येक लेखक अपन स्वतंत्र स्वरूप अवश्य अछि, मुदा समग्र दृष्टि एक्के मूल वैचारिक केन्द्रसँ संचालित होइत अछि। रचना-शिल्पक दृष्टिए ई बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। एतेक विविध सामग्री जँ कोनो साझा वैचारिक सूत्रक बिना संकलित होइत, तँ पोथी बिखरल आ असन्तुलित प्रतीत होइत। मुदा पयस्विनी एहेन नहि होइत; ई एक सजग, सुविचारित आ आन्तरिक रूपेँ संयोजित वैचारिक सम्पुटक रूपमे प्रकट होइत अछि।

9. पाठकीय प्रभाव : सहभागितामूलक गद्य

पयस्विनीक रचना-शिल्प पाठकपर विशेष प्रकारक प्रभाव छोड़ैत अछि। ई पोथी पाठककेँ मात्र सूचना नहि दैत अछि, बल्कि ओकरा वैचारिक सहभागिताक स्थितिमे लऽ जाइत अछि। प्रश्नोन्मुख लेख पाठककेँ सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि, सांस्कृतिक विवेचन ओकरा परम्पराक पुनरावलोकन

लेल प्रेरित करैत अछि, आ सामाजिक प्रतिरोधधर्मी लेख असमानताक संरचनात्मक रूपकेँ बुझबाक दृष्टि प्रदान करैत अछि। तेतबे नहि, प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक माध्यमसँ पाठक लेखकक प्रत्यक्ष बौद्धिक उपस्थितिसँ परिचित सेहो होइत अछि। ऐ प्रकारेँ पाठक एतए मात्र ग्रहणकर्ता नहि रहि, सहचिन्तक बनि जाइत अछि। तइ कारण पयस्विनी पाठकसँ निष्क्रिय स्वीकृतिक अपेक्षा नहि करैत; ई सक्रिय मनन, पुनर्विचार आ आत्मपरीक्षणक माँग करैत अछि।

गद्य-शिल्पक प्रभावोत्पादकता ऐ बातमे सेहो निहित अछि जे पयस्विनी पाठककेँ एक्के भावावस्थामे स्थिर नहि रखैत अछि। ई केतौ शंका उत्पन्न करैत अछि, केतौ सांस्कृतिक आत्मचिन्तन जगबैत अछि, केतौ सामाजिक बेचैनी पैदा करैत अछि, तँ केतौ साहित्यिक आत्मालोचन आ रचनाकारक संग आत्मीय संवादक अनुभव करबैत अछि। ऐ भिन्न-भिन्न पाठकीय अवस्थासभसँ बुझाइत अछि जे पयस्विनीक रचना-शिल्प केवल सामग्रीक विन्यास नहि, बल्कि पाठकक चेतनाकेँ क्रमशः सक्रिय, सजग आ संवेदनशील बनाबयवाली परिपक्व सृजनात्मक संरचना अछि।

10. समेकित निष्कर्ष

ऐ अध्यायक समग्र विवेचनसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनीक रचना-शिल्प, विन्यास आ अभिव्यक्ति-कौशल एकर साहित्यिक महत्त्वक केन्द्रीय आधार छी। तइ कारण ई पोथी बहुविध सामग्रीक साधारण संचय मात्र नहि रहि, एक सुनियोजित वैचारिक-सांस्कृतिक संरचनाक रूपमे उद्घाटित होइत अछि। एकर अनुक्रम दार्शनिक प्रश्नसँ आरम्भ भऽ संस्कृति, समाज, सार्वजनिक सक्रियता आ आत्मसंवाद धरि क्रमशः विकसित होइत जाइत अछि। अही क्रमबद्धताक कारण पयस्विनी पाठककेँ विचारक एक धरातलसँ दोसर धरातल धरि लऽ जाइत अछि, मुदा ई यात्रा अनियोजित नहि, सजग आ सन्तुलित ढंगसँ संचालित अछि।

एकर विधागत बहुरूपता पोथीक संरचनात्मक शक्ति अछि। वैचारिक निबन्ध, सांस्कृतिक विवेचन, सामाजिक प्रतिरोधधर्मी लेखन,

सार्वजनिक लेख, व्यक्तित्व-आधारित रचना, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद, ई सभ मिलि एक व्यापक गद्य-संसारक निर्माण करैत अछि। प्रश्न-प्रधान शिल्प पाठककेँ मननशील बनबैत अछि। व्याख्यात्मक-विश्लेषणात्मक संरचना जटिल विषयसभकेँ क्रमबद्ध रूपेँ उद्घाटित करैत अछि। संवादात्मक विन्यास पोथीकेँ जीवित बौद्धिक क्षेत्रमे रूपान्तरित करैत अछि। सार्वजनिक लेखन घटनासभकेँ सांस्कृतिक अर्थवत्ता प्रदान करैत अछि। लोकधर्मी अभिव्यक्ति-कौशल कठिन विषयसभकेँ जीवन-सन्निकट, बोधगम्य आ प्रभावी बनबैत अछि। अन्तःसंगति विविधताक भीतर एकसूत्रता स्थापित करैत अछि। ऐ समस्त तत्त्वसभक कारण पयस्विनीमे सामग्रीक विस्तार आ शिल्पक अनुशासन परस्पर समर्थित रूपमे उपस्थित होइत अछि।

ऐ आधारपर ई कहब समीचीन होएत जे पयस्विनीकेँ मात्र विषयगत दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण कहि देब पर्याप्त नहि। रचना-शिल्पक दृष्टिसँ सेहो ई आधुनिक मैथिली गद्यक एक उल्लेखनीय, सुसंगठित आ विशिष्ट कृति छी। एकरा पढ़ैत काल पाठक केवल विचारक विस्तारसँ प्रभावित नहि होइत, बल्कि नियंत्रित विन्यास, सन्तुलित अभिव्यक्ति, तर्कपूर्ण प्रस्तुति आ परिपक्व गद्य-शिल्पक अनुभव सेहो करैत अछि। ऐ अर्थमे पयस्विनी आधुनिक मैथिली गद्य-लेखनमे एहेन कृतिक रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि, जे विचार, शिल्प, विन्यास आ अभिव्यक्ति, चारू स्तरपर समान रूपेँ अध्ययनयोग्य अछि। ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक
समग्र रचनाधर्मितामे पयस्विनीक स्थान

✳

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मिता अत्यन्त व्यापक, बहुविध आ सतत सक्रिय साहित्यिक साधनाक प्रमाण अछि। जीवनवृत्तक अनुसार हुनकर नियमित साहित्यिक साधना वर्ष 2000 ई.सँ संगठित रूपमे आरम्भ भेल, मुदा ई मानब भूल होएत जे अइसँ पूर्व ओ निष्क्रिय, एकान्तवासी अथवा जीवन-संघर्षसँ अलग बैसल व्यक्ति छला। वस्तुतः वर्ष 2000 सँ पूर्वक हुनकर जीवन प्रत्यक्ष सामाजिक सक्रियता, जनपक्षधर चेतना, संघर्षशील व्यवहार आ सामाजिक परिवर्तनक दीर्घ साधनासँ निर्मित भेल छल। रचनाकार मण्डलजी पोथीक पृष्ठपर अचानक उपस्थित नहि भेल छैथ। हुनकर लेखनी पहिने जीवनक संघर्ष-भूमि, गामक सामाजिक संरचना, किसान-मजदूरक पीड़ा, जातीय-वर्गीय तनाव, लोक-व्यवहारक जटिलता आ सामाजिक न्याय-बोधसँ गुजरैत अछि; तेकर बाद ओइ अनुभवसभकेँ साहित्यिक रूप दैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म 5 जुलाइ 1947 इस्वीमे भेल। ई समय भारतक राजनीतिक इतिहासमे स्वतंत्रताक दहलीजपर ठाढ़ एक संक्रमणशील काल छल। देश अंग्रेजी शासनसँ मुक्त हेबाक तैयारीमे छल, मुदा गाम-समाजक भीतर आर्थिक विषमता, जातीय विभाजन, भूमिसम्बन्धी तनाव, सामन्ती प्रभाव आ नव चेतनाक हलचल एकसंग सक्रिय छल। हुनकर बाल्यकाल मिथिलाक ओइ सामाजिक धरातलपर बीतल, जेतए संयुक्त परिवार, कृषिजन्य जीवन, जातीय-सामाजिक सम्बन्ध, पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामुदायिक सहकार आ संघर्षक अनेक रूप एकसंग उपस्थित छल। पिताक असमय निधनक बादो संयुक्त

परिवारक संरचना हुनका जीवनमे संरक्षण, सहारा आ सामाजिक सम्बल प्रदान केलक। मुदा ऐ संयुक्त पारिवारिक जीवनक भीतर रहैत हुनका ग्रामीण समाजक आन्तरिक असमानता, श्रमजीवी वर्गक कठिन स्थिति, भूमिसम्बन्धी असन्तुलन, जातीय-सामाजिक दूरी आ शक्ति-संरचनाक वास्तविक स्वरूपसँ निकट परिचय भेलैन। तँए हुनकर साहित्यक ग्राम्य यथार्थ बाहरी दृष्टिसँ देखल चित्रण नहि, बल्कि जीवनक भीतरसँ अर्जित अनुभवक प्रामाणिक अभिव्यक्तिक रूपमे सामने अबैत अछि।

शिक्षा-प्राप्तिक क्रममे मण्डलजी विद्यालय-कॉलेजक विद्यार्थी मात्र नहि रहला। ओ अपन समयक सामाजिक-राजनीतिक हलचलकेँ भीतरसँ अनुभव करैत रहला। 1967 ई.क जन-जागरण, ग्रामीण राजनीति, किसान-बँटेदारक प्रश्न, सामाजिक नेतृत्व आ न्याय-अन्यायक संघर्ष हुनकर चेतना-निर्माणक महत्त्वपूर्ण आधार बनल। ओ समय मिथिलाक ग्रामीण समाजमे नव राजनीतिक चेतना, किसानक असन्तोष आ शिक्षण संस्थान सभक बदलैत दशा आ सत्ता-संरचनाक प्रति असहमति तीव्र भऽ रहल छल। हुनकर वैचारिक गठन ऐतिहासिक रूपमे ओही दौरमे भेल। तँए हुनकर साहित्यक भीतर जे ग्रामीण जीवनक गन्ध, संघर्षशील लोक-चेतना आ प्रतिरोधक स्वर सुनाइ पड़ैत अछि, से सजावटी यथार्थ नहि, जीवनक ठोस धरतीसँ उपजल यथार्थ अछि।

हिन्दी एवं राजनीतिशास्त्रसँ एम.ए. अध्ययनक उपरान्त मण्डलजी अध्यापन वा नौकरीक सुरक्षित राह पकैड़ व्यक्तिगत सुविधा, पद-प्रतिष्ठा आ स्थिर जीवनक बाट चुनि सकैत छला; मुदा ओ समाजक बीच रहि काज करबाक कठिन मार्ग चुनलैन। ई निर्णय साधारण नहि छल। अइमे हुनकर व्यक्तिगत विकासक अपेक्षा सामूहिक जीवनक विकास, ग्राम-समाजक न्यायबोध आ उपेक्षित लोकक पक्षमे ठाढ़ हेबाक नैतिक आग्रह मुखर छल। लगभग छत्तीस वर्ष धरि हुनकर सक्रिय जीवन समाजक भीतर चलैत वास्तविक संघर्षसँ जुड़ल रहल। ऐ दीर्घ कालखण्डमे ओ सामाजिक रूढ़ि, अन्धविश्वास, सामन्ती दबाव, जातीय वर्चस्व, शोषण आ ग्राम्य अन्यायक विरुद्ध प्रत्यक्ष रूपमे सक्रिय रहला। ऐ सक्रियताक परिणामस्वरूप हुनका

अनेक मुकदमा, वारंट, जेल-यात्रा आ सामाजिक प्रतिरोधक कठिन अनुभवसँ गुजरए पड़लैन। ओ स्वयं कहै छैथ जे वर्ष 2000 ई. अबैत-अबैत अनेक केस समाप्त भेल, मुदा किछु गम्भीर केस शेष रहल। ई तथ्य हुनकर सामाजिक जीवनक जोखिमपूर्ण धरातलकेँ स्पष्ट करैत अछि।

ऐ दृष्टिसँ मण्डलजीक व्यक्तित्व आन परम्परागत साहित्यकार लोकनि जकाँ मात्र मनसा आ वाचा धरि सीमित नहि रहल अछि। हुनकर मनसा, वाचा आ कर्मणा प्रत्यक्ष सामाजिक व्यवहारमे रूपान्तरित अछि। हुनकर कथा, उपन्यास, नाटक आ वैचारिक लेखनमे जे पीड़ा, अन्याय, असमानता, जातीय-वर्गीय तनाव, ग्राम्य शोषण, मौन पात्रक संघर्ष आ उपेक्षित लोकक टीस अबैत अछि, से दूरसँ देखल विषय नहि। ओ अपन जीवनमे भोगल, बुझल आ परखल यथार्थक रूपमे आएल अछि। तँए हुनकर रचना-संसारमे प्रतिरोध जीवन-साधनाक स्वाभाविक परिणति बनि उपस्थित होइत अछि।

वर्ष 2000 ई.सँ हुनकर साहित्यिक साधना संगठित रूपमे तीव्र भऽ उठल। तदनन्तर कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, पद्य, बाल-साहित्य, आत्मकथात्मक गद्य, वैचारिक लेख, शोधपरक आलेख आ सांस्कृतिक टिप्पणी धरि हुनकर सृजन-क्षेत्र निरन्तर विस्तार पबैत गेल। एगारह साएसँ अधिक कथा, दर्जन भरि नाटक-एकांकी, दस गोट बाल-किशोर साहित्य-कथा संग्रह, एक दर्जन पद्य-संग्रह आ डेढ़ दर्जनसँ बेसी औपन्यासिक कृति पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, सुपौलसँ प्रकाशित रूपमे हुनकर नामसँ जुड़ल देखल जाइत अछि। ई रचनात्मक विस्तार संख्या-वैभवक परिचायक अवश्य अछि। मुदा एकर वास्तविक महत्त्व ऐ व्यापक लेखनमे अभिव्यक्त मिथिलाक लोकजीवन, ग्राम्य यथार्थ, श्रम-संस्कृति, पारिवारिक सम्बन्ध, स्त्री-चेतना, दलित-बोध, उपेक्षित वर्गक पीड़ा, नैतिक मूल्यक संकट, सामाजिक प्रतिरोध आ बदलैत ग्राम्य संरचनाक गम्भीर चित्रणमे निहित अछि।

तँए मण्डलजीक साहित्यकेँ प्रकाशित कृतिसभक संख्या देखिकऽ मात्र नहि बुझल जा सकैत अछि। ओकरा सम्यक् रूपेँ बुझबाक लेल हुनकर

जीवन-संघर्ष, सामाजिक पक्षधरता, मुकदमा-जहल-यात्रा, ग्रामीण समाजसँ जीवन्त सम्पर्क, किसान-मजदूरक जीवनक निकट अनुभव आ लोकहितक प्रति दीर्घ प्रतिबद्धताकेँ संग-संग देखब आवश्यक अछि। व्यक्तिगत सुविधा छोड़ि सामूहिक विकासकेँ प्राथमिकता देबाक दृष्टि सेहो ऐ सन्दर्भमे महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर रचना-संसारक वास्तविक अर्थ तखने खुलैत अछि, जखन ओकरा हुनकर जीवन-साधना, सामाजिक संघर्ष आ लोकप्रतिबद्ध चेतनाक आलोकमे पढ़ल जाइत अछि।

ऐ व्यापक जीवनगत आ रचनात्मक परिप्रेक्ष्यक कारण पयस्विनीक स्थानपर विचार करब विशेष महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। पयस्विनी मण्डलजीक समग्र साहित्यिक प्रयत्नक वैचारिक आधारकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ सामने आनैत अछि। हुनकर कथा, उपन्यास, नाटक आ लोकधर्मी साहित्यमे जीवन-दृष्टि पात्र, प्रसंग, कथानक आ सामाजिक स्थितिसभक माध्यमसँ संकेत रूपेँ व्यक्त होइत अछि। पयस्विनीमे से वैचारिक कथन, सामाजिक चिन्तन आ आत्मानुभवक रूपमे उद्घाटित होइत अछि। यएह कारण पयस्विनीकेँ हुनकर रचना-संसारक पूरक पाठ रूपमे देखब उचित अछि, किएक तँ ई पोथी हुनकर साहित्यक भीतर सक्रिय लोकचेतना, सामाजिक दृष्टि आ मानवीय प्रतिबद्धताकेँ अधिक प्रत्यक्ष आ सुविचारित रूपमे सामने रखैत अछि।

मण्डलजीक कथा-साहित्य हुनकर रचना-संसारक अत्यन्त सशक्त आधार अछि। ऐ कथासभमे गामक साधारण लगैत पात्र असाधारण मानवीय गरिमा लऽ कऽ उपस्थित होइत अछि। किसान, मजदूर, वृद्ध, विधवा, परित्यक्ता स्त्री, संघर्षशील बेटी, मौन गृहिणी, लोकसेवी दादी, असहाय बालक, बेरोजगार युवा आ समाजसँ कतियाएल लोक हुनकर साहित्यक केन्द्रमे आबि जाइत अछि। ओ पात्रकेँ दया वा करुणाक वस्तु बना कऽ नइ देखै छैथ; ओकर भीतरक संघर्ष, विवेक, आत्मसम्मान, जीवन-शक्ति आ सामाजिक अर्थकेँ चिन्हित करै छैथ। ऐ दृष्टिसँ हुनकर कथा-साहित्य लोकजीवनक सामाजिक पंजी सेहो अछि आ मानवीय चेतनाक रचनात्मक व्याख्या सेहो। ऐ रचनासभक विशेषता ई अछि जे ओ उपेक्षित

लोककेँ साहित्यक परिधिसँ उठा कऽ केन्द्रमे स्थापित करैत अछि। एतए मौन पात्र बजैत अछि, दबाएल जीवन अपन गरिमा पबैत अछि, आ ग्राम्य यथार्थ मात्र दृश्य भरि नहि रहिकऽ मानवीय संवेदनाक प्रश्न बनि जाइत अछि।

हुनकर औपन्यासिक कृतिसभ आरो व्यापक धरातल ग्रहण करैत अछि। जइमे परिवार, समाज, भूमिसम्बन्ध, जातीय संरचना, परम्परा, परिवर्तन, शिक्षा, आर्थिक संकट, स्त्रीक स्थिति, पीढ़ीगत अन्तर, ग्रामीण नेतृत्व, सामुदायिक सम्बन्ध आ ऐतिहासिक चेतनाक जटिल बुनावट विस्तार पबैत अछि। यएह कारण हुनकर औपन्यासिक साहित्य मिथिलाक ग्रामीण समाजक जीवन-इतिहास जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। ऐ उपन्याससभमे इतिहास राजकीय वृत्तान्तक रूपमे नहि, बल्कि परिवार, खेत, गाम, श्रम, सम्बन्ध, स्त्री-जीवन आ सामुदायिक स्मृतिक भीतरसँ बनैत-बदलैत देखि पड़ैत अछि। मण्डलजीक उपन्यास ग्रामीण जीवनक बाह्य विवरण मात्र प्रस्तुत नहि करैत। ओ गामक सामाजिक संरचना, मानवीय सम्बन्धक तनाव, आर्थिक विषमता, परम्परा आ परिवर्तनक टकराहट तथा लोकजीवनक भीतरी गति-विधिकेँ कथात्मक रूपमे उद्घाटित करैत अछि। ओइ कारण हुनकर औपन्यासिक कृतिसभकेँ मिथिलाक समाज, संस्कृति आ जनजीवनक दीर्घ अनुभवसँ निर्मित साहित्यिक दस्तावेजक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

नाटक आ एकांकीमे हुनकर संवादधर्मी प्रतिभा विशेष रूपमे सामने आएल अछि। जनभाषा, सहज कथन-शैली, कथोपकथनक स्वाभाविकता आ पात्रानुकूल भाषा हुनकर नाटकीय रचनाकेँ जीवन्त बनबैत अछि। नाटकमे सामाजिक प्रश्न प्रत्यक्ष संवादक रूपमे खुलैत अछि। ओतए विचार भाषण नहि बनैत, बल्कि पात्रक व्यवहार आ कथोपकथनक भीतरसँ विकसित होइत अछि। पद्य-संग्रहसभमे जीवनानुभव, प्रकृति-बोध, सामाजिक चिन्ता, सांस्कृतिक स्मृति आ जनसरोकारक भावधारा व्यक्त भेल अछि। बाल-किशोर साहित्यक माध्यमसँ ओ नवपीढ़ी धरि संस्कार, श्रम, नैतिकता, संवेदना आ सामाजिक चेतनाक सरल रूप पहुँचबै छैथ। ऐ प्रकारेँ हुनकर साहित्यक विधागत विस्तार अलग-अलग दिशामे पसरल

अवश्य अछि, मुदा ओकर भीतरी केन्द्र लोकजीवन, मनुक्खक गरिमा, श्रमक मूल्य, सामाजिक न्याय आ समाजक नैतिक पुनर्संरचनाक चिन्ता अछि।

ऐ समग्र रचनात्मक परिप्रेक्ष्यक कारण पयस्विनीक स्थानपर विचार करब आवश्यक भऽ जाइत अछि। ई पोथी मण्डलजीक साहित्यिक व्यक्तित्वक ओ पक्ष सामने अनैत अछि, जे हुनकर सर्जनात्मक साहित्यक भीतर अन्तर्निहित रहैत आएल अछि आ पयस्विनीमे प्रत्यक्ष वैचारिक रूप ग्रहण करैत अछि। शीर्षक-पृष्ठ आ अनुक्रमसँ एकर गद्यात्मक प्रकृति अवश्य स्पष्ट होइत अछि, मुदा एकर वास्तविक महत्त्व ऐ बातमे निहित अछि जे ई मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मिताक वैचारिक आधारकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ उद्घाटित करैत अछि।

कथा, उपन्यास, नाटक आ पद्यमे जीवन-दृष्टि पात्र, प्रसंग, परिवेश आ संवेदनाक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि। पयस्विनीमे सएह दृष्टि विचार, तर्क, सामाजिक प्रश्न, सांस्कृतिक विवेक आ संवादक रूपमे प्रकट होइत अछि। फलस्वरूप पयस्विनीकेँ केवल स्वतंत्र गद्य-पोथी नहि, बल्कि मण्डलजीक समूचा साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ बुझबाक महत्त्वपूर्ण कुंजीक रूपमे देखबाक चाही।

प्रस्तुत पोथीक संरचना स्वयं संकेत करैत अछि जे मण्डलजीक चिन्तन एकांगी नहि अछि। एतए दार्शनिक प्रश्न, लोक-संस्कार, हाशियाक समाज, साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियता, सार्वजनिक जीवन, आत्मव्याख्या आ संवादपरक चेतना एक्के वैचारिक परिपथमे संगठित रूपमे उपस्थित भेल अछि। 'अवतारवाद'मे ओ धार्मिक अवधारणा आ मिथकीय संरचनाकेँ तर्कक कसौटीपर परखै छैथ। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे लोक-संस्कृतिक भीतर निहित सामाजिक भाव, स्त्रीक भूमिका, जातीय भिन्नता आ मौखिक परम्पराक अर्थ खोजै छैथ। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष'मे भाषा, साहित्य, सत्ता, वंचना आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबै छैथ। सम्मेलन, गोष्ठी, वेब-प्रोग्राम आ जीवन-यात्रासँ सम्बन्धित लेखसभ हुनकर सार्वजनिक साहित्यिक सक्रियताकेँ

रेखांकित करैत अछि। प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे लेखकक आत्मदृष्टि, भाषा-बोध, साहित्यिक पीड़ा आ सामाजिक पक्षधरता प्रत्यक्ष रूपमे सामने आएल अछि। ऐ प्रकारेँ पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे एहेन कृति बनैत अछि, जे सर्जनात्मक साहित्यक भीतर निहित विचारकेँ स्पष्ट, विश्लेषित आ प्रमाणित करैत अछि।

मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे प्रस्तुत पोथीक एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान अहू रूपमे देखल जा सकैत अछि जे एतए चिन्तक-मण्डलजी प्रत्यक्ष आत्मव्याख्याकारक रूपमे सामने आएल छैथ। कथा, उपन्यास आ नाटकमे लेखक अनेक बेर पात्र, प्रसंग, कथाविन्यास, प्रतीक आ संवादक माध्यमसँ अपन जीवन-दृष्टि प्रकट करै छैथ। जेतए हुनकर विचार कथा-परिस्थितिक भीतर घुलल-मिलल रहैत अछि। पाठक ओकरा पात्रक व्यवहार, घटनाक क्रम, संघर्षक स्थिति आ कथोपकथनक अर्थसँ ग्रहण करैत अछि। मुदा ऐ वैचारिक पाठमे मण्डलजी अपन प्रत्यक्ष स्वरमे बजै छैथ। एतए लेखकक विचार पात्रक ठोरसँ नहि व्यक्त भेल अछि। एतए लेखकक अपन वैचारिक चेतना अपना मुहसँ निकैल पाठकक समक्ष उपस्थित भेल अछि। अही कारण पयस्विनीकेँ हुनकर रचनात्मक संसारक वैचारिक कुंजी कहल जा सकैत अछि।

'अवतारवाद' शीर्षक आलेखमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी धार्मिक मिथक, अवतार-कल्पना आ परम्परागत मान्यताकेँ तर्कक कसौटीपर परैख विचार केलैन अछि। ओ श्रद्धाक भावभूमिकेँ नकारै नइ छैथ, मुदा ओकरा विवेक, इतिहास-बोध आ मानवीय प्रश्नक आलोकमे देखबाक आग्रह करै छैथ। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे लोक-संस्कृतिक सामाजिक संरचना, स्त्रीक सांस्कृतिक भूमिका, जातिगत भिन्नता, लोकगीतक मौखिक परम्परा आ संस्कारक सामुदायिक अर्थक विश्लेषण भेटैत अछि। 'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष'मे वंचित समाजक प्रतिनिधित्वक प्रश्न भाषा-साहित्यक धरातलसँ उठि लोकतंत्रीकरणक व्यापक माँगमे बदैल जाइत अछि। तँए सत्ता, समाज आ संस्कृति तीव्र आलोचनात्मक प्रसंग बनि उद्घाटित होइत अछि। ऐ लेखसभसँ बुझाइत अछि जे पयस्विनीमे मण्डलजी

जीवनक प्रश्नकेँ भावात्मक स्तर धरि सीमित नहि राखि, ओकरा तर्कपूर्ण, विश्लेषणात्मक आ सामाजिक अर्थ-संरचनाक स्तरपर उठबै छैथ।

ऐ सन्दर्भमे पयस्विनी सर्जक मण्डलजी आ विचारक मण्डलजीक अन्तरंग सम्बन्ध बुझबाक लेल अनिवार्य कृति बनि जाइत अछि। हुनकर कथा-लेखन ग्रामीण समाज, श्रमशील जीवन, किसान, वंचित लोक, सामाजिक विषमता आ नैतिक संघर्षक कथा कहैत अछि। उपन्यासमे ओ व्यापक सामाजिक संरचना, भूमिसम्बन्ध, परिवार, जातीयता, शिक्षा, आर्थिक संकट आ परिवर्तनक जटिल प्रक्रियाकेँ कथात्मक विस्तार देलैन अछि। नाटकमे लोकभाषा आ संवादक माध्यमसँ समाजक भीतरी तनावकेँ दृश्यक रूपमे उपस्थित केलैन अछि। पयस्विनी ऐ सभ रचनात्मक प्रवृत्तिक वैचारिक आधारकेँ स्पष्ट करैत अछि। एतए मण्डलजी जीवनक प्रश्नकेँ कथा-घटनाक रूपमे नहि, बल्कि विश्लेषणक विषयक रूपमे सोझा अनै छैथ। ओ अपन विचारक प्रस्थानबिन्दु स्पष्ट करै छैथ, प्रश्नक सामाजिक आधार चिन्है छैथ आ निष्कर्ष धरि पहुँचेबाक बौद्धिक साहस देखबै छैथ। तँए ई कृति हुनकर रचनात्मक साहित्यक भीतरी चिन्तनधाराकेँ अलग प्रकाशमे देखबाक अवसर दैत अछि।

मण्डलजीक साहित्यिक दर्शन प्रतिबद्धता, मौन पीड़ाकेँ स्वर देबाक इच्छा आ साहित्यकेँ जन-संवादक सजग दस्तावेज बनेबाक आग्रहपर आधारित अछि। पयस्विनीमे ऐ दर्शनक व्यावहारिक रूप सुस्पष्ट रूपमे देखि पड़ैत अछि। एतए लेखक अपन कथा-पात्रक मुहसँ नहि बजै छैथ; ओ स्वयं अपन पक्ष, प्रश्न, असहमति आ निष्कर्ष व्यक्त करै छैथ। हुनकर रचनात्मक साहित्यमे जे पीड़ा, प्रतिरोध, लोकधर्मिता, भाषा-बोध आ सामाजिक न्याय-चेतना आन्तरिक रूपमे सक्रिय अछि, पयस्विनीमे सएह प्रत्यक्ष वैचारिक रूप ग्रहण करैत अछि। यएह कारण ई पोथी हुनकर वैचारिक स्वरसँ प्रत्यक्ष साक्षात्कारक अवसर प्रदान करैत अछि।

मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे प्रस्तुत पोथीक दोसर विशिष्ट स्थान ई अछि जे ई हुनकर लोकधर्मी साहित्यकेँ आलोचनात्मक स्वर प्रदान करैत अछि। कथासाहित्य लोककेँ जीबैत देखबैत अछि; पयस्विनी लोकजीवनक

संरचना, अर्थ, विडम्बना आ संघर्षक विवेचना करैत अछि। कथामे किसानक पीड़ा, मजदूरक श्रम, स्त्रीक मौन संघर्ष, दलित-वंचित लोकक अपमान, बेरोजगार युवकक संकट, वृद्धजनक उपेक्षा आ ग्राम्य समाजक नैतिक द्वन्द्व आदि आएल अछि। पयस्विनी ओइ अनुभवसभकेँ तर्क, विमर्श आ वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। जे रचनाकार कथामे लोकजीवनक धड़कन सुनबै छैथ, ओ ऐ पोथीमे लोकजीवनक सांस्कृतिक संरचना, भाषा-विचार, मिथकीय दबाव, सामाजिक वर्चस्व आ संस्थागत जड़तापर विचार करै छैथ। ऐ प्रकारेँ पयस्विनी हुनकर रचनात्मक लोकधर्मिताकेँ विवेकपूर्ण आलोचनात्मक आधार प्रदान करैत अछि। ऐ पोथीकेँ पढ़ने बिना हुनकर कथा-संसारक गहींर वैचारिक स्रोत पूर्ण रूपमे पकड़ब कठिन भऽ सकैत अछि।

प्रस्तुत पोथीक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष ईहो अछि जे ई मण्डलजीक सार्वजनिक साहित्यिक जीवनक अभिलेखीय दस्तावेजक रूप ग्रहण करैत अछि। 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन', 'सगर राति दीप जरय'क 100म कथागोष्ठीक मादे, 'वेब प्रोग्राम' आ 'भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा' जकाँ लेखसभ ऐ बातक प्रमाण अछि जे हुनकर साहित्यिक सक्रियता एकान्त लेखन धरि सीमित नहि रहल छैन। ओ मञ्च, गोष्ठी, सम्मेलन, पत्रिका, डिजिटल संवाद आ सांस्कृतिक आयोजन सभमे सक्रिय रहै छैथ। हुनका लेल साहित्य कोठरीमे बैस कऽ लिखल पाठ नहि, बल्कि समाजक बीच संवाद स्थापित करबाक माध्यम अछि। 'सगर राति दीप जरय' जकाँ साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिसँ हुनकर दीर्घ सम्बद्धता ऐ बातकेँ आरो पुष्ट करैत अछि जे ओ साहित्यकेँ जनसम्बन्ध, सहभागिता आ सामूहिक चेतनाक क्षेत्र मानै छैथ। ऐ आधारपर पयस्विनीकेँ मण्डलजीक सार्वजनिक साहित्यिक कर्मक संग्रहीत रूप सेहो कहल जा सकैत अछि। ई कृति लेखकक रचना-संसार आ हुनकर सांस्कृतिक उपस्थितिक बीच सेतुक रूपमे ठाढ़ अछि।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभ प्रस्तुत पोथीक विशेष उपलब्धि अछि। मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे ऐ अंशसभक महत्त्व ऐ कारण बढ़ि

जाइत अछि जे एतए लेखक स्वयं अपन रचना-दृष्टि, सामाजिक पक्षधरता, भाषिक आग्रह, साहित्यिक पीड़ा, आलोचनात्मक दृष्टि आ नवपीढ़ीक प्रति विश्वासपर प्रत्यक्ष रूपमे बजै छैथ। हुनकर एक उत्तरमे साहित्य एहेन दर्पणक रूपमे उपस्थित होइत अछि जइमे भूत, वर्तमान आ भविष्यक दर्शन सम्भव होइत अछि। दोसर ठाम ओ स्पष्ट करै छैथ जे मैथिली साहित्यमे समाजक बहुत पैघ हिस्सा कटिकऽ कात रहि गेल अछि। हुनकर प्रयास रहै छैन जे ओइ छुटल समाजकेँ पकैड़ सृजन कएल जाए। ई हुनकर समग्र साहित्यिक साधनाक मूल सूत्र छी। अइसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे हुनकर साहित्य अभिजन-केन्द्रित दृष्टिसँ अलग हटि समाजक ओइ भागकेँ केन्द्रमे अनैत अछि जे दीर्घ समय धरि साहित्यक हाशियापर रहल। कथा, उपन्यास आ नाटक हुनकर सर्जनात्मक साधन छैन; प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद हुनकर आत्मदृष्टिक खुलल द्वार छैन।

भाषा-शैलीक स्तरपर सेहो पयस्विनी मण्डलजीक रचनाधर्मितामे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। हुनकर भाषा लोक-व्यवहारसँ उपजल, संवादधर्मी, जीवन्त आ सहज अभिव्यक्तिमूलक अछि। कथा-साहित्यसँ लऽ कऽ वैचारिक गद्य धरि हुनकर भाषा जीवनसँ कटैत नहि अछि। पयस्विनी ऐ भाषिक विशेषताक प्रौढ़ उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। एतए विचार गूढ़ अछि, मुदा भाषा दुरूह नहि। शास्त्रीय सन्दर्भ अछि, मुदा गद्य बोझिल नहि। सामाजिक प्रश्न गम्भीर अछि, मुदा अभिव्यक्ति जीवनानुभवसँ जुड़ल अछि। तेतबे नहि, ऐठाम लोकभाषिक प्रवाह आ वैचारिक स्पष्टता एकसंग चलैत अछि। ऐ कारण पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे भाषा-संस्कारक द्योतक पोथी मानल जा सकैत अछि। कथा-साहित्यमे जे लोकबोली-आधारित संवाद-शक्ति भेटैत अछि, ऐठाम से आलोचनात्मक गद्यरूप ग्रहण करैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी हुनकर भाषिक व्यक्तित्वक परिपक्व रूपक प्रतिनिधि कृति छी।

मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे पयस्विनीक एक आरो महत्त्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक चेतनाक स्तरपर देखल जा सकैत अछि। हुनकर साहित्य माटि-पानि, लोक-बेद, किसानी जीवन, स्त्रीक संवेदना, परम्परा आ

जनजीवनक भीतरसँ उपजल साहित्य अछि। हुनकर रचनामे संस्कृति कोनो स्थिर, सजावटी अथवा बाह्य स्मृतिक रूपमे नहि अबैत अछि। ओ जीवनक व्यवहार, श्रम, सम्बन्ध, लोकगीत, संस्कार, भाषा, स्त्री-अनुभव आ सामुदायिक चेतनाक भीतरसँ आकार ग्रहण करैत अछि। पयस्विनी ऐ सांस्कृतिक चेतनाकेँ वैचारिक रूपमे व्याख्यायित करैत अछि। 'संस्कार आ संस्कार गीत'मे मिथिलाक संस्कार-व्यवस्था, लोकगीत, स्त्रीक सांस्कृतिक भूमिका, लोकधर्म, जातिगत अन्तर आ मौखिक परम्पराक विवेचन ऐ बातक प्रमाण अछि जे मण्डलजी संस्कृतिकेँ गौरव-गानक वस्तु बना कऽ छोड़ि नहि दइ छैथ। ओ ओकर भीतरी सामाजिक संरचना, लोकानुभव आ मानवीय अर्थकेँ पकड़बाक प्रयास करै छैथ।

'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष'मे संस्कृति आ सत्ताक सम्बन्ध, भाषा-साहित्यक प्रतिनिधित्व, सामाजिक बहिष्कार आ वंचित समाजक प्रश्न अधिक तीव्र रूपमे सामने अबैत अछि। ऐ लेखमे संस्कृति परम्पराक धरोहर भरि नहि रहि, सामाजिक शक्ति-संरचनाक आलोचनात्मक क्षेत्र बनि जाइत अछि। मण्डलजी लोक-संस्कृतिक भीतर वर्चस्व, बहिष्कार, जातिगत अन्तर, स्त्रीक स्थिति आ भाषिक असमानताक प्रश्न देखै छैथ। ओइ कारण पयस्विनीमे संस्कृतिपर विचार स्वतः समाज-चिन्तनमे परिणत होइत अछि। एतए सांस्कृतिक चेतना आ सामाजिक प्रतिरोध दू अलग प्रवृत्ति नहि अछि। दुनू एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि। सामाजिक प्रतिरोध सांस्कृतिक विवेकसँ जुड़ैत अछि, आ सांस्कृतिक विवेक जनपक्षधर दृष्टिक आधार बनैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी हुनकर समग्र रचनाधर्मितामे सांस्कृतिक आत्मचेतनाक केन्द्रीय ग्रन्थक रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि।

प्रस्तुत पोथीक सामाजिक महत्त्व ईहो अछि जे ई मण्डलजीक प्रतिरोध-चेतनाक वैचारिक आ मुखर रूप प्रस्तुत करैत अछि। हुनकर जीवनवृत्तसँ स्पष्ट होइत अछि जे हुनकर जीवन मात्र साहित्यिक तैयारीक जीवन नहि रहल छैन। ओ सामाजिक रूढ़ि, अन्धविश्वास, सामन्ती दबाव, पछुआएल वर्गक संघर्ष, कृषक जीवनक कठिन यथार्थ आ समाजसेवाक

प्रत्यक्ष अनुभवसँ निर्मित जीवन रहल छैन। लगभग छत्तीस वर्षक सामाजिक सक्रियतासँ हुनकर व्यक्तित्वकेँ जे धरातल भेटल, ओइ धरातलक वैचारिक प्रतिध्वनि पयस्विनीमे स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि।

ऐ पोथीमे हाशियाक समाज, भाषिक उपेक्षा, शिक्षण-संस्थानक जड़ता, लोकतंत्रीकरणक प्रश्न, स्त्री-शिक्षा, आरक्षणक विडम्बना आ सामाजिक दिशाहीनताक प्रसंग सामान्य टिप्पणी नहि, सजग सामाजिक प्रतिपक्षक रूपमे उपस्थित भेल अछि। मण्डलजी ऐ विषयसभकेँ बाहरी दृष्टिसँ नइ देखै छैथ। ओ ओकरा जीवनानुभव, सामाजिक संघर्ष आ लोकहितक चेतनासँ जोड़िकऽ परखै छैथ। फलस्वरूप पयस्विनीमे प्रतिरोध केवल विरोधक मुद्रा नहि रहि जाइत अछि, बल्कि समाजक भीतरी संरचनामे परिवर्तन आनबाक वैचारिक आग्रहक रूपमे प्रकट होइत अछि।

मण्डलजीक कथा, उपन्यास आ नाटकमे समाजक दुख, अन्याय आ विसंगति कथात्मक रूपमे अबैत अछि; पयस्विनीमे ओइ दुखक कारण, ओकर ऐतिहासिक-सांस्कृतिक आधार आ ओकर विरुद्ध प्रतिरोधक वैचारिक दिशा बुझाइत अछि। तँए ई पोथी हुनकर सामाजिक संघर्षक साहित्यिक विवेचनात्मक रूपक प्रतिनिधि ग्रन्थ बनैत अछि। जे रचनाकार जीवनमे समाजक पक्षमे ठाढ़ रहल, ओ पयस्विनीमे विचारक स्तरपर सेहो वंचित, उपेक्षित आ मौन समाजक प्रति अपन पक्षधरता स्पष्ट करैत अछि। ऐठाम लेखकक सामाजिक कर्म आ वैचारिक लेखनक बीच गहींर सम्बन्ध देखाइ पड़ैत अछि।

पयस्विनी मण्डलजीक रचना-संसारमे एक संधि-बिन्दु जकाँ कार्य करैत अछि। एक दिस हुनकर सर्जनात्मक साहित्य अछि, जइमे कथा, उपन्यास, नाटक, कविता आ बाल-साहित्य सम्मिलित अछि। दोसर दिस हुनकर जनपक्षीय चिन्तन-धारा अछि, जे समाज, संस्कृति, भाषा, शिक्षण-संरचना, वंचना, संवाद आ लोकतांत्रिक साहित्य-बोधक प्रश्नपर सक्रिय अछि। पयस्विनी ऐ दुनू प्रवृत्तिक संगम-स्थल छी। ई साहित्यिक सृजनकेँ सामाजिक विचारसँ जोड़ैत अछि, लोकजीवनक चित्रणकेँ लोकजीवनक विश्लेषणसँ मिलबैत अछि, आ रचनात्मकता तथा आलोचनाक बीच बनल

कृत्रिम दूरीकेँ घटबैत अछि।

तँए मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मिताक नक्शामे पयस्विनी एक मध्यवर्ती सेतु-कृतिक रूपमे ठाढ़ देखाइत अछि। एक दिस ऐ पोथीक पृष्ठभूमिमे लोकजीवनक अनुभव, पात्रक पीड़ा, ग्रामीण यथार्थ आ सामाजिक विसंगतिक ठोस आधार उपस्थित अछि। दोसर दिस ओही अनुभवसभक तर्कपूर्ण विश्लेषण, सांस्कृतिक अर्थ-निर्णय, वैचारिक प्रतिपक्ष आ सामाजिक निष्कर्ष सेहो उद्घाटित भेल अछि। हुनकर कथा-साहित्य पाठककेँ जीवनक भीतरी संसारमे लऽ जाइत अछि, जेतए मनुक्ख अपन दुःख, संघर्ष, सम्बन्ध, अभाव आ आशाक संग उपस्थित होइत अछि। पयस्विनी ओही जीवनानुभवक बौद्धिक अर्थ खोलैत अछि आ देखबैत अछि जे ऐ यथार्थक पाछाँ कोन सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक दबाव, ऐतिहासिक प्रक्रिया आ वैचारिक प्रश्न सक्रिय अछि। अही कारण पयस्विनी हुनकर समग्र रचना-संसारमे पाठक लेल दिशासूचक ग्रन्थक रूपमे काज करैत अछि। ई हुनकर साहित्यक अनुभवात्मक पक्ष आ वैचारिक पक्षकेँ एक-दोसरसँ जोड़िकऽ बुझबाक आधार प्रदान करैत अछि।

पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यक आत्मपरक प्रामाणिकताकेँ सेहो सिद्ध करैत अछि। आलोचकसभ हुनकर कथ्य, कर्म आ जीवन-दृष्टिमे जे एकरूपता देखै छैथ, पयस्विनी ओइ एकरूपताक पाठीय प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि। ऐ पोथीमे लेखक जगदीश प्रसाद मण्डलजी जे सोचै छैथ, ओकर तर्क दइ छैथ; जे जीबै छैथ, ओकर अनुभवक मूल्यांकन करै छैथ; आ जइ समाजक पक्षमे ठाढ़ छैथ, ओकर पक्षधरता स्पष्ट रूपेँ घोषित करै छैथ। तँए पयस्विनी हुनकर समग्र रचनाधर्मिताक सत्यापन-पाठ केर रूपमे महत्त्वपूर्ण ठहरैत अछि। सत्यापन-पाठ ऐ अर्थमे जे ई पोथी हुनकर कथा, उपन्यास, नाटक आ सामाजिक जीवनमे व्यक्त मूल मान्यतासभकेँ वैचारिक आधारपर प्रमाणित करैत अछि। ई हुनकर सर्जनात्मक संसारक आन्तरिक नैतिक आधारकेँ स्पष्ट करैत अछि आ देखबैत अछि जे हुनकर साहित्यिक अभिव्यक्ति आ जीवनगत प्रतिबद्धता एक-दोसरसँ अलग नहि, बल्कि परस्पर सम्बद्ध

अछि।

ई तथ्य विशेष रूपेँ ध्यान देबाक योग्य अछि जे मण्डलजीक लेखनमे विचार जीवनसँ अलग नहि अछि। ओ जे प्रश्न उठबै छैथ, ओकर जड़ि हुनकर अपने अनुभव, सामाजिक सक्रियता, ग्रामीण सम्बन्ध, लोकजीवनक निकटता आ न्याय-बोधमे निहित अछि। यएह कारण हुनकर वैचारिक गद्य शुष्क बौद्धिक अभ्यास नहि बनैत, बल्कि जीवन-संघर्षक ताप, संघर्षक स्मृति आ लोकचेतनाक ऊष्मासँ भरल रहैत अछि। पयस्विनीमे मण्डलजी अपन समय, समाज, संस्कृति, भाषा, साहित्य आ मनुक्खक प्रश्नपर जे विचार करै छैथ, से हुनकर समग्र साहित्यिक व्यक्तित्वक आन्तरिक सच्चाइकेँ पुष्ट करैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी हुनकर रचना-संसारक वैचारिक आधार, नैतिक प्रतिबद्धता आ लोकपक्षधर चेतनाकेँ संगठित रूपमे सामने अनैत अछि।

शीर्षकक स्तरपर सेहो पयस्विनी अपन सांकेतिक अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि। 'पयस्विनी' शब्द स्वयं जीवनदायिनी, पोषक आ प्रवाहमयी चेतनाक संकेत दैत अछि। मण्डलजीक रचना-संसारमे जे लोकजीवन, श्रम, सामाजिक संघर्ष, सांस्कृतिक स्मृति आ न्याय-बोधक धारा प्रवाहित अछि, ई पोथी ओकर वैचारिक प्रवाहकेँ रूप दैत अछि। जेना पयस्विनी जीवनकेँ सींचैत अछि, तहिना ई पुस्तक हुनकर कथा, उपन्यास, नाटक, पद्य आ सामाजिक सक्रियताक भीतर निहित विचारधाराकेँ पोषण दैत अछि। ऐ अर्थमे शीर्षक आ कृति-दृष्टि केर बीच गहींर सामंजस्य देखि पड़ैत अछि।

ऐ अध्यायक समग्र विवेचनसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजीक रचनाधर्मितामे पयस्विनी विशिष्ट, केन्द्रीय आ बहुआयामी स्थान रखैत अछि। ई वैचारिक गद्यक स्वतंत्र कृति होइतो हुनकर सर्जनात्मक साहित्यक आन्तरिक दर्शनकेँ उद्घाटित करैत अछि। अत: पयस्विनीकेँ हुनकर रचना-संसारक सहायक ग्रन्थ कहि छोड़ि देब उचित नहि होएत। एकरा हुनकर समग्र साहित्यिक व्यक्तित्व, वैचारिक दिशा, सांस्कृतिक दृष्टि, भाषा-बोध, सामाजिक प्रतिरोध आ जनपक्षधर प्रतिबद्धताकेँ बुझबाक मूल आधारग्रन्थक रूपमे स्वीकार करब अधिक समीचीन अछि।

ऐ पोथीमे लोकधर्मी चेतना आलोचनात्मक रूप ग्रहण करैत अछि, सार्वजनिक साहित्यिक सक्रियताक अभिलेख सुरक्षित होइत अछि, आ प्रश्नोत्तर तथा परिसंवादक माध्यमसँ लेखकक आत्मदृष्टिक प्रामाणिक स्रोत उपलब्ध होइत अछि। भाषा, शैली, संस्कृति, समाज, प्रतिरोध आ जनपक्षधर चेतनाक प्रश्न एतए व्यापक वैचारिक संरचनामे संयोजित भऽ उठैत अछि। ऐ तमाम कारणेँ पयस्विनी मण्डलजीक कथा, उपन्यास, नाटक, पद्य-साहित्य आ सामाजिक प्रतिबद्धताक भीतर सक्रिय वैचारिक ऊर्जाकेँ बुझबाक लेल अनिवार्य कृति सिद्ध होइत अछि।

अन्ततः कहल जा सकैत अछि जे पयस्विनी मण्डलजीक रचना-संसारकेँ बुझबाक लेल एक सशक्त प्रवेश-द्वार छी। ई पोथी स्पष्ट करैत अछि जे हुनकर साहित्यक मूल स्रोत जीवन-संघर्ष, सामाजिक न्याय-बोध, सांस्कृतिक विवेक, लोकजीवनसँ आत्मीय सम्बन्ध आ मानवीय गरिमाक गहींर चेतना अछि। हुनकर कथा, उपन्यास, नाटक आ लोकधर्मी लेखनमे जे जीवन-दृष्टि प्रसंग, पात्र आ कथात्मक स्थितिक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि, पयस्विनी ओही जीवन-दृष्टिकेँ प्रत्यक्ष वैचारिक स्वर प्रदान करैत अछि। ई पोथी हुनकर समग्र रचनाधर्मिताकेँ ओकर वैचारिक आधार, नैतिक सुसंगति आ सामाजिक अर्थवत्ता सहित बुझबाक अवसर दैत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी हुनकर साहित्यिक अवदानक केवल एक कृति नहि, अपितु हुनकर सम्पूर्ण रचना-संसारक वैचारिक पूर्णताकेँ सामने आनएबला महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छी। ❑

उपसंहार

✺

प्रस्तुत अध्ययनक समग्र परिप्रेक्ष्यमे ई स्पष्ट होइत अछि जे पयस्विनी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक महत्त्वपूर्ण कृति छी। अइमे हुनकर वैचारिक चेतना, सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक विवेक, लोकसम्बद्ध दृष्टि, सार्वजनिक सक्रियता आ आत्मदर्शी व्यक्तित्व संगठित रूपमे उपस्थित भेल अछि। शीर्षक-पृष्ठ आ अनुक्रमसँ पहिनहिसँ संकेत भेटैत अछि जे ई कृति papers, essays and criticism केर संग्रह छी। एकर भीतर दार्शनिक लेख, संस्कार-विमर्श, हाशियाक समाजसँ जुड़ल प्रश्न, सम्मेलन-आधारित टिप्पणी, कथागोष्ठी-स्मरण, वेब-प्रोग्राम, व्यक्तित्व-लेखन, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सन विविध गद्यरूपक समावेश अछि।

ऐ बहुविध संरचनाक कारण पयस्विनी सामान्य निबन्ध-पोथी बनि कऽ नहि रहि जाइत। ई मण्डलजीक वैचारिक संसार, सामाजिक अनुभव आ सांस्कृतिक दृष्टिकेँ एक संगठित रूपमे सामने आनएबला बहुस्तरीय गद्य-दस्तावेज बनि उठैत अछि। एकर विविध लेख आ खण्ड अलग-अलग विषयपर केन्द्रित अवश्य देखाइत अछि, मुदा ऐ सभक भीतर एक स्पष्ट अन्तःसूत्र विद्यमान अछि। ई अन्तःसूत्र हुनकर लोकसम्बद्ध दृष्टि, तर्कशील विचार-प्रणाली, सांस्कृतिक सजगता, सामाजिक न्याय-बोध आ जनपक्षधर प्रतिबद्धतासँ संचालित होइत अछि। ओइ कारण पयस्विनीकेँ केवल लेखसभक संग्रह नहि, बल्कि हुनकर समग्र रचनाधर्मिता आ वैचारिक व्यक्तित्वकेँ बुझबाक एक महत्त्वपूर्ण आधार-ग्रन्थ मानल जा सकैत अछि।

ऐ पोथीक अध्ययनसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनाधर्मिताक एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष ई उद्घाटित होइत अछि जे हुनका केवल

कथाकार, उपन्यासकार वा नाटककारक रूपमे पढ़ब पर्याप्त नहि। हुनकर जीवनवृत्त, आलोचक-मत आ स्वयं पयस्विनीक पाठ ऐ निष्कर्ष दिस लऽ जाइत अछि जे मण्डलजी मूलतः लोकजीवनक भीतरसँ विकसित चिन्तक-रचनाकार छैथ। किसानी जीवन, सामाजिक विषमता, वंचित वर्गक संघर्ष, स्त्री-अनुभव, ग्राम्य यथार्थ, लोक-भाषा आ सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्न हुनकर सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्वक आधार बनैत अछि। पयस्विनी ऐ भीतरी जीवन-दृष्टिक प्रत्यक्ष वैचारिक रूप प्रस्तुत करैत अछि। कथा-साहित्यमे जे बात प्रसंग, पात्र, कथानक आ जीवन-स्थितिक माध्यमसँ उभरैत अछि, ओइ बातक विश्लेषणात्मक स्वर एतए स्पष्ट रूपेँ सुनाइ पड़ैत अछि।

दार्शनिक धरातलपर प्रस्तुत पोथीक पहिल महत्त्व ऐ बातमे निहित अछि जे एकर लेखक परम्परागत मान्यताकेँ अन्ध-स्वीकारक आधारपर नहि, बल्कि विवेकक कसौटीपर परखै छैथ। ‘अवतारवाद’ शीर्षक लेखमे ओ मिथकीय संरचनाकेँ शास्त्रीय सन्दर्भ, नैतिक तर्क आ मानवीय विवेकक आलोकमे जाँचै छैथ। ई प्रश्नोन्मुखता हुनकर चिन्तनक मूल स्वभावकेँ सूचित करैत अछि। ओ ईश्वर, अवतार, हिंसा, छल, दया, शक्ति आ मनुक्खक स्थान सन जटिल प्रश्नसभपर स्पष्ट विचार करै छैथ। ऐ सन्दर्भमे हुनकर निष्कर्ष मानवकेन्द्रित नैतिक चेतना दिस अग्रसर होइत अछि।

पयस्विनीमे दार्शनिक प्रतिरोध मात्र धार्मिक मान्यताक आलोचना धरि सीमित नहि रहैत अछि, बल्कि मनुक्खक गरिमा, नैतिक स्वायत्तता आ आत्मनिर्भर विवेकक पक्षमे विकसित होइत अछि। ई प्रतिरोध मनुक्खकेँ प्रतीक्षा, भय आ पराश्रय सँ बाहर निकालि विवेक, आत्मबल आ सामाजिक उत्तरदायित्वक धरातलपर ठाढ़ करैत अछि। तँए ‘अवतारवाद’क प्रश्न अन्ततः दैवी हस्तक्षेपक अस्वीकृति मात्र नहि, बल्कि मनुक्खक सक्रिय नैतिक उपस्थितिक पक्षमे विकसित होइत अछि। ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी आस्था-विमर्शकेँ मानव-मर्यादा आ सामाजिक सक्रियताक प्रश्नसँ जोड़ि दैत अछि।

सांस्कृतिक धरातलपर पयस्विनीक योगदान समान रूपेँ महत्त्वपूर्ण

अछि। ‘संस्कार आ संस्कार गीत’मे मण्डलजी मिथिलाक संस्कृति, लोक-परम्परा, स्त्रीक सांस्कृतिक भूमिका, जातिगत व्यवहार, मौखिक परम्परा, लोकगीतक रूपान्तर आ सामाजिक इतिहासक बहुपरत पक्षपर विचार करै छैथ। ऐ विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे हुनका लग संस्कृति कोनो स्थिर, एकरेखी आ निर्विवाद इकाइ नहि अछि। ई एक बहुस्तरीय ऐतिहासिक निर्माण अछि। एकर भीतर सत्ता-सम्बन्ध, लोक-सहभागिता, मूलवासी स्मृति, ब्राह्मणीकरण, सामाजिक विविधता आ सामूहिक जीवनक रूप निरन्तर सक्रिय रहैत अछि।

संस्कारक व्यावहारिक विविधतापर हुनकर ध्यान ऐ बातक पुष्टि करैत अछि जे ओ जीवनक धरातलकेँ शास्त्रीय आग्रहसँ अधिक महत्त्व दइ छैथ। हुनका लेल संस्कृति ग्रन्थ, विधि-विधान वा बाहरी अनुष्ठान धरि सीमित विषय नहि; ई लोकजीवनक अनुभव, स्त्रीक स्मृति, सामुदायिक व्यवहार, श्रमशील समाजक भागीदारी आ ऐतिहासिक परिवर्तनक जीवित प्रक्रिया छी। फलस्वरूप ओ संस्कार गीतक भीतर छिपल सामाजिक इतिहास, सामूहिक मनोविज्ञान आ सांस्कृतिक रूपान्तरणकेँ चिन्है छैथ। ऐ प्रकारेँ पयस्विनी मैथिली गद्यपरम्परामे संस्कृति-अध्ययनक एक विचारपूर्ण लोकधर्मी कृतिक रूपमे उभरैत अछि, जे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनकेँ गौरव-गानक सीमासँ आगाँ लऽ जा कऽ आलोचनात्मक विवेक आ लोकानुभवक आलोकमे बुझबाक आधार प्रदान करैत अछि।

सामाजिक दृष्टिसँ प्रस्तुत पोथीक सभसँ तीक्ष्ण स्वर ‘वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष’ शीर्षक लेखमे व्यक्त भेल अछि। ऐ लेखमे भाषिक प्रतिष्ठासँ लऽ कऽ साहित्यिक प्रतिनिधित्व धरि, समाज-सत्ताक संरचना, वर्गीय दूरी, जातिगत बहिष्कार, आरक्षणक विडम्बना, नारीक प्रश्न, क्षेत्रीय भेद, सांस्कृतिक दमन आ लोकतंत्रीकरणक आकांक्षा एक जटिल विमर्श-फलक रचैत अछि। एतए मण्डलजीक दृष्टि विशेष महत्त्व ग्रहण करैत अछि, किएक तँ ओ हाशियाक समाजकेँ असहाय, दया-योग्य वा केवल करुणाक पात्र समुदायक रूपमे नइ देखै छैथ। हुनका लग हाशियाक समाज अपन इतिहास, श्रम, भाषा, संस्कृति, अनुभव आ

अस्मितासँ सम्पन्न समाज अछि। ओ साहित्य आ सामाजिक संरचनामे उचित स्थान, सम्मान, सांस्कृतिक स्वामित्व आ सामाजिक न्यायक अधिकारी अछि।

ऐ लेखसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सामाजिक पक्षधरता स्पष्ट रूपेँ उद्घाटित होइत अछि। ओ बहुसंख्यक वंचित आ छुटल समाजक प्रश्नकेँ मैथिली साहित्यक केन्द्रीय प्रश्न बनबए चाहै छैथ। हुनकर आग्रह अछि जे भाषा आ साहित्यक प्रतिष्ठा तखने सार्थक होएत, जखन ओकर भीतर समाजक ओ वर्ग सेहो अपन स्वर, अपन अनुभव आ अपन अस्मिता सहित उपस्थित होअए, जे दीर्घ समयसँ हाशियापर राखल गेल अछि। ऐ रूपमे पयस्विनी सामाजिक प्रतिरोधक एक वैचारिक ग्रन्थ बनि उठैत अछि।

एतए दार्शनिक प्रश्न, सांस्कृतिक पुनर्पाठ आ सामाजिक प्रतिरोध अलग-अलग प्रवृत्तिक रूपमे उपस्थित नहि भेल अछि। ई सभ एक-दोसराकेँ आलोकित करैत जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समग्र वैचारिक व्यक्तित्वक निर्माण करैत अछि। मिथकक प्रश्न अन्ततः मनुक्खक गरिमासँ जुड़ैत अछि। संस्कृतिपर विचार समाजक संरचनासँ टकराइत अछि। सामाजिक प्रतिरोध भाषा, स्मृति, प्रतिनिधित्व आ न्याय-बोधक प्रश्न बनि सामने अबैत अछि। अही कारण पयस्विनीमे हुनकर चिन्तन मात्र विचारक स्तरपर सक्रिय नहि रहैत, बल्कि लोकजीवनक पक्षमे ठाढ़ गम्भीर सामाजिक चेतनाक रूपमे विकसित होइत अछि।

साहित्यिक-सांस्कृतिक सक्रियताक स्तरपर सेहो पयस्विनीक महत्त्व कम नहि अछि। 'अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2011 गुवाहाटी', 'सगर राति दीप जरय'क 100म कथागोष्ठीक मादे, 'वेब प्रोग्राम, 29 जुलाइ 2020' आ 'भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा' शीर्षक लेखसभ ऐ बातक प्रमाण दैत अछि जे मण्डलजीक साहित्यिक जीवन मात्र व्यक्तिगत लेखन-प्रयत्न धरि सीमित नहि रहल अछि। ओ मञ्च, गोष्ठी, सम्मेलन, सम्पादन, सार्वजनिक संवाद आ डिजिटल युगक नव माध्यमसभसँ सक्रिय रूपेँ जुड़ल चलि रहल अछि। ऐ सामग्रीक कारण पयस्विनी मैथिली साहित्यक समकालीन सार्वजनिक जीवनक एक महत्त्वपूर्ण अभिलेखीय दस्तावेजक

रूप ग्रहण करैत अछि। एतए भाषा खाली लिखल शब्दक रूपमे उपस्थित नहि रहैत, ओ जीवित सामुदायिक उपस्थिति, सांस्कृतिक सहभागिता आ साहित्यिक संवादक माध्यम बनि जाइत अछि।

प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक खण्डसभ प्रस्तुत पोथीक विशिष्ट महत्त्वकेँ आरो बढ़बैत अछि। एतए मण्डलजी स्वयं अपन वाणीमे बजै छैथ, तँए हुनकर विचार, अनुभव, संवेदना आ आत्मदृष्टि प्रत्यक्ष रूपेँ पाठकक समक्ष अबैत अछि। ऐ अंशसभसँ हुनकर आत्मीयता, विनम्रता, लोकसम्बद्धता, गाम-माटिसँ जुड़ाव, भाषा-निष्ठा, साहित्य-दर्शन, नवपीढ़ीक प्रति विश्वास, दबल-कुचलल समाजक प्रति प्रतिबद्धता आ संवादशीलता प्रकट होइत अछि। साहित्य समाजक दर्पण छी, आ समाजक बहुत पैघ हिस्सा साहित्यमे कटि कात रहि गेल अछि, जकाँ कथन हुनकर आत्मालोचनशील, सजग आ जिम्मेदार साहित्यिक व्यक्तित्वक परिचायक अछि।

यएह कारण प्रश्नोत्तर आ परिसंवादक अंशसभकेँ मात्र पूरक सामग्री मानि छोड़ि देब उचित नहि। ई अंशसभ मण्डलजीक रचनाधर्मिताक आत्मदर्शी स्रोतक रूपमे विशेष महत्त्व रखैत अछि। अइमे लेखक अपन साहित्यिक दृष्टि, सामाजिक सरोकार, भाषिक आग्रह आ लोकपक्षधर चेतनाकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ व्यक्त करै छैथ। पयस्विनीक ई पक्ष पाठककेँ हुनकर रचना-संसारक भीतरी नैतिक आधार, वैचारिक दिशा आ सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ बुझबाक महत्त्वपूर्ण अवसर दैत अछि।

भाषिक आ शैलीगत दृष्टिसँ सेहो पयस्विनी उल्लेखनीय कृति छी। एकर भाषा लोकबोली-आधारित, सजीव, संवादपरक आ विचारोन्मुख अछि। मण्डलजी भाषाकेँ केवल परिनिष्ठित औपचारिकताक सीमामे नहि रखै छैथ। ओ जनजीवनक लय, व्यवहारक सहजता, प्रश्नक तीक्ष्णता, उदाहरणक स्पष्टता आ तर्कक क्रमबद्धतापर विश्वास करै छैथ। तँए हुनकर रचनामे दार्शनिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक प्रश्न गूढ़ होइतो बोझिल नहि बनैत अछि। हुनकर शैली प्रत्यक्ष अछि, तर्क-पद्धति प्रश्नोन्मुख अछि आ निष्कर्ष प्रायः सामाजिक परिणतिक धरातलपर पहुँचैत देखाइत अछि। ऐ संयोजनसँ प्रस्तुत पोथीक गद्य-सौष्ठव निर्मित होइत अछि। एकर भाषिक

सुलभता वैचारिक गहराइक विरोधमे नहि जाइत अछि, वरण ओइ गहराइकेँ पाठक धरि पहुँचाबयक प्रभावी माध्यम बनैत अछि। यएह कारण ई पोथी एकसंग पठनीय आ विश्लेषणयोग्य बनि उठैत अछि।

मण्डलजीक समग्र रचनाधर्मितामे पयस्विनीक स्थान विशेष रूपेँ ऐ कारण निर्णायक बनैत अछि जे ई हुनकर कथा, उपन्यास, नाटकादि सर्जनात्मक साहित्यक भीतरी वैचारिक स्रोतकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ उद्घाटित करैत अछि। कथा-साहित्यमे जे लोकधर्मी सरोकार प्रसंग, पात्र, घटना आ सामाजिक स्थितिसभक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि, ओ एतए सुव्यवस्थित वैचारिक अभिव्यक्तिक रूपमे प्रकट होइत अछि। जे सामाजिक प्रतिरोध हुनकर कथ्यक भीतर सक्रिय अछि, ओ एतए स्पष्ट विचार आ तर्कक रूपमे उपस्थित अछि। जे भाषा-सम्बन्ध हुनकर सृजनशीलतामे अन्तर्निहित अछि, ओ एतए साहित्यिक आ सांस्कृतिक सिद्धान्तक रूप धारण करैत अछि। जे साहित्य-दर्शन हुनकर समग्र कर्मक भीतर काज करैत अछि, ओ प्रश्नोत्तर आ परिसंवादमे स्पष्ट शब्द पबैत अछि। ऐ कारण पयस्विनी हुनकर साहित्यिक व्यक्तित्वक मात्र एक कड़ी नहि रहि जाइत, अपितु हुनकर सम्पूर्ण रचना-संसारकेँ बुझबाक एक केन्द्रीय व्याख्यात्मक ग्रन्थ बनि जाइत अछि।

ऐ समग्र अध्ययनक आलोकमे ई निष्कर्ष दृढ़तापूर्वक स्थापित कएल जा सकैत अछि जे पयस्विनी आधुनिक मैथिली गद्यसाहित्यमे एक महत्त्वपूर्ण कृति छी। ई विचार, समाज, संस्कृति, लोक-चेतना, प्रतिरोध, संवाद आ सार्वजनिक साहित्यिक सक्रियताकेँ एकसंग समेटने अछि। ई पोथी जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यिक यात्रा बुझबाक लेल अपरिहार्य आधार-पुस्तक मानल जा सकैत अछि। जे पाठक हुनकर कथा-संसारकेँ पढ़ै छैथ, हुनका लेल पयस्विनी ओइ कथा-संसारक आन्तरिक वैचारिक भूगोल खोलैत अछि। जे शोधार्थी हुनकर समग्र कृतित्वक मूल्यांकन करए चाहै छैथ, हुनका लेल ई पोथी अनिवार्य स्रोत-सामग्रीक रूपमे उपस्थित होइत अछि। अर्थात् पयस्विनीकेँ पढ़ब केवल एक पोथीक अध्ययन करब नहि, बल्कि हुनकर समग्र साहित्यिक भूगोल, वैचारिक दिशा आ लोकधर्मी

रचनात्मकताकेँ बुझबाक एक आवश्यक पद्धति बनि जाइत अछि। जे पाठक मैथिल समाजक भीतरी सांस्कृतिक, भाषिक आ सामाजिक तनावकेँ बुझए चाहै छैथ, हुनका लेल ई पुस्तक विचारक एक विश्वसनीय द्वार बनैत अछि।

अतः ई कहब समीचीन होएत जे पयस्विनी केवल जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक गद्य-पुस्तक नहि, हुनकर समग्र साहित्यिक व्यक्तित्वक सघन वैचारिक रूपान्तरण छी। अइमे जीवन-अनुभवक ताप अछि, लोक-समाजक गन्ध अछि, भाषा-चिन्तनक सजगता अछि, संस्कृति-विमर्शक गहराइ अछि, सामाजिक प्रतिरोधक नैतिक शक्ति अछि, सार्वजनिक लेखनक जीवन्तता अछि आ आत्मदर्शी संवादक विश्वसनीयता अछि। ई सभ तत्त्व मिलि पयस्विनीकेँ एहेन कृति बनबैत अछि, जइमे हुनकर विचार, जीवनानुभव आ साहित्यिक प्रतिबद्धता एकसंग द्रष्टव्य होइत अछि। ऐ समस्त कारणसँ पयस्विनी मैथिली साहित्यक अध्ययनमे आ हुनकर रचनाधर्मिताक मूल्यांकनमे स्थायी महत्त्व रखैत अछि। प्रस्तुत अध्ययनक उद्देश्य ऐ महत्त्वकेँ रेखांकित करब छल। ऐ आधारपर कहल जा सकैत अछि जे पयस्विनीक समुचित अध्ययनक बिना जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यिक अवदानक पूर्ण तस्वीर स्पष्ट रूपेँ सामने आनब कठिन अछि।

❑❑❑

❑❑

❑

Notes